E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

12th ANNIVERSARY

वर्ष -12 अंक - 124 | प्रयागराज, बुधवार 26 अगस्त, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

अमेरिका का ईरान की कमाई के 5 रास्तों पर रोक, इनमें सोना, टेक्नोलॉजी और शिपिंग शामिल, कहा- जो देश बिजनेस करेंगे वो भी भुगतेंगे

तेहरान/वॉशिंगटन। अमेरिका ने ईरान की अर्थव्यवस्था के 5 महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर नए प्रतिबंध लगाए हैं। जिनका इस्तेमाल ईरान दूसरे देशों में अपनी आर्थिक गतिविधियों के लिए करता है। इनमें डिजिटल एसेट्स (जैसे क्रिप्टोकरेंसी), टेक्नोलॉजी, सोना, एविएशन और शिपिंग सेक्टर शामिल हैं। अमेरिका इन क्षेत्रों के जरिए ईरान की कमाई और अंतरराष्ट्रीय कारोबार को रोकना चाहता है। यानी अगर कोई देश इन क्षेत्रों में ईरान के साथ ऐसा कारोबार करता है जिससे उसे पैसा या आर्थिक फायदा मिलता है। तो अमेरिका उस देश पर भी प्रतिबंध लगा सकता है या उसे अमेरिकी डॉलर की वित्तीय व्यवस्था से बाहर कर सकता है।अमेरिका ने अभी यह साफ नहीं किया है कि किन देशों पर सेकेंडरी प्रतिबंध लगाए जाएंगे। हालांकि, चीन, तुर्की और संयुक्त अरब अमीरात

(यूएई) ईरान के प्रमुख व्यापारिक साझेदार हैं। स्कॉट बेसेंट-अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरीः- 'राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प दुनिया के नेताओं को फोन कर ईरान की सरकार के साथ संबंध और बातचीत बंद करने की अपील कर रहे हैं।' अमेरिका बोला- अब ईरान के पास सिर्फ दो रास्ते बचे- अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने कहा कि हमने 'ऑपरेशन इकोनॉमिक आउटकास्ट' शुरू किया है। यह ईरान और उसके सहयोगी देशों के खिलाफ एक अभियान है। ईरान के सामने अब सिर्फ दो रास्ते हैं। पहला- पूरी तरह से दुनिया से अलग-थलग पड़ना और गुजारे लायक अर्थव्यवस्था। दूसरा- फिर से सामान्य स्थिति की ओर बढ़ना और वैश्विक अर्थव्यवस्था में फिर से शामिल होने का मौका पाना। स्कॉट बेसेंट-अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरीः- 'हमारा मकसद हर उस आर्थिक लाइफलाइन को खत्म करना है जो इस अत्याचारी शासन को बनाए रखती है, ताकि तेहरान अकेला पड़ जाए।' सेकेंडरी प्रतिबंध से ईरान के साथ कारोबार करना क्यों मुश्किल? अमेरिका के सेकेंडरी प्रतिबंधों का असर सिर्फ ईरान तक सीमित नहीं रहता। अगर कोई विदेशी कंपनी ईरान के साथ ऐसा कारोबार करती है, जिस पर अमेरिका ने रोक लगा रखी है, तो उस कंपनी पर भी अमेरिकी कार्रवाई हो सकती है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

नेतन्याहू बोले- ईरान ने बेटे की हत्या की साज़िश की,हमें मिली सिक्योरिटी ऐशोआराम के लिए नहीं, ट्रम्प के बेटे को भी मिल चुकी धमकी

फिलिस्तीन। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने सोमवार को कहा कि ईरान ने उनके परिवार को निशाना बनाया और उनके दो बेटों में से एक की हत्या की कोशिश की थी। उन्होंने यह बात सरकार समर्थक चैनल 14 को फोन पर दिए इंटरव्यू में कही। नेतन्याहू चुनाव से पहले अपने परिवार और दूसरे राजनीतिक नेताओं की सुरक्षा व्यवस्था पर बात कर रहे थे। नेतन्याहू ने कहा, उन्हें दी जा रही सुरक्षा कोई ऐशोआराम नहीं है। नेतन्याहू के दो बेटे याइर और अवनर हैं। हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि उनके दोनों बेटों में से किसे निशाना बनाया गया था। हत्या की कोशिश कब और कैसे की गई। नेतन्याहू के बड़े बेटे याइर पर विवाद- याइर, बेंजामिन नेतन्याहू के बड़े बेटे हैं। वे सरकार या संसद में कोई पद नहीं संभालते, लेकिन सोशल मीडिया पर अपनी राजनीतिक राय और दक्षिणपंथी विचारों के लिए चर्चा में रहते हैं। विवाद तब

बढ़ा, जब विदेश में रहने के बावजूद याइर को इजराइली सुरक्षा एजेंसी शिन बेट के सुरक्षाकर्मियों की सुरक्षा मिलती रही। आलोचकों ने सवाल उठाया कि एक वयस्क व्यक्ति के विदेश में रहने पर उसकी सुरक्षा का खर्च इजराइली सरकार क्यों उठा रही है। 2018 से 2023 के बीच याइर, उनके छोटे भाई अवनर और मां सारा नेतन्याहू की सुरक्षा पर करीब 102.05 करोड़ रुपए खर्च होने की जानकारी सामने आई थी। शीन बेट करती है नेतन्याहू की सुरक्षा- नेतन्याहू की सुरक्षा में इजराइल की आंतरिक सुरक्षा एजेंसी शीन बेट (आईएसए) की बड़ी भूमिका है। सुरक्षा सिर्फ नेतन्याहू तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके सरकारी और निजी घरों की सुरक्षा भी की जाती है। इजराइल के स्टेट कंट्रोलर की 2024 की रिपोर्ट के मुताबिकः-प्रधानमंत्री के घरों को शीन बेट की सुरक्षा जरूरतों के हिसाब से तैयार किया जाता है। दिसंबर 2022 से नवंबर 2023 के बीच नेतन्याहू के यरुशलम और कैसरिया के निजी घरों की सुरक्षा पर करीब 2.68 करोड़ शेकेल यानी रु85.8 करोड़ खर्च हुए। इसमें सिर्फ यरुशलम वाले घर की बालकनी की खिड़कियों की सुरक्षा पर करीब 1.04 करोड़ शेकेल यानी 33.3 करोड़ रुपए खर्च किए गए। 7 अक्टूबर 2023 के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने नेतन्याहू और उनके परिवार के सामान्य निजी अपार्टमेंट में रहने को लेकर भी चिंता जताई थी।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

अमेरिका में 2 लाख विदेशियों के वीजा रद्द होंगे,इतने बड़े पैमाने में पहली बार एक साथ इतने वीजा कैंसिल होंगे

अधिकारी बोले- घूमने आते हैं, फिर शरण मांगते

वॉशिंगटन। अमेरिकी सरकार 2 लाख विदेशी नागरिकों के बिजनेस (बी1) और टूरिस्ट

वीजा (बी2) रद्द करने की तैयारी कर रही है। सरकार की नजर उन लोगों पर है जो टूरिस्ट या बिजनेस वीजा लेकर अमेरिका पहुंचे, लेकिन बाद में वहीं रहने के लिए शरण मांगने लगे। इनमें 2016 से 2026 के बीच जारी किए गए वीजा शामिल हैं। अमेरिकी विदेश विभाग आने वाले हफ्तों में इसकी घोषणा कर सकता है। अगर ऐसा हुआ तो यह अमेरिकी इतिहास में वीजा रद्द करने की सबसे बड़ी कार्रवाई होगी। अमेरिकी उप विदेश मंत्री क्रिस्टोफर लैंडो ने कहा कि कुछ लोग टूरिस्ट या बिजनेस वीजा लेकर अमेरिका आते हैं और फिर वहां रहने के लिए असायलम का आवेदन करते हैं। क्रिस्टोफर लैंडो-उप विदेश मंत्री, अमेरिकाः- 'असायलम का इस्तेमाल इमिग्रेशन कानून से बचने के रास्ते के तौर पर नहीं होना चाहिए।' क्या वीजा रद्द होने पर तुरंत अमेरिका से निकाल देंगेंः- नहीं। वीजा रद्द होने का मतलब यह नहीं है कि किसी व्यक्ति को तुरंत अमेरिका से बाहर भेज दिया जाएगा। अगर किसी व्यक्ति ने अमेरिका में शरण के लिए आवेदन किया है और उसका मामला अभी चल रहा है, तो वह कुछ समय तक अमेरिका में रह सकता है। हालांकि, उसका टूरिस्ट (बी2) या बिजनेस (बी1) वीजा मान्य नहीं रहेगा। गौरतलब है कि अमेरिकी विदेश विभाग ने वीजा रद्द होने वाले लोगों की संख्या बताने से इनकार कर दिया है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

चीन के राष्ट्रपति 7 साल बाद भारत आ सकते हैं,शी जिनपिंग के साथ 400 अधिकारी होंगे, ब्रिक्स समिट में शामिल होने की उम्मीद

नयी दिल्ली। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग अगले महीने नई दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स समिट में शामिल हो सकते हैं। यह उनका 7 साल बाद भारत का पहला दौरा होगा। भारत 12-13 सितंबर को ब्रिक्स सम्मेलन की मेजबानी करेगा। रॉयटर्स के मुताबिक, जिनपिंग के साथ करीब 400 अधिकारियों का बड़ा प्रतिनिधिमंडल आ सकता है। जिनपिंग आखिरी बार 2019 में भारत आए थे। तब उनके साथ 200 से कम अधिकारी थे। जिनपिंग से बातचीत में सीमा विवाद सबसे अहम मुद्दा-जिनपिंग के भारत दौरे की तैयारियों में एलएसी पर शांति और सीमा विवाद सबसे अहम मुद्दों में है। दोनों देश सीमा पर ऐसी व्यवस्था बनाने पर बात कर रहे हैं, जिससे किसी सैन्य घटना या तनाव का असर द्विपक्षीय रिश्तों पर न पड़े। व्यापार और जरूरी सामान की सप्लाई भी एजेंडे में:-

भारत और चीन के बीच सिर्फ सीमा विवाद ही नहीं, बल्कि व्यापार और आर्थिक रिश्ते भी बातचीत का हिस्सा हैं। भारत चीन के साथ अपने बड़े व्यापार घाटे को कम करना चाहता है। इसके अलावा रेयर अर्थ मैगनेट और इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट जैसे जरूरी सामान की सप्लाई को लेकर भी भारत अपनी निर्भरता कम करने की कोशिश कर रहा है। ब्रिक्स समिट की अध्यक्षता कर रहा है भारत- इस साल ब्रिक्स की कमान भारत के पास है। ब्रिक्स दुनिया की बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाओं का समूह है। इसमें भारत, रूस, चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के साथ मिस्र, ईरान, इथियोपिया, यूएई और इंडोनेशिया भी शामिल हैं।भारत की अध्यक्षता में पूरे साल अलग-अलग शहरों में बैठकें, मंत्रीस्तरीय सम्मेलन और कई स्तर की चर्चाएं हो रही हैं। भारत का फोकस ग्लोबल साउथ की आवाज मजबूत करने, आर्थिक सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, डिजिटल तकनीक, आतंकवाद से निपटने और सप्लाई चेन मजबूत करने पर है। यानी इस ग्रुप को सिर्फ राजनीतिक मंच नहीं, बल्कि व्यापार, निवेश और विकास के बड़े मंच के तौर पर आगे बढ़ाने की कोशिश है।

अमेरिका में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों की संख्या 15फीसदी घटी,सख्त इमिग्रेशन नीतियों के बीच 2025-26 में कमी

वॉशिंगटन। अमेरिका में 2025-26 सेशन में अंडरग्रेजुएट कोर्स में दाखिला लेने वाले भारतीय

छात्रों की संख्या 15फीसदी घट गई है। यह जानकारी 1,100 से ज्यादा संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले गैर-लाभकारी संगठन की रिपोर्ट में सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक, 2026-27 शैक्षणिक वर्ष में अंडरग्रेजुएट दाखिले के लिए कुल आवेदन बढ़े हैं। हालांकि, 1 मार्च तक अंतरराष्ट्रीय आवेदकों की संख्या 10फीसदी घट गई, जो अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। रिपोर्ट में भारत से आने वाले आवेदकों की संख्या में 15फीसदी कमी दर्ज की गई है। अमेरिका में सबसे ज्यादा भारत से स्टूडेंट पढ़ने जाते हैं। अमेरिका में विदेशी छात्रों का 41 अरब डॉलर का योगदान-2024-25 शैक्षणिक वर्ष में भारत से 3.63 लाख से ज्यादा छात्रों ने अलग-अलग कोर्स में दाखिला लिया था। रिपोर्ट के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय छात्रों ने स्थानीय अर्थव्यवस्था में 41.77 अरब डॉलर का योगदान दिया। 2026-27 में यह आंकड़ा 38.37 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। इससे पहले शिक्षकों के एक संगठन नफ़सा की रिपोर्ट में कहा गया था कि सख्त वीजा नियमों और नीतियों को लेकर अनिश्चितता के कारण 2026 में अमेरिकी कॉलेजों और यूनिवर्सिटीज में अंतरराष्ट्रीय छात्रों के रजिस्ट्रेशन 1.1 लाख तक घट सकते हैं। 2025-26 में अंतरराष्ट्रीय छात्रों का रजिस्ट्रेशन अनुमानित 11.69 लाख था। इस साल यह घटकर 10.57 लाख रह गया है। अमेरिका से भारतीय स्टूडेंट्स की संख्या क्यों घट रही- 1. सख्त वीजा नियम और नीतियांः इसकी एक बड़ी वजह सख्त वीजा नियम और इमिग्रेशन नीतियां हैं। इन नियमों को लेकर छात्रों में यह डर बढ़ा है कि आगे पढ़ाई और नौकरी के लिए अमेरिका में रहना कितना आसान होगा। 2. वीजा की नई समयसीमाः अमेरिकी सरकार ने छात्र और विजिटर वीजा के लिए पहले से तय रहने की अवधि की व्यवस्था में बदलाव किया है। अब कई मामलों में अमेरिका में रहने की समयसीमा चार साल तक सीमित हो सकती है। इससे लंबे समय की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए परेशानी बढ़ सकती है। 3. भारी फीस का डरः अमेरिका विदेशी छात्रों पर 1 लाख डॉलर तक की फीस लगाने पर भी विचार कर रहा है, खासकर उन छात्रों के लिए जो पढ़ाई पूरी करने के बाद ओपीटी के जरिए अमेरिका में काम करना चाहते हैं। सोमवार को ट्रम्प सरकार ने एच-1बी वीजा के लिए भी फीस बढ़ाने का प्रस्ताव जारी किया है। यह वीजा अमेरिका में नौकरी करने के लिए जरूरी होता है। भारतीय स्टूडेंट्स के लिए यूरोप नई पसंद-अमेरिका के अलावा भारतीय स्टूडेंट्स के लिए यूरोपीय देश नई पसंद बनकर सामने आ रहे हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह कम खर्च, वीजा और पढ़ाई के बाद काम के विकल्प हैं। इसके अलावा फ्रांस, नीदरलैंड्स, आयरलैंड, इटली और पुर्तगाल भी भारतीय छात्रों के बीच पॉप्युलर हो रहे हैं। रॉयटर्स के मुताबिक, यूरोप में भारतीय छात्रों की संख्या 1.21 लाख से ज्यादा हो चुकी है। वहीं कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन भी नए विकल्पों की तरह उठते नजर आ रहे हैं। जर्मनी- जर्मनी भारतीय छात्रों के लिए अच्छा विकल्प है। यहां ज्यादातर सरकारी यूनिवर्सिटी में ट्यूशन फीस बहुत कम होती है या कई जगह नहीं होती।जर्मनी की डिग्री को दुनिया भर में मान्यता मिलती है और छात्र पढ़ाई के साथ काम भी कर सकते हैं। चैलेंज- यहां सबसे बड़ी चुनौती भाषा की है। रोजमर्रा के काम और कई नौकरियों के लिए जर्मन भाषा आना जरूरी हो सकता है। कनाडा-कनाडा में अच्छी यूनिवर्सिटीज, बेहतर शिक्षा और अलग-अलग देशों के लोगों के साथ पढ़ने का मौका मिलता है। छात्र पढ़ाई के दौरान पार्ट-टाइम काम करके अपने कुछ खर्च निकाल सकते हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद काम करने के भी अच्छे मौके मिलते रहे हैं। चैलेंज- घरों की कमी और बढ़ते किराए से रहना महंगा हो गया है। वीजा नियम भी सख्त हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया- ऑस्ट्रेलिया की कई यूनिवर्सिटीज दुनिया की टॉप रैंकिंग में शामिल हैं। यहां पढ़ाई में प्रैक्टिकल ट्रेनिंग पर भी जोर दिया जाता है। पढ़ाई पूरी करने के बाद छात्रों को कुछ समय तक काम करने का मौका मिल सकता है। चैलेंज- ऑस्ट्रेलिया में पढ़ाई और रहने का खर्च काफी ज्यादा है।

पुतिन सितंबर में आ सकते हैं भारत,बोले- मोदी से मुलाकात जल्द, जयशंकर ने रूस पहुंचकर ब्रिक्स का न्योता दिया

मॉस्को। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन 12-13 सितंबर को नई दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स समिट में शामिल हो सकते हैं। मॉस्को में सोमवार को भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर से मुलाकात के दौरान पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से जल्द मुलाकात की उम्मीद जताई। दोनों नेताओं ने भारत-रूस के रिश्तों और आपसी सहयोग को लेकर भी चर्चा की। जयशंकर रविवार को मॉस्को पहुंचे थे। वह रूस के अपने दो दिन के दौरे पर हैं। जयशंकर ने पुतिन से कहा कि पीएम मोदी ब्रिक्स समिट के लिए पुतिन का भारत में स्वागत करेंगे। दोनों नेताओं की सालाना बैठक भी जल्द होगी। उन्होंने बताया कि पीएम मोदी किर्गिजस्तान में होने वाली एससीओ समिट में उनसे मिलने का इंतजार कर रहे हैं। पुतिन बोले- दोनो देशों के बीच इस साल कारोबार बढ़ा-रूस के

राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि इस साल रूस और भारत के बीच कारोबार बढ़ा है। उन्होंने कहा कि रूस और भारत के बीच दशकों से मजबूत रिश्ते बने हुए हैं। दोनों देश व्यावहारिक तौर पर लगभग सभी क्षेत्रों में अपना सहयोग जारी रखे हुए हैं। उन्होंने कहाः- 'मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इस साल हमारा कारोबार बढ़ा है। पिछले साल इसमें थोड़ी कमी आई थी, लेकिन इस साल यह बढ़ रहा है।' जयशंकर रूसी उपप्रधानमंत्री से भी मिले- विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सोमवार को मॉस्को में रूस के उपप्रधानमंत्री डेनिस मंटुरोव से भी मुलाकात की।दोनों नेताओं ने भारत-रूस के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग को और बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। इस दौरान दोनों देशों के बीच साझेदारी बढ़ाने पर भी बात हुई। भारत और रूस कई क्षेत्रों में आपसी सहयोग बढ़ाने और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं। जयशंकर ने मंटुरोव के साथ बातचीत में कहा कि भारत-रूस साझेदारी ने लगातार बदलती परिस्थितियों के मुताबिक खुद को मजबूत और बेहतर तरीके से ढाला है। उन्होंने कहा कि दुनिया में मुश्किल हालात के बावजूद दोनों देशों के रिश्ते लगातार गहरे हुए हैं।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

अमेरिका एच-1बी वीजा पर रु98 लाख वसूलेगा,ट्रम्प सरकार ने प्रस्ताव जारी किया, भारतीयों पर सबसे ज्यादा असर

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प सरकार ने सोमवार को एच-1बी वीजा के लिए नया प्रस्ताव जारी किया है। इस प्रस्ताव के मुताबिक एच-1बी वीजा पर विदेशी कर्मचारियों को हर वीजा के लिए 1,03,265 डॉलर (करीब 98 लाख रुपए) की एक्सट्रा फीस देनी होगी। एच-1बी एक गैर-अप्रवासी वीजा है, जिसके जरिए अमेरिकी कंपनियां कुछ समय के लिए विदेशों से हाई स्किल वाले पेशेवरों को नौकरी पर रख सकती हैं। इस फीस से एच-1बी वीजा लेना पहले के मुकाबले बहुत महंगा हो जाएगा। पहले एच-1बी वीजा लेने में आमतौर पर करीब 2,000 से 5,000 डॉलर (करीब 1.9 लाख से 4.7 लाख रुपए) तक फीस लगती थी। यह रकम अलग-अलग मामलों में अलग हो सकती थी। रॉयटर्स के मुताबिक, यह नया नियम साल के आखिर तक लागू किया जा सकता है।अगर यह लागू हो जाता है तो इसका सीधा असर भारतीयों पर पड़ेगा, क्योंकि इसका सबसे ज्यादा इस्तेमाल भारतीय आईटी और टेक प्रोफेशनल्स करते हैं। कोर्ट ने जून में फीस को गैरकानूनी बताया था- पिछले साल ट्रम्प ने एक अस्थायी आदेश के जरिए यह फीस लागू की थी। लेकिन जून में अमेरिकी फेडरल कोर्ट ने इसे गैरकानूनी बताते हुए अमेरिकी सरकार को फीस वसूलने से रोक दिया था। अब बोस्टन की एक अपीलीय अदालत इस फैसले की समीक्षा कर रही है। वहीं, वॉशिंगटन डीसी की एक दूसरी अदालत इस मामले में एक बड़े कारोबारी संगठन की याचिका पर फैसला देख रही है। नए प्रस्ताव में अमेरिकी होमलैंड सिक्योरिटी विभाग (डीएचएस) को फीस को स्थायी बनाने के लिए नियम बनाने का निर्देश दिया गया है। यानी सरकार अब इसे हमेशा के लिए कानून बनाने की कोशिश कर रही है। पिछले साल एच-1बी आवेदनों में 25फीसदी से ज्यादा गिरावट-ट्रम्प सरकार के व्यापक इमिग्रेशन अभियान के बीच पिछले साल कंपनियों ने करीब 3.44 लाख एच-1बी वीजा के लिए रजिस्ट्रेशन कराया था। यह 2024 के मुकाबले 25फीसदी से ज्यादा कम था। ट्रम्प सरकार ने एच-1बी आवेदकों की जांच भी सख्त करने का आदेश दिया है। इसके अलावा वीजा चुनने की नई व्यवस्था का प्रस्ताव रखा गया है। इसमें ज्यादा कुशल और ज्यादा वेतन पाने वाले कर्मचारियों को प्राथमिकता देने की बात कही गई है। अगस्त की शुरुआत में डीएचएस ने एक अलग नियम के तहत एच-1बी कर्मचारियों के अमेरिका में रहने की अवधि बढ़ाने या दूसरे देशों में काम कर रहे कर्मचारियों को अमेरिका ट्रांसफर करने वाले आवेदनों पर 4,500 डॉलर तक की अतिरिक्त फीस का प्रस्ताव भी रखा था।

अब ज्यादा काम नहीं कर सकता-नई पीढ़ी को जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए-नितिन गडकरी

नागपूर। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि वे पहले जितना काम नहीं कर पा रहे हैं और अब जिम्मेदारी नई पीढ़ी के हाथों में सौंप दी जानी चाहिए। उन्होंने नागपुर के काटोल में आयोजित 'एकलव्य एकल विद्यालय शिक्षक-पर्यवेक्षक प्रशिक्षण वर्ग' के कार्यक्रम में यह बात कही। गडकरी के इस बयान के बाद महाराष्ट्र और केंद्र की राजनीति में कयासबाजी शुरू हो गई है। बयान ऐसे समय में आया है जब राजनीतिक गलियारों में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के दिल्ली जाने की अटकलें लगाई जा रही हैं। यही वजह है कि गडकरी के इस बयान को भावी राजनीतिक और संगठनात्मक बदलावों से जोड़कर देखा जा रहा है।नितिन गडकरी केंद्रीय मंत्रीः- 'आजकल मैं ज्यादा

काम नहीं कर पाता। जब कर सकता था, तब किया। अब मेरा काम में दखल कम हो गया है। अब नई पीढ़ी को काम सौंपना चाहिए। नए लोग आए हैं और पुराने लोग उन्हें गाइड कर रहे हैं।' कोरोना के बाद सेहत सुधारने पर दिया ध्यान-गडकरी ने अपने पुराने दिनों का एक मजेदार किस्सा भी साझा किया। उन्होंने बताया, 'जवानी के दिनों में मेरी जीवनशैली बहुत ही अनियंत्रित थी। पार्टी का काम करते समय शाम को समोसा खाकर सो जाता था। लेकिन कोविड के बाद मैंने अपनी सेहत पर ध्यान देना शुरू किया है।' युवाओं को सलाह देते हुए उन्होंने कहा, 'अब मैं रोज सुबह उठकर ढाई घंटे एक्सरसाइज और प्राणायाम करता हूं। मेरा ट्रेनर मुझसे वर्कआउट करवाता है। आप सभी को भी रोज कम से कम आधा घंटा व्यायाम और प्राणायाम करना चाहिए।' 4 लोग एक स्कूटर पर बैठकर जाते थे, नंबर प्लेट पर हाथ रखते थे-राजनीतिक सफर की शुरुआती यादों को ताजा करते हुए उन्होंने कहा, 'मेरा जीवन पहले बहुत अनियमित था। हम भावुक होकर साइकिल और स्कूटर से पार्टी के काम के लिए निकल पड़ते थे। उस समय हमारी पहचान के एक व्यक्ति के पास एम्बेसडर कार थी। जब भी पार्टी के बड़े नेता एयरपोर्ट आते थे, तो उनके आने-जाने की व्यवस्था हो सके, इसलिए हमने उस कार मालिक को ही पार्टी अध्यक्ष बना दिया था।' उन्होंने फिर मुस्कुराते हुए कहा, 'मेरे पास एक लूना थी, जो 'कू-कू' की आवाज करती थी। उस पर दो लोग बैठकर जाते थे। बाद में विजय स्कूटर आया, जिस पर हम चार-चार लोग बैठ जाते थे।

सर्टिफिकेट ऑफ प्रैक्टिस आवेदन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बदलाव की घोषणा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज स्थित

बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश ने अधिवक्ताओं के लिए सर्टिफिकेट ऑफ प्रैक्टिस (सीओपी) आवेदन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बदलाव की घोषणा की है। जारी नए निर्देशों के अनुसार, 1 सितंबर 2026 से सीओपी से जुड़े सभी डेक्लेरेशन, वेरीफिकेशन और री-इश्यू फॉर्म केवल ऑनलाइन माध्यम से ही स्वीकार किए जाएंगे। इसके लिए अधिवक्ताओं को बार काउंसिल की आधिकारिक वेबसाइट upbarcouncil.in पर जाना होगा। बार काउंसिल ने स्पष्ट किया है कि 1 सितंबर 2026 की समय सीमा समाप्त होने के बाद किसी भी स्थिति में भौतिक (हार्ड कॉपी) आवेदन या कागजी प्रपत्र स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

आवेदन प्रक्रिया के साथ-साथ निर्धारित शुल्क का भुगतान भी पूरी तरह से ऑनलाइन ही करना अनिवार्य होगा। इस फैसले का मुख्य उद्देश्य सीओपी आवेदन प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी, व्यवस्थित और त्वरित बनाना है। इस नई व्यवस्था के लागू होने से उत्तर प्रदेश के हजारों अधिवक्ताओं को प्रयागराज स्थित बार काउंसिल कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने और लंबी लाइनों में लगने की आवश्यकता नहीं होगी।

आवेदन जमा करने से लेकर सीओपी प्रमाण पत्र जारी होने तक की संपूर्ण प्रक्रिया डिजिटल रहेगी। अधिवक्ता अपना सीओपी सर्टिफिकेट सीधे आधिकारिक वेबसाइट से डाउनलोड कर सकेंगे।

बार काउंसिल ने सभी संबंधित अधिवक्ताओं से अपील की है कि वे निर्धारित समय सीमा का ध्यान रखते हुए सही विवरण दर्ज कर समय पर आवेदन पूरा करें।

सावन के आखिरी सोमवार पर मंदिरों में उमड़ा आस्था का जनसैलाब, पुलिस और समाजसेवियों ने संभाली व्यवस्था

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। सावन माह के अंतिम

सोमवार पर आज तड़के से ही प्रमुख शिव मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। 'हर-हर महादेव' के जयकारों के साथ भक्तों ने भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया। भीड़ को नियंत्रित करने और यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन के साथ-साथ कई सामाजिक संगठनों ने भी बढ़-चढ़कर योगदान दिया। यमुनानगर यूथ टीम की सराहनीय पहलः जिला अपराध निरोधक समिति की 'यमुनानगर यूथ टीम' सेवा कार्य में पूरी तरह मुस्तैद रही। नेतृत्व एवं मार्गदर्शनः क्षेत्रीय कमेटी प्रभारी श्री विमल कुमार श्रीवास्तव जी के कुशल नेतृत्व में टीम के सदस्यों ने मंदिर परिसर और आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धालुओं की सहायता की। सक्रिय योगदानः यूथ टीम प्रभारी मनीष विश्वकर्मा और विमल सक्सेना जी की अगवाई में कार्यकर्ताओं ने स्थानीय प्रशासन के साथ कंधा से कंधा मिलाकर यातायात व सुरक्षा व्यवस्था को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रशासन और समाजसेवी टीमों के आपसी समन्वय के कारण सावन का अंतिम सोमवार शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ।

इलाहाबाद हाईकोर्ट का बड़ा फैसलाः यूपी किरायेदारी कानून-2021 की 5 अहम धाराएं रद्द, 1972 का कानून फिर होगा लागू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश के मकान मालिकों और किरायेदारों से जुड़े मामलों में एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाते

हुए उत्तर प्रदेश नगरीय परिसर किरायेदारी विनियमन अधिनियम-2021 (UP Regulation of URan Premises Tenancy Act, 2021) की पांच प्रमुख धाराओं–धारा 8, 9, 10, 38 और 42–को असंवैधानिक घोषित कर रद्द कर दिया है। हाईकोर्ट ने कहा कि इन धाराओं को लागू करने से पहले संविधान के अनुच्छेद 254(2) के तहत राष्ट्रपति की मंजूरी लेना आवश्यक था, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। यह फैसला न्यायमूर्ति सौमित्र दयाल सिंह और न्यायमूर्ति स्वरूपमा चतुर्वेदी की खंडपीठ ने इंद्र भूषण साहनी बनाम कंचन कुमारी जैन व अन्य समेत 16 याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए सुनाया। क्या थीं विवादित धाराएं? रद्द की गई धाराओं में किराए के निर्धारण, किराया बढ़ाने और किरायेदारी विवादों के निपटारे से जुड़े प्रावधान शामिल थे। - धारा 8 - किराए के भुगतान से संबंधित। धारा 9 - किराए में वार्षिक वृद्धि का प्रावधान। इसके तहत आवासीय भवनों का किराया हर वर्ष 5 प्रतिशत और व्यावसायिक परिसरों का किराया 7 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता था। धारा 10 - किराए के निर्धारण की प्रक्रिया। धारा 38 - किराया प्राधिकरण (Rent Authority) के अधिकार क्षेत्र से संबंधित। धारा 42 - अधिनियम को अन्य राज्य कानूनों पर वरीयता देने से संबंधित। हाईकोर्ट ने क्यों रद्द कीं धाराएं? खंडपीठ ने माना कि धारा 8, 9 और 10 के प्रावधान संपत्ति अंतरण अधिनियम, 1882 (Transfer of Property Act) के प्रावधानों से टकराते हैं। वहीं धारा 38 और 42 प्रांतीय लघु वाद न्यायालय अधिनियम, 1887 तथा उत्तर प्रदेश सिविल विधि संशोधन अधिनियम, 1972 की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। चूंकि ये सभी विषय समवर्ती सूची (Concurrent List) से जुड़े हैं, इसलिए राज्य कानून को केंद्रीय कानूनों से अलग या विपरीत प्रावधान लागू करने के लिए राष्ट्रपति की स्वीकृति आवश्यक थी।कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि राष्ट्रपति की मंजूरी के अभाव में ये धाराएं प्रभावी नहीं रह सकतीं और इसलिए इन्हें अल्ट्रा वायर्स (Ultra Vires) घोषित किया जाता है।1972 का किराया कानून फिर होगा लागू-हाईकोर्ट ने पूरे 2021 अधिनियम को रद्द नहीं किया है, बल्कि केवल उन धाराओं को निरस्त किया है जो केंद्रीय कानूनों से टकराव पैदा करती थीं। अदालत ने कहा कि कानूनी शून्यता (Legal Vacuum) से बचने के लिए उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराया एवं बेदखली विनियमन) अधिनियम, 1972 के प्रावधान आवश्यकता के अनुसार पुनः लागू माने जाएंगे। पुराने मामलों पर क्या असर पड़ेगा? कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि 2021 के कानून के तहत पहले से निपटाए जा चुके मामलों, किराया समझौतों और किराया संशोधन को स्वतः अमान्य नहीं माना जाएगा। जिन मामलों में इन धाराओं की वैधता को चुनौती नहीं दी गई थी, वे सुरक्षित रहेंगे। फैसले का असर-कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार यह निर्णय प्रदेश के लाखों मकान मालिकों और किरायेदारों को प्रभावित कर सकता है। अब किराया निर्धारण, किराया वृद्धि और बेदखली से जुड़े कई मामलों में पुराने कानूनों और स्थापित न्यायिक प्रक्रिया का सहारा लिया जाएगा। साथ ही राज्य सरकार के सामने इन प्रावधानों को राष्ट्रपति की मंजूरी के साथ दोबारा लाने या नया कानूनी ढांचा तैयार करने की चुनौती भी खड़ी हो गई है।

वाराणसी में भोजपुरी फिल्म 'घायल आशिक' का भव्य शुभ मुहूर्त,पारिवारिक मनोरंजन का दिखेगा रंग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। भोजपुरी सिनेमा की नई फिल्म 'घायल आशिक' का

भव्य शुभ मुहूर्त वाराणसी में किया गया। फिल्म के निर्माता अजय कुमार निरहुआ ने बताया कि सावन माह के अंतिम चरण में फिल्म के शुभ मुहूर्त का आयोजन करने की तैयारी थी,जिसके तहत भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। उन्होंने कहा कि 'घायल आशिक' को पारिवारिक दर्शकों को ध्यान में रखकर बनाया जा रहा है। फिल्म में मां और परिवार के भावनात्मक रिश्तों को प्रमुखता दी गई है। निर्माता ने बताया कि फिल्म में अश्लीलता को कोई स्थान नहीं दिया गया है। फिल्म में पारिवारिक भावनाओं के साथ भरपूर मनोरंजन देखने को मिलेगा,ताकि हर वर्ग के दर्शक इसे पसंद कर सकें। फिल्म के निर्देशक अनिल कमल चौहान ने बताया कि 'घायल आशिक' में रानी मिश्रा बतौर अभिनेत्री और ठाकुर हर्षित सिंह बतौर अभिनेता और दूसरा एक्टर प्रत्यूष आर सराफ नजर आएंगे।

उन्होंने कहा कि फिल्म भोजपुरी जगत में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल होगी। यह फिल्म पारिवारिक ड्रामा के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करेगी। निर्देशक के अनुसार फिल्म की कहानी में कॉलेज जीवन से लेकर परिवार तक के विभिन्न पहलुओं और ड्रामा को शामिल किया गया है। भावनात्मक रिश्तों,सामाजिक सरोकारों और मनोरंजन का संतुलित मिश्रण फिल्म को खास बनाने का प्रयास किया गया है। निर्माता-निर्देशक ने उम्मीद जताई कि 'घायल आशिक' भोजपुरी दर्शकों को पसंद आएगी और फिल्म को दर्शकों का भरपूर प्यार मिलेगा।

उन्होंने बताया कि फिल्म को दिसंबर 2026 के अंतिम सप्ताह तक सिनेमाघरों में रिलीज करने की तैयारी है।

प्रथम स्वाधीनता संग्राम के महानायक राना बेनी माधव सिंह की 222वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई

शंकरपुर में उमड़ा करीब 3 हजार का जनसैलाब, 101 किलो की माला और तलवार भेंट कर सांसद किशोरी लाल शर्मा का हुआ सम्मान; 51 किलो की माला से हुआ माल्यार्पण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। प्रथम स्वाधीनता संग्राम के महानायक, वीरता और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक राना बेनी माधव सिंह की 222वीं जयंती सोमवार को शंकरपुर स्थित राना बेनी माधव सिंह स्मारक परिसर में देशभक्ति और गौरवपूर्ण वातावरण के बीच धूमधाम से मनाई गई। जयंती समारोह में

जनप्रतिनिधियों, पूर्व जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, समिति पदाधिकारियों और हजारों की संख्या में क्षेत्रीय लोगों ने पहुंचकर महानायक को श्रद्धांजलि अर्पित की। तेज बारिश भी नहीं डिगा सकी देशभक्ति का जज्बा-समारोह की सबसे खास बात यह रही कि कार्यक्रम के दौरान तेज बारिश होने के बावजूद करीब 3 हजार लोगों की विशाल जनसभा टस से मस नहीं हुई। बारिश के बीच भी लोग अपने स्थान पर डटे रहे और वीर शिरोमणि राना बेनी माधव सिंह के प्रति अपनी श्रद्धा एवं राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया। पूरा परिसर भारत माता की जय और वीर सेनानी के जयघोष से गूंजता रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ राना पार्क स्थित विशाल अश्वारोही प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि से हुआ। इसके बाद मां सरस्वती तथा मंच पर स्थापित राना बेनी माधव सिंह की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित कर दीप प्रज्ज्वलित किया गया। अतिथियों एवं समिति पदाधिकारियों ने मां दुर्गा मंदिर में पूजा-अर्चना कर राष्ट्र एवं समाज के कल्याण की कामना की। 101 किलो की माला पहनाकर सांसद किशोरी लाल शर्मा का सम्मानः- समारोह में अमेठी लोकसभा क्षेत्र के सांसद किशोरी लाल शर्मा का राना बेनी माधव सिंह स्मारक समिति के अध्यक्ष हरिचन्द्र बहादुर सिंह ने विशेष सम्मान किया। उन्हें 101 किलो की विशाल माला पहनाई गई तथा तलवार भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया। 51 किलो की माला से महानायक की प्रतिमा पर माल्यार्पणः-जयंती समारोह का प्रमुख आकर्षण राना बेनी माधव सिंह की अश्वारोही प्रतिमा पर 51 किलो की विशाल पुष्पमाला से किया गया माल्यार्पण रहा। सांसद किशोरी लाल शर्मा सहित अतिथियों एवं समिति पदाधिकारियों ने प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर महानायक को नमन किया। विशाल माला के साथ सजी प्रतिमा ने पूरे परिसर को ऐतिहासिक और भावनात्मक स्वरूप प्रदान कर दिया। आल्हा गायिका नेहा सिंह ने वीर रस से भरा वातावरणः- समारोह में प्रसिद्ध आल्हा गायिका नेहा सिंह की वीर रस से ओतप्रोत प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में नई ऊर्जा भर दी। राना बेनी माधव सिंह के शौर्य, पराक्रम और प्रथम स्वाधीनता संग्राम से जुड़े प्रसंगों की प्रस्तुति सुनकर श्रोता रोमांचित हो उठे। बारिश के बावजूद लोगों ने पूरी तन्मयता से कार्यक्रम का आनंद लिया और तालियों से कलाकार का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के प्रस्तुति संयोजक अरुणेंद्र सिंह रहे। राना साहब के त्याग, शौर्य और देशप्रेम को किया नमनः- राना बेनी माधव सिंह स्मारक समिति के अध्यक्ष हरिचन्द्र बहादुर सिंह ने अतिथियों का माल्यार्पण, अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर स्वागत किया। स्वागत संबोधन में उन्होंने राना बेनी माधव सिंह के त्याग, शौर्य, संघर्ष और राष्ट्र के प्रति समर्पण को याद करते हुए कहा कि उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। कार्यक्रम अध्यक्ष आईएएस कृष्ण शरण सिंह ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि राना बेनी माधव सिंह का जीवन मातृभूमि के प्रति अटूट समर्पण और स्वाभिमान की मिसाल है। उनके आदर्शों और संघर्ष की गाथा को नई पीढ़ी तक पहुंचाना समाज की जिम्मेदारी है। मुख्य अतिथि सांसद किशोरी लाल शर्मा तथा विशिष्ट अतिथियों ने भी राना बेनी माधव सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि राना साहब ने देश और स्वाभिमान के लिए जिस साहस और दृढ़ता के साथ संघर्ष किया, वह आज भी प्रत्येक भारतीय को राष्ट्रहित में कार्य करने की प्रेरणा देता है। गणमान्य लोगों की रही मौजूदगीः- समारोह में सांसद किशोरी लाल शर्मा, आईएएस कृष्ण शरण सिंह, उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री सुरेन्द्र विक्रम सिंह, सेंट्रल बार एसोसिएशन रायबरेली के अध्यक्ष सुरेश चन्द्र यादव, नगर पालिका परिषद रायबरेली के अध्यक्ष शत्रोहन सोनकर, जिला कांग्रेस कमेटी रायबरेली के अध्यक्ष पंकज तिवारी, पूर्व विधायक सरेनी अशोक सिंह, पूर्व प्रत्याशी विधानसभा सरेनी सुधा द्विवेदी, पूर्व प्रत्याशी ऊंचाहार विधानसभा अतुल सिंह, पूर्व प्रत्याशी सदर विधानसभा डॉ. मनीष सिंह, पूर्व विधायक बछरावां सुशील कुमार पासी, एचएल दुसाध, विजय पाल सिंह, पूर्व ब्लाक प्रमुख सतांव उमेश सिंह, अरखा के जितेन्द्र सिंह, राजेश श्रीवास्तव, विजय शंकर अग्निहोत्री, ब्रिजबिहारी अवस्थी, विनोद सिंह, आशीष सिंह, रोहित सिंह, निर्मल शुक्ला, संजय सिंह कछवाह, अधिवक्ता अजय पाल सिंह, आशापाल सिंह, बुधेन्द्र सिंह, जयशंकर सिंह, राम अकबाल बहादुर सिंह, राजेश यादव, दिनेश सिंह, शिवमोहन सिंह, शिवकमल सिंह, नागेंद्र सिंह, गौरव अवस्थी, बीपी सिंह और महराजगंज ब्लाक प्रमुख प्रदीप चौधरी समेत बड़ी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद रहे। समारोह को सफल बनाने में समिति अध्यक्ष हरिचन्द्र बहादुर सिंह, राम अकबाल सिंह, राजकुमार सिंह, धीरज सिंह, अरुणेंद्र सिंह, आशापाल सिंह, शिवकमल सिंह, अनुज सिंह, बुधेन्द्र बहादुर सिंह, समर बहादुर सिंह, अमित द्विवेदी तथा प्रधानाचार्य सत्येंद्र कुमार समेत समिति के पदाधिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समारोह के अंत में प्रधानाचार्य सत्येंद्र कुमार ने सभी अतिथियों, समिति पदाधिकारियों और उपस्थित जनसमूह के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके बाद अतिथियों एवं समिति पदाधिकारियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। राना बेनी माधव सिंह की जयंती पर शंकरपुर में उमड़ा यह जनसैलाब इस बात का प्रमाण रहा कि वीरों की गाथाएं समय के साथ धुंधली नहीं होतीं। मातृभूमि के लिए उनका त्याग आज भी लोगों के हृदय में देशभक्ति की लौ प्रज्ज्वलित करता है।

(ईद-मिला-दुन्नवी) बारावफात का त्योहार शांतिपूर्वक मनाने हेतू-कार्यालय जिलाधिकारी/नियंत्रक, नागरिक सुरक्षा, प्रयागराज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। अपर जिलाधिकारी (नगर) प्रयागराज महोदय के आदेश संख्या 2410/एसटी/नगर-2026 दिनांक 24 अगस्त 2026 (छायाप्रति सलग्न) के द्वारा अवगत कराया गया है कि इस वर्ष चन्द्रदर्शन के अनुसार इस्लामिक हिजरी सम्वत के रवि-उल-अव्वल महीने की बारहवीं तिथि अर्थात दिनांक 26.08.2026 को (ईद-मिला-दुन्नवी) बारावफात का त्योहार सुन्नी मुस्लिम सम्प्रदाय के व्यक्तियों द्वारा पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब के जन्म एवं निर्वाण दिवस के रूप में मनाते है। इस अवसर पर दिनांक 25.08.2026 को नगर क्षेत्र प्रयागराज में मस्जिदों / कब्रिस्तानों आदि पर सजावट की जाती है तथा रात्रि में जुलूस निकाला जाता है। दायराशाह अजमल थाना क्षेत्र शाहगंज में ईद मिलादुन्नबी का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है एवं थाना धूमनगंज क्षेत्रान्तर्गत हरवारा कब्रिस्तान पर फातिहा स्थानीय मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों द्वारा पढ़ा जाता है। थाना कोतवाली, खुल्दाबाद, शाहगंज, करैली, मुट्ठीगंज तथा अतरसुइया क्षेत्र इस दृष्टिकोण से संवेदनशील है। (ईद-मिला-दुन्नबी) बारावफात पर अपने प्रखण्ड क्षेत्रों के संवेदनशील स्थानों पर नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवको द्वारा उपस्थित रहकर शांति सौहार्द बनाये रखने में विगत वर्षों की भाँति जिला एवं पुलिस प्रशासन को सहयोग प्रदान करने की अपेक्षा की गयी है जैसा कि क्षेत्रवार पुलिस थानों में बैठक में निर्देशित एवं आदेशित किया गया है। अतः अपने-अपने प्रखण्ड के महत्वपूर्ण स्थलों पर वार्डेन / स्वयंसेवकों के साथ उपस्थित रहकर शांतिपूर्वक बारावफात को सम्पन्न कराना सुनिश्चित करे, किसी भी संवेदनशील घटना की सूचना से अपने वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं स्थल पर तैनात मजिस्ट्रेट व पुलिस अधिकारियों को तत्काल सूचित करेंगे।

माफिया अतीक के कब्जे वाली जमीन पर पीडीए बनाएगा फ्लैट,रेरा से मंजूरी मिली, 14 मंजिला इमारत बनेगी

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद के गढ़ रहे चकिया और कसारी-मसारी क्षेत्र में अब एक नई आवासीय परियोजना शुरू होने जा रही है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण की प्रस्तावित पद्म आवास योजना को रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी (रेरा) से मंजूरी मिल गई है। इस मंजूरी के बाद परियोजना के निर्माण का रास्ता साफ हो गया है। यह परियोजना लगभग 9,811.35 वर्ग मीटर भूमि पर प्रस्तावित है। इसमें 14 मंजिला आवासीय इमारत बनाई जाएगी, जिसकी ऊंचाई लगभग 44.85 मीटर होगी। योजना के तहत कुल 602 दो-बीएचके फ्लैटों का निर्माण किया जाएगा। इस परियोजना पर अनुमानित 150 करोड़ रुपए का खर्च आएगा, और प्रत्येक फ्लैट की अनुमानित कीमत 28 लाख रुपए होगी।

गुमशुदा की तलाश-कृपया मदद करें

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नामः अजय शंकर पाठक, उम्रः

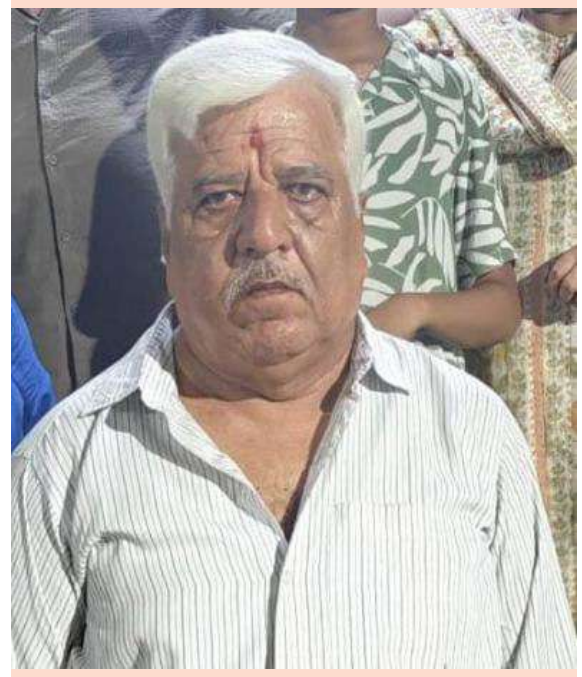

64 वर्ष,निवासीः 12 बाटे वन, चक भतही रिफ्यूजी कॉलोनी, नैनी, प्रयागराज,पहचानः-कद लगभग 5 फीट 6 इंच, बाल सफेद,मूंछ सफेद, माथे पर लाल तिलक, लापता होने की तारीखः 22 अगस्त 2026, समयः- लगभग शाम 4 बजे, अंतिम बारः सफेद रंग की बनियान/वस्त्र में बताए गए हैं। वह घर से बिना बताए निकले थे, जिसके बाद से उनका कोई पता नहीं चल सका है। आप सभी से हाथ जोड़कर अपील है–अगर अजय शंकर पाठक कहीं नजर आएं या उनके बारे में कोई जानकारी मिले तो तुरंत इन नंबरों पर सूचना दें।

मरीज की जान बचाने दौड़ रहे डॉक्टर खुद हादसे का शिकार, सुल्तानपुर में चिकित्सा जगत में शोक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सुल्तानपुर। मरीज की जान बचाने के लिए देर रात सड़क पर दौड़ रहे तीन डॉक्टर खुद एक दर्दनाक सड़क हादसे का शिकार हो गए। अयोध्या-प्रयागराज हाईवे पर सोमवार की रात करीब 11 से 11:30 बजे के बीच दरियापुर के पास रेलवे ओवरब्रिज की रेलिंग से कार टकराने से कार चला रहे डॉ. अख्तर की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि प्रसिद्ध सर्जन डॉ. शैलेंद्र जायसवाल और डॉ. राशिद गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों का इलाज स्थानीय मेडिकल कॉलेज में चल रहा है। बताया जा रहा है कि तीनों डॉक्टर अमहट स्थित एक निजी नर्सिंग होम में एक मरीज का ऑपरेशन करने के बाद दरियापुर स्थित ममता हॉस्पिटल की ओर रवाना हुए थे। वहां एक अन्य गंभीर मरीज के ऑपरेशन के लिए उन्हें पहुंचना था। मरीज की जिंदगी बचाने की जल्दी में निकले डॉक्टरों को शायद यह अंदाजा भी नहीं था कि रास्ते में उनकी जिंदगी ही एक भयावह हादसे से टकराने वाली है। प्रत्यक्ष जानकारी के मुताबिक प्रयागराज-अयोध्या मार्ग पर दरियापुर रेलवे ओवरब्रिज के पास कार को ओवरटेक करने के दौरान कार अनियंत्रित हो गई और रेलवे ओवरब्रिज की रेलिंग से जा टकराई। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार चला रहे गभड़िया निवासी डॉ. अख्तर की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। हादसे में कार सवार डॉ. शैलेंद्र जायसवाल और डॉ. राशिद गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज पहुंचाया, जहां उनका इलाज जारी है। जिस जिंदगी को बचाने निकले थे, उसी सफर में थम गई एक जिंदगीः- यह हादसा सिर्फ एक सड़क दुर्घटना नहीं, बल्कि चिकित्सा जगत के लिए बेहद मार्मिक घटना बन गया है। जिस मरीज की जिंदगी बचाने के लिए तीन डॉक्टर देर रात अपने अस्पताल से दूसरे अस्पताल की ओर दौड़ रहे थे, उसी सफर में एक डॉक्टर की जिंदगी हमेशा के लिए थम गई और दो डॉक्टर अस्पताल के बिस्तर पर पहुंच गए। हादसे की खबर जैसे ही चिकित्सा जगत में पहुंची, शोक की लहर दौड़ गई। साथी चिकित्सकों और परिचितों में गहरा दुख है। हर किसी की जुबां पर यही सवाल है कि दूसरों की जिंदगी बचाने के लिए दिन-रात समर्पित रहने वाले डॉक्टरों के साथ आखिर यह दर्दनाक हादसा कैसे हो गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है। हादसे के कारणों की जांच की जा रही है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन चुनाव 17 सितंबर को,पहली बार महिलाओं को आरक्षण

प्रयागराज। इलाहाबाद हाई कोर्ट बार एसोसिएशन के सत्र 2026-2027 के वार्षिक चुनाव का विस्तृत कार्यक्रम जारी कर दिया गया है। चुनाव को लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। मतदान 17 सितंबर को सुबह 10 बजे से शाम पांच बजे तक क्रिकेट ग्राउंड में कराया जाएगा। चुनाव प्रक्रिया मुख्य चुनाव अधिकारी वरिष्ठ अधिवक्ता एस.एफ.ए. नकवी और चुनाव अधिकारियों वशिष्ठ तिवारी, जे.बी. सिंह, राज कुमार शुक्ला, लक्ष्मी कांत मिश्रा और अनुभव शुक्ला की निगरानी में संपन्न होगी। चुनाव के लिए 25 अगस्त को अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित कर दी गई है। सूची के मुताबिक कुल मतदाताओं में 10,609 पुरुष अधिवक्ता, 742 महिला अधिवक्ता और 134 सीनियर अधिवक्ता शामिल हैं। इस बार चुनाव की खास बात यह है कि बार एसोसिएशन के चुनावी इतिहास में पहली बार महिला अधिवक्ताओं के लिए अलग सीटें आरक्षित की गई हैं। उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, संयुक्त सचिव और गवर्निंग काउंसिल के पदों में महिला प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है।26 अगस्त से नामांकन प्रक्रिया जारी कार्यक्रम के अनुसार 26 से 28 अगस्त तक सुबह 10 बजे से शाम चार बजे तक नामांकन पत्रों की बिक्री और जमानत राशि जमा की जाएगी।

विधानसभा अध्यक्ष द्वारा राष्ट्रगान को बीच में छोड़कर जाने से कांग्रेस आंदोलित,प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जनपद उन्नाव में एक कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रगान को बीच में ही छोड़कर चले जाने से कांग्रेस के जिला अध्यक्ष पंकज तिवारी व नगर अध्यक्ष धीरज श्रीवास्तव के नेतृत्व में शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर डिग्री कॉलेज चौराहे स्थित शहीद स्थल पर नगर मैजिस्ट्रेट राम अवतार को ज्ञापन सौंपा।

कांग्रेस द्वारा राष्ट्रगान के अपमान पर विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना को देश से माफी मांगनी चाहिए। इस अवसर पर स्थान ब्लाक महिला अध्यक्ष मंजू पासवान,सुमित्रा रावत,प्रीता नैथन, हेमलता पासवान,विजय शंकर अगिनहोत्री, निर्मल शुक्ला,पदमधर सिंह,प्रमोद पाण्डेय,अभय त्रिवेदी , मनोज मिश्रा,आर.के.सिंह , मनोज तिवारी, मुन्ना घोसी,हाजी उस्मान,यज्ञदेव शर्मा, राजकुमार दीक्षित,महताब आलम सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

डाक विभाग की व्यवसाय समीक्षा बैठक संपन्नः डाकघर की बचत योजनाओं और बीमा सेवाओं को जन-जन तक पहुँचाने और बेहतर डाक वितरण पर जोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) ?घाटमपुर। स्थानीय तहसील सभागार में डाक विभाग की एक महत्वपूर्ण व्यवसाय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता निरीक्षक डाकघर, पुखरायां उपमंडल श्री निखिल शर्मा ने की। इस समीक्षा बैठक में घाटमपुर, पतारा, बी बी गांव और मूसानगर क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले लगभग 60 शाखा डाकघरों के 100 से अधिक ग्रामीण डाक सेवकों (जीडीएस) ने भाग लिया। ?बैठक के दौरान चालू वित्त वर्ष में अब तक अर्जित किए गए कुल व्यवसाय की विस्तृत समीक्षा की गई। इसके साथ ही आगामी दिनों में डाक सेवाओं के विस्तार हेतु विशेष ड्राइव की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें मुख्य रूप से ?बीमा योजनाएं जैसे डाक जीवन बीमा (पीएलआई) एवं ग्रामीण डाक जीवन बीमा (आरपीएलआई), ?बचत योजनाएं जैसे डाकघर बचत खाता, सुकन्या समृद्धि योजना, आवर्ती जमा (आरडी) और सावधि जमा (टीडी) खातों के अधिक से अधिक विस्तार करने हेतु निर्देशित किया गया।

निरीक्षक डाकघर ने सभी शाखा डाकपालों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र के ग्रामीणों को डाक विभाग की सुरक्षित व आकर्षक बचत योजनाओं तथा लाभकारी बीमा पॉलिसियों से जोड़ें। साथ ही, आमजन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सभी शाखा डाकघरों को नियमित एवं समयबद्ध डाक वितरण कार्य सुनिश्चित करने के कड़े निर्देश दिए गए। इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (आईपीपीबी) के माध्यम से वित्तीय समावेशन को गति देने के लिए भी बैठक में चर्चा की गई।

बैठक के बाद निरीक्षक डाक पुखरायां ने तहसीलदार घाटमपुर से मिलकर धन्यवाद ज्ञापित किया एवं आगामी संपूर्ण समाधान दिवसों में डाक विभाग की योजनाओं के विस्तार के लिए स्थान देने हेतु अनुरोध भी किया।

भाऊराव देवरस विद्या मंदिर की दो निशानेबाज लड़कियों ने ऑल इंडिया इंटर स्कूल नेशनल चैंपियनशिप के लिए चुनी गई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर प्रदेश राइफल एसोसिएशन द्वारा आयोजित 26वीं यूपी स्टेट इंटर स्कूल शूटिंग प्रतियोगिता में भाऊराव देवरस विद्या मंदिर की निशानेबाज भूमि श्री एवं अनुष्का कुमारी ने 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन करते हुए क्रमशः 320/400 और 315/400 अंक अर्जित किए तथा ऑल इंडिया इंटर स्कूल नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई किया। इस शानदार उपलब्धि के साथ दोनों निशानेबाज अब भोपाल में आयोजित होने वाली ऑल इंडिया इंटर स्कूल नेशनल चैंपियनशिप में भाऊराव देवरस विद्या मंदिर का प्रतिनिधित्व करेंगी। प्रतियोगिता 30 अगस्त 2026 से 3 सितंबर 2026 तक आयोजित की जाएगी। अंतरराष्ट्रीय निशानेबाज एवं मेंटर निशांत चौधरी ने दोनों खिलाड़ियों की सफलता का श्रेय उनकी कड़ी मेहनत, निरंतर अभ्यास, अनुशासन एवं समर्पण को दिया। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि खिलाड़ियों के निरंतर प्रयास और लक्ष्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का परिणाम है। विद्यालय के प्रधानाचार्य सोम गिरी जी एवं विद्या मंदिर प्रबंधन ने दोनों प्रतिभावान निशानेबाजों को उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए उनके उज्ज्वल प्रदर्शन की कामना की। विद्यालय परिवार को विश्वास है कि भूमि श्री और अनुष्का कुमारी राष्ट्रीय स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय एवं अपने प्रदेश का नाम गौरवान्वित करेंगी।

फोर्टिस ग्रेटर नोएडा में 84 वर्षीय मरीज का मित्रा क्लिप प्रक्रिया से सफल उपचार

क्षेत्र में पहली बार गंभीर हार्ट फेलियर के मरीज का मिनिमली इनवेसिव तकनीक से इलाज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। फोर्टिस अस्पताल ग्रेटर नोएडा ने क्षेत्र में अपनी तरह के पहले मामले में गंभीर हार्ट फेलियर से जूझ रहे 84 वर्षीय मरीज के लीकिंग मित्रल वाल्व का मित्रा क्लिप (MitraClip) प्रक्रिया से सफल उपचार किया है। अधिक उम्र, कमजोर हृदय और एक ही गुर्दे के काम करने सहित कई जटिल स्वास्थ्य समस्याओं के कारण मरीज के लिए पारंपरिक ओपन-हार्ट सर्जरी बेहद जोखिमपूर्ण थी। ऐसे में डॉक्टरों ने मिनिमली इनवेसिव तकनीक के जरिए मरीज का सफल उपचार किया। मरीज को अस्पताल पहुंचने पर सांस फूलने, अत्यधिक कमजोरी और बार-बार हार्ट फेलियर की समस्या थी। जांच में पाया गया कि उनका मित्रल वाल्व ठीक से बंद नहीं हो रहा था, जिसके कारण रक्त पीछे की ओर रिस रहा था और पहले से कमजोर हृदय पर अतिरिक्त दबाव पड़ रहा था। मरीज का हृदय केवल 30-35 प्रतिशत क्षमता से काम कर रहा था। मरीज की जटिल स्थिति को देखते हुए मामला काफी चुनौतीपूर्ण था। फरवरी 2026 में उनकी हृदय धमनियों में दो स्टेंट डाले जा चुके थे। इसके अलावा उनका केवल एक गुर्दा काम कर रहा था, प्रोस्टेट बढ़ा हुआ था और उन्हें गंभीर यूरिनरी संक्रमण भी था। इन परिस्थितियों में ओपन-हार्ट सर्जरी का जोखिम काफी अधिक था। डॉ. हरनीश सिंह भाटिया, सीनियर कंसल्टेंट-कार्डियोलॉजी, फोर्टिस ग्रेटर नोएडा के नेतृत्व में कार्डियोलॉजी टीम ने मित्रा क्लिप प्रक्रिया करने का निर्णय लिया। इस मिनिमली इनवेसिव प्रक्रिया में मरीज के सीने में बड़ा चीरा लगाने की आवश्यकता नहीं होती। डॉक्टरों ने पैर की रक्त वाहिका के रास्ते एक छोटी क्लिप को हृदय तक पहुंचाया और 3डी इमेजिंग तकनीक की सहायता से MitraClip XTW G4 को लीक कर रहे मित्रल वाल्व पर लगाया। प्रक्रिया सफलतापूर्वक और बिना किसी बड़ी जटिलता के पूरी हुई तथा वाल्व से होने वाला रक्त रिसाव काफी कम हो गया। उपचार के बाद मरीज के लक्षणों में सुधार देखा गया और उन्हें स्थिर अवस्था में अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। कार्डियोलॉजी टीम द्वारा उनका नियमित फॉलो-अप किया जा रहा है। डॉ. हरनीश सिंह भाटिया ने कहा कि मरीज की उम्र, गंभीर हार्ट फेलियर, हाल में हृदय धमनियों में किए गए उपचार और एक ही गुर्दे के काम करने के कारण यह बेहद चुनौतीपूर्ण मामला था। ऐसे हाई-रिस्क मरीज में ओपन-हार्ट सर्जरी करना कठिन हो सकता है। मित्रा क्लिप ने बिना सीने में बड़ी सर्जरी किए लीकिंग वाल्व का उपचार करने का सुरक्षित और अपेक्षाकृत कम इनवेसिव विकल्प उपलब्ध कराया। फोर्टिस ग्रेटर नोएडा की फेसिलिटी डायरेक्टर बिंदु शर्मा ने कहा कि जटिल हृदय रोगों के उपचार में आधुनिक तकनीक, क्लीनिकल अनुभव और विशेषज्ञ टीम के बीच बेहतर तालमेल जरूरी है। अस्पताल मरीजों को उनके घर के नजदीक उन्नत कार्डियाक उपचार उपलब्ध कराने के लिए अपनी सेवाओं को लगातार मजबूत कर रहा है। इस मामले में मरीज की विभिन्न स्वास्थ्य चुनौतियों का आकलन कर उनके लिए अपेक्षाकृत कम इनवेसिव उपचार का विकल्प चुना गया, जिसके बाद उनकी स्थिति में सुधार हुआ।

प्रयागराज कॉउचर गालाः अवनी सिंह राजपूत के नेतृत्व में मिस एंड मिस्टर यूनिवर्स उत्तर प्रदेश 2026 का ऑडिशन संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। बीते गुरूवार को प्रयागराज में 'प्रयागराज कॉउचर गाला' - मिस एंड मिस्टर यूनिवर्स उत्तर प्रदेश 2026 के ऑडिशन का भव्य एवं सफल आयोजन सेलेस्टियन इन में किया गया। ऑडिशन में प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह, आत्मविश्वास और जोश के साथ अपनी प्रतिभा एवं व्यक्तित्व का प्रदर्शन किया। इस प्रतिष्ठित आयोजन के सफल संचालन में आयोजक अवनी सिंह राजपूत की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके नेतृत्व में आयोजित इस ऑडिशन ने प्रयागराज में फैशन, मॉडलिंग और नई प्रतिभाओं को एक प्रभावी मंच प्रदान किया। कार्यक्रम के मैनेजमेंट की जिम्मेदारी अभिनव श्रीवास्तव ने संभाली, जबकि ग्लोबल प्रोडक्शन की ओर से अमन शर्मा का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम की Event Planner अंजली गुप्ता, Avi Event Empire रहीं, जिन्होंने आयोजन की व्यवस्थाओं और कार्यक्रम की योजना को प्रोफेशनल तरीके से संभाला। कृतिका ने Team Head के रूप में जिम्मेदारी निभाई, वहीं William Singh ने भी आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। ऑडिशन के दौरान प्रतिभागियों का मूल्यांकन कई चरणों में किया गया। इनमें Introduction, Talent Presentation, Question & Answer Round और Ramp Walk प्रमुख रहे। निर्णायक मंडल ने प्रतिभागियों के आत्मविश्वास, व्यक्तित्व, संवाद क्षमता, प्रतिभा, मंचीय प्रस्तुति और रैंप वॉक को चयन के प्रमुख आधार के रूप में देखा। कार्यक्रम में Shivangi ने Jury के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं Sumit Cool Dubey, Aman Dubey, Vishnu Dayal Shrivastava Deewj Rishabh Chaurasiya विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाया। विशेष रूप से Question & Answer Round और Ramp Walk के दौरान प्रतिभागियों का आत्मविश्वास और मंचीय प्रदर्शन आकर्षण का केंद्र रहा। प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा, व्यक्तित्व और प्रस्तुति कौशल से निर्णायक मंडल को प्रभावित करने का प्रयास किया। आयोजकों के अनुसार, Mr. & Miss Universe Uttar Pradesh 2026 के ऑडिशन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से ऐसी प्रतिभाओं की पहचान करना है, जो आगे चलकर राज्य और देश का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखती हों।

चयनित प्रतिभागियों को प्रतियोगिता के आगामी चरणों में अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा।

अवनी सिंह राजपूत के नेतृत्व में आयोजित यह ऑडिशन प्रयागराज में फैशन और मॉडलिंग के क्षेत्र में नई प्रतिभाओं को अवसर देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

कार्यक्रम ने शहर में फैशन एवं मॉडलिंग के प्रति उत्साह बढ़ाने के साथ-साथ युवाओं के लिए नए अवसरों का सकारात्मक माहौल तैयार किया।

जिलाधिकारी की प्रेरणा से प्राथमिक विद्यालय खरहरा में आयोजित हुआ 'तिथि भोजन' कार्यक्रम,बच्चों के साथ जन्मदिन की खुशियां साझा कर दिया सामुदायिक सहभागिता एवं सामाजिक सरोकार का संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में जनपद के परिषदीय विद्यालयों में सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने तथा बच्चों के साथ विशेष अवसरों की खुशियां साझा करने के उद्देश्य से 'तिथि भोजन' कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में विकास खण्ड शिवगढ़ के प्राथमिक विद्यालय खरहरा में मंगलवार को 'तिथि भोजन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय के इंचार्ज प्रधानाध्यापक आशीष कुमार द्वारा अपने पुत्र के जन्मदिवस के अवसर पर किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं को स्वादिष्ट, पौष्टिक एवं स्वच्छ भोजन कराया गया। बच्चों को पूरी, सब्जी, खीर एवं फल परोसे गए।

स्वादिष्ट भोजन पाकर बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे और उन्होंने उत्साहपूर्वक जन्मदिन की खुशियों में सहभागिता की। जिलाधिकारी की इस पहल का उद्देश्य विद्यालयों में सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने के साथ ही बच्चों को अपनत्व, समानता एवं सामाजिक सरोकार की भावना से जोड़ना है। 'तिथि भोजन' के माध्यम से अभिभावक, शिक्षक एवं समाज के अन्य लोग बच्चों के विशेष अवसरों को उनके साथ साझा कर विद्यालय से अपने जुड़ाव को और मजबूत कर रहे हैं। कार्यक्रम में विद्यालय परिवार, अभिभावकों एवं स्थानीय लोगों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा जिलाधिकारी की इस सराहनीय पहल की प्रशंसा की। उपस्थित लोगों ने प्रधानाध्यापक आशीष कुमार के पुत्र को जन्मदिवस की शुभकामनाएं देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। जिलाधिकारी की प्रेरणा से संचालित यह पहल विद्यालयों में सामुदायिक सहभागिता को मजबूत करने और बच्चों के बीच खुशी एवं अपनत्व का वातावरण सृजित करने की दिशा में प्रभावी कदम साबित हो रही है।

मासिक प्रदर्शन मूल्यांकन में रायबरेली ने प्रदेश में हासिल किया द्वितीय स्थान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बच्चों के समग्र विकास एवं आंगनवाड़ी केंद्रों को और अधिक सशक्त बनाने के उद्देश्य से रॉकेट लर्निंग एवं बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार (आईसीडीएस) विभाग के संयुक्त प्रयासों से जनपद में निरंतर प्रभावी कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में प्रत्येक माह आयोजित होने वाले मासिक प्रदर्शन मूल्यांकन में जुलाई माह में रायबरेली जनपद ने पूरे प्रदेश में द्वितीय स्थान प्राप्त कर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। जिला कार्यक्रम अधिकारी सुरेन्द्र कुमार ने बताया कि यह उपलब्धि जनपद के आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, बाल विकास परियोजना अधिकारियों, मुख्य सेविकाओं/सुपरवाइजर्स सहित पूरी टीम के निरंतर प्रयास, समर्पण और बेहतर टीमवर्क का परिणाम है और आगे भी सभी के सामूहिक प्रयासों से रायबरेली जनपद प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं बच्चों के समग्र विकास के क्षेत्र में भविष्य में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए नई उपलब्धियां हासिल करेगा।

रायबरेली की इस उपलब्धि पर रॉकेट लर्निंग के डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर मयंक कुमार एवं दीपक कुमार ने आईसीडीएस विभाग एवं पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि बच्चों के बेहतर भविष्य एवं गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं विभागीय टीम द्वारा किया जा रहा समर्पित प्रयास सराहनीय एवं प्रेरणादायक है।

चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया के बिशप समेत 5 पर एफआईआर, प्रयागराज में सेंट एंड्रयूज डिग्री कॉलेज में फर्जी नियुक्ति के प्रयास के चलते

प्रयागराज। सेंट एंड्रयूज डिग्री कॉलेज गोरखपुर के कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. एस. डोमिनिक राजकुमार की शिकायत पर चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया (सीएनआई) के पदाधिकारियों समेत पांच लोगों के खिलाफ कैंट थाने में एफआईआर दर्ज हुई है। इनमें सीएनआई की लखनऊ डायसिस के बिशप मॉरिस एडगर दान का नाम भी शामिल है। आरोप है कि हाईकोर्ट में विवाद विचाराधीन होने के बावजूद फर्जी नियुक्ति पत्र और सर्कुलर तैयार कर कॉलेज में कार्यवाहक प्राचार्य नियुक्त करने की कोशिश की गई। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। प्रोफेसर एस. डोमिनिक राजकुमार ने बताया कि कॉलेज का संचालन सेंट एंड्रयूज कॉलेज एसोसिएशन नामक सोसायटी के माध्यम से होता है। वादी का कहना है कि सोसायटी की पंजीकृत नियमावली में प्रबंध समिति को कॉलेज के प्राचार्य की नियुक्ति, निलंबन और बर्खास्तगी का अधिकार दिया गया है। हाईकोर्ट में विचाराधीन है प्रबंध समिति का विवाद-शिकायत में कहा गया है कि सोसायटी की प्रबंध समिति को लेकर विवाद हाईकोर्ट में विचाराधीन है। इसी बीच सहायक रजिस्ट्रार, फर्म्स, सोसायटीज एवं चिट्स, गोरखपुर मंडल ने 7 मार्च 2026 को पत्र जारी कर निर्देश दिया था कि हाईकोर्ट के निर्णय के बिना प्रबंध समिति की बैठक कर कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। आरोप है कि इसके बावजूद चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया के मॉडरेटर मोस्ट रेवरेंट परितोष कैनिंग की कथित शह पर बिशप मरिस एडगर दान, रेव. रोशन लाल और रैना सैमुअल समेत अन्य लोगों ने मिलकर फर्जी और कूटरचित दस्तावेज तैयार कराए। रैना सैमुअल को कार्यवाहक प्राचार्य बनाने का आरोप-शिकायतकर्ता का आरोप है कि आरोपियों ने एक फर्जी नियुक्ति पत्र तैयार किया, जिसमें रैना निवेदिता सैमुअल को कॉलेज का कार्यवाहक प्राचार्य नियुक्त किए जाने की बात कही गई थी। इसके साथ ही एक कथित अवैध सर्कुलर भी तैयार कराया गया। आरोप है कि प्रबंध समिति के कुछ सदस्यों पर दबाव बनाकर इस सर्कुलर पर हस्ताक्षर भी कराए गए। इनमें प्रयागराज के एक कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अरुण सालिक मोजेस और डायसिस ऑफ लखनऊ के सचिव रेवरेंट प्रवीण मेसी के नाम भी शिकायत में बताए गए हैं। जानकारी होने पर दो सदस्यों ने वापस लिए हस्ताक्षर-शिकायत के अनुसार, बाद में प्रो. अरुण सालिक मोजेस और रेवरेंट प्रवीण मेसी को कथित फर्जीवाड़े की जानकारी हुई तो दोनों ने संबंधित पदाधिकारियों को पत्र लिखकर अपने हस्ताक्षर वापस लेने और फर्जी नियुक्ति पत्र निरस्त करने की मांग की। शिकायतकर्ता ने इसे कथित फर्जी दस्तावेज तैयार करने और अन्य सदस्यों को उसमें शामिल करने की कोशिश का आधार बताया है।पहले भी फर्जी दस्तावेज बनाने का आरोप-शिकायतकर्ता ने एक व्यक्ति से हुई बातचीत का हवाला देते हुए आरोप लगाया है कि आरोपियों ने प्रयागराज के अशोक नगर स्थित साइबर कैफे में कंप्यूटर और इंटरनेट की मदद से कई दस्तावेज तैयार कराए थे। आरोप है कि इन दस्तावेजों का इस्तेमाल शिकायतकर्ता को फंसाने और उसके खिलाफ कार्रवाई कराने के लिए किया जा रहा था। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि संबंधित लोग पहले भी इस तरह के दस्तावेज तैयार कर लोगों को मुकदमों में फंसाने का प्रयास कर चुके हैं। हालांकि इन आरोपों की पुष्टि पुलिस जांच के बाद ही हो सकेगी। जांच में सामने आएगा फर्जी दस्तावेज का सच-वादी का कहना है कि मामले में अज्ञात लोगों की भूमिका भी सामने आ सकती है। इसके लिए साइबर कैफे, कंप्यूटर और इंटरनेट से तैयार किए गए कथित दस्तावेजों की जांच, डिजिटल साक्ष्य जुटाने और संबंधित लोगों से पूछताछ जरूरी है।

यह भी बताया कि उसने पहले कैंट थाने में लिखित शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की थी। कार्रवाई न होने पर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों से भी शिकायत की गई। इसके बाद न्यायालय में प्रार्थना पत्र दिया गया। पुलिस ने शुरू की जांच-कैंट थाना प्रभारी अमरनाथ राय ने बताया, शिकायतकर्ता ने फर्जीवाड़े, जाली दस्तावेज को असली के रूप में इस्तेमाल करने समेत अन्य आरोप लगाया है। जांच पड़ताल कराई जा रही है।

रक्षाबंधन से पहले समूह की बहनों का स्नेह, जिलाधिकारी की कलाई पर सजी आत्मनिर्भरता की राखी

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने आज अपने हाथों से तैयार राखी बांधकर साझा कीं पर्व की खुशियां,30 स्वयं सहायता समूहों की 150 महिलाओं ने हुनर को बनाया आजीविका का माध्यम, अब तक तैयार कीं करीब 20 हजार राखियां, त्योहार से खुली आमदनी की राह, राखियों की बिक्री से समूह की महिलाओं को होगी लाखों रुपये की आय, जिलाधिकारी ने महिलाओं के बीच बैठकर देखी राखी बनाने की प्रक्रिया, स्थानीय हुनर एवं महिला स्वावलंबन के प्रयासों को सराहा, स्वरोजगार के साथ स्वास्थ्य सुरक्षा भी पात्र समूह परिवारों को आयुष्मान योजना से जोड़कर गोल्डेन कार्ड बनाने की पहल, हाथों का हुनर बना रोजगार 150 महिलाएं बना चुकीं करीब 20 हजार राखियां

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। आगामी 28 अगस्त को मनाए जाने वाले रक्षाबंधन पर्व से पहले आज स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने स्नेह, सम्मान और आत्मनिर्भरता की खूबसूरत मिसाल पेश की। समूह में भागीदार बन रही हैं। रक्षाबंधन से पहले समूह की महिलाओं ने जब अपने हाथों से तैयार राखी जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ को बांधी तो यह आत्मीय क्षण भाई-बहन के स्नेह के साथ महिला सशक्तिकरण के संदेश से भी जुड़ गया। जिलाधिकारी ने महिलाओं को आगामी रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य एवं आर्थिक समृद्धि की कामना की। जिलाधिकारी ने कहा कि समूह की बहनों द्वारा तैयार राखियां उनके हुनर, मेहनत और आत्मविश्वास की पहचान हैं। स्थानीय स्तर पर तैयार उत्पादों को प्रोत्साहन और बाजार उपलब्ध कराकर महिलाओं की आय बढ़ाना आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के साथ स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में भी महत्वपूर्ण पहल की जा रही है। डे-एनआरएलएम के एफएनएचडब्ल्यू कार्यक्रम के अंतर्गत स्वास्थ्य सखियों द्वारा स्वास्थ्य विभाग के साथ समन्वय कर समूहों से जुड़े परिवारों की

की महिलाओं ने अपने हाथों से तैयार राखी जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ की कलाई पर बांधकर रक्षाबंधन की खुशियां साझा कीं। महिलाओं के हाथों से तैयार यह रक्षा-सूत्र उनके स्नेह के साथ हुनर से स्वावलंबन की ओर बढ़ते कदमों का भी प्रतीक बना। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने इस दौरान महिलाओं द्वारा तैयार की जा रही विभिन्न प्रकार की राखियों को देखा और उनके साथ बैठकर राखी बनाने की पूरी प्रक्रिया को करीब से समझा। उन्होंने कच्ची सामग्री, लागत, निर्माण, बिक्री और इससे महिलाओं को होने वाली आमदनी के संबंध में जानकारी ली। जिलाधिकारी ने महिलाओं की रचनात्मकता एवं मेहनत की सराहना करते हुए उनके उत्पादों को अधिक से अधिक बाजार से जोड़ने पर जोर दिया। जनपद में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत 30 स्वयं सहायता समूहों की लगभग 150 महिलाएं रक्षाबंधन पर्व के लिए राखियां तैयार करने के कार्य से जुड़ी हैं। महिलाओं द्वारा अब तक करीब 20 हजार आकर्षक राखियां तैयार की जा चुकी हैं। इन राखियों की बिक्री से समूह की महिलाओं को लाखों रुपये की आमदनी होने की संभावना है। रक्षाबंधन का पर्व इन महिलाओं के लिए केवल उत्सव नहीं, बल्कि आजीविका का अवसर भी बनकर आया है। घर की जिम्मेदारियां संभालते हुए महिलाएं अपने कौशल को आय में बदल रही हैं और परिवार की आर्थिक मजबूती पात्रता संबंधी जानकारी संकलित की जाएगी। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन-आरोग्य योजना तथा निर्धारित पात्रता के अनुसार मुख्यमंत्री जन-आरोग्य अभियान के तहत पात्र परिवारों को सूचीबद्ध अस्पतालों में रूपया 5 लाख तक निःशुल्क उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। समूहों से जुड़े पात्र परिवारों को इन योजनाओं से आच्छादित करते हुए आयुष्मान गोल्डेन कार्ड बनवाने की कार्यवाही की जाएगी। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने कहा कि महिलाओं को केवल रोजगार से जोड़ना ही नहीं, बल्कि आजीविका, बाजार और स्वास्थ्य सुरक्षा का मजबूत आधार उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ उनके परिवारों तक जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस रक्षाबंधन सोनभद्र की समूह की बहनों के हाथों से तैयार राखियां केवल कलाइयों पर स्नेह की डोर नहीं बांधेंगी, बल्कि हर राखी महिला के हुनर, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की कहानी भी कहेगी। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 श्री वागीश कुमार शुक्ला, डी0सी0 मनरेगा श्री रविन्द्र वीर सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी श्री रमेश मिश्रा, उप जिलाधिकारी घोरावल श्री विशाल कुमार सहित सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

निर्माण कार्य की गुणवत्ता में कमी मिलने पर कार्य रुकवाया गया, ठेकेदार को नोटिस जारी करने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) श्री बागीश कुमार शुक्ला के निर्देश के क्रम में उप जिलाधिकारी श्री जफर अहमद द्वारा नगर पंचायत डाला के वार्ड नंबर-6 में कराए जा रहे निर्माण कार्य की गुणवत्ता की मौके पर जांच की गई। जांच के दौरान शिकायतकर्ता श्री राजेश, जिनकी पत्नी सभासद हैं, की उपस्थिति में निर्माण कार्य का स्थलीय निरीक्षण किया गया। जांच के दौरान शिकायत सही पाई गई। मौके पर सीसी रोड के किनारे साइड वाल की जुड़ाई में सीमेंट एवं बालू के स्थान पर भस्सी (गिट्टी की धूल) का प्रयोग पाया गया। साथ ही सीसी रोड की ढलाई की निर्धारित 6 इंच ऊंचाई भी मौके पर कम पाई गई। निर्माण कार्य की गुणवत्ता मानक के अनुरूप न पाए जाने पर तत्काल कार्य रुकवा दिया गया। उप जिलाधिकारी ने संबंधित ठेकेदार को निर्माण कार्य में निर्धारित मानकों का अनुपालन न करने के संबंध में नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। साथ ही नगर पंचायत डाला के अधिशासी अधिकारी श्री अखिलेश सिंह एवं संबंधित अवर अभियंता श्री ओम तिवारी को निर्देशित किया गया कि आगे का निर्माण कार्य उनकी प्रत्यक्ष देखरेख में निर्धारित मानकों एवं गुणवत्तापूर्ण सामग्री के साथ ही कराया जाए।

युवाओं के सपनों को मिली नई उड़ान, कृषि विभाग में 46 नवचयनित प्राविधिक सहायकों को मिला नियुक्ति पत्र

मुख्यमंत्री के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम का सोनभद्र में हुआ सजीव प्रसारण, उत्साह और उमंग से खिले नवचयनित अभ्यर्थियों के चेहरे,राज्यमंत्री ने सौंपे नियुक्ति पत्र, उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ कर्तव्यनिष्ठा एवं सेवाभाव का दिया संदेश, प्राविधिक सहायकों की नियुक्ति से कृषि विभाग को मिलेगी मजबूती, किसानों तक तकनीकी मार्गदर्शन एवं योजनाओं की पहुंच होगी और प्रभावी, किसानों की सेवा को बनाएं सर्वोच्च प्राथमिकता-राज्यमंत्री,मुख्यमंत्री का संबोधन सुनकर नवचयनित कार्मिक हुए प्रेरित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। युवाओं को निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से सरकारी सेवा से जोड़ने की दिशा में मंगलवार को जनपद सोनभद्र के 46 युवाओं के लिए यादगार अवसर रहा। माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा कृषि विभाग में नवचयनित प्राविधिक सहायक ग्रुप-'सी' अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका सजीव प्रसारण उप कृषि निदेशक, सोनभद्र कार्यालय के सभागार में देखा एवं सुना गया। जनपद स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यमंत्री समाज कल्याण विभाग श्री संजीव कुमार गोंड की अध्यक्षता में 46 नवचयनित प्राविधिक सहायकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए। लंबे परिश्रम के बाद सरकारी सेवा में चयन एवं नियुक्ति पत्र मिलने की खुशी नवचयनित अभ्यर्थियों के चेहरों पर साफ दिखाई दी। माननीय राज्यमंत्री श्री संजीव कुमार गोंड ने सभी नवचयनित प्राविधिक सहायकों को नियुक्ति की बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि नियुक्ति पत्र केवल सरकारी सेवा में प्रवेश का माध्यम नहीं, बल्कि जनसेवा के महत्वपूर्ण दायित्व की शुरुआत भी है। सभी नवचयनित कार्मिक पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी एवं संवेदनशीलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें और शासन की कृषि कल्याणकारी योजनाओं एवं नवीन तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को उनकी योग्यता एवं प्रतिभा के आधार पर निष्पक्ष और पारदर्शी व्यवस्था के माध्यम से रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रही है। कृषि विभाग में नए प्राविधिक सहायकों के आने से विभागीय कार्यों को गति मिलने के साथ किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन एवं योजनाओं का लाभ और प्रभावी ढंग से उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी।कार्यक्रम के दौरान उपस्थित जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं नवचयनित अभ्यर्थियों ने माननीय मुख्यमंत्री जी के संबोधन का सजीव प्रसारण देखा एवं सुना। नवचयनित कार्मिकों को शासकीय सेवा में अपने दायित्वों का निर्वहन पारदर्शिता, कर्तव्यनिष्ठा एवं जनसेवा की भावना से करने का संदेश मिला।नियुक्ति पत्र प्राप्त करने वाले नवचयनित प्राविधिक सहायकों में कार्यक्रम को लेकर विशेष उत्साह दिखाई दिया। नई जिम्मेदारी के साथ कृषि एवं किसान कल्याण के क्षेत्र में योगदान देने के संकल्प के साथ उन्होंने अपने शासकीय सेवाकाल की शुरुआत की। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी, उप कृषि निदेशक, जिला कृषि अधिकारी सहित कृषि विभाग के अधिकारी-कर्मचारी तथा नवचयनित प्राविधिक सहायक उपस्थित रहे।

कंप्यूटर संचालक और प्रोग्रामिंग सहायक (COPA) केशल के महत्वपर कॉमिक्स

नेंनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागाज

महिला कांवड़ यात्रियों ने दूग्धेश्वर महादेव का किया जलाभिषेक, लगे बोल-बम के जयकारे

जमकर लगे बोल बम और हर हर महादेव के जयकारे,डीजे की धुन पर थिरकी महिला कावड़ यात्री,मंदिर में रुद्राभिषेक का हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि प्रदोष को जिला मुख्यालय रॉबर्ट्सगंज में केसरवानी वंश द्वारा निर्मित दूग्धेश्वर महादेव मंदिर समिति के सचिव गोविंद केसरी के नेतृत्व में महिला कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ राम जानकी मंदिर (विजयगढ़ पेट्रोल पंप के सामने) से हुआ। इस कांवड़ यात्रा में सैकड़ों महिलाओं- युवतियों ने भगवा वस्त्र धारण कर, कंधे पर कावड़ लेकर बोल बम का जयकारा लगाते, डीजे के धुन पर थिरकती हुई शामिल हुई। यह कावड़ यात्रा नगर भ्रमण करते हुए मां शीतला धाम के समीप स्थित दूधेश्वर महादेव मंदिर पहुंचा जहां पर महिला कांवरियों ने भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया। बता दें कि यह कांवड़ यात्रा संस्कृति, साहित्य, कला, धर्म, अध्यात्म की पताका संपूर्ण विश्व में फहराने वाले सुप्रसिद्ध शिव पुराण कथा वाचक मध्य प्रदेश सीहोर के पीठाधीश्वर प्रदीप मिश्रा के आवाहन पर निकाली गई थीं। इसके बाद मंदिर परिसर में दोपहर में रुद्राभिषेक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण के साथ हुआ। कांवड़ यात्रा मे मुख्य रूप से 1008 महामंडलेश्वर सरिता गिरी, दूधेश्वर महादेव मंदिर के सचिव गोविंद केसरी, प्रतिभा देवी, उमा केसरी, सपना, किरण देवी, सीमा, रानी, सुमन, उषा, गीता श्वेता, पूजा, सरिता, रीता, बबीता, निशु, सिमा, राजेश केसरी, मंगल केसरी, गोपाल, राजेश, संगम, मंगल केसरी, हरिहर, सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

कार में एसी चलाकर बैठे युवक की मौत,अहरौरा में पोस्टमार्टम में हार्ट-अटैक की पुष्टि

सोनभद्र। मिर्जापुर के अहरौरा में वाराणसी-शक्ति नगर रोड पर लिखनिया दरी मोड़ के पास एक कार में 43 वर्षीय युवक का शव मिला। मृतक की पहचान सोनभद्र निवासी गजानंद गिरी के रूप में हुई है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, उनकी मौत हृदय गति रुकने से हुई। क्षेत्राधिकारी (ऑपरेशन) मोहम्मद फहीम ने बताया कि गजानंद गिरी सोनभद्र के रावसटर गंज थाना क्षेत्र के हिनौता गांव के रहने वाले थे। रविवार रात लगभग 11 बजे वह अपने घर से वाराणसी के लिए अकेले निकले थे। उन्होंने अपनी कार लिखनिया दरी मोड़ के पास खड़ी की थी और एसी चलाकर बैठे थे। एक व्यक्ति बेहोशी की हालत में पड़ा- रात्रि गश्त के दौरान पीआरवी पुलिस ने दो बार कार को उसी स्थान पर खड़ा देखा। पुलिसकर्मियों ने पास जाकर देखा तो एक व्यक्ति बेहोशी की हालत में पड़ा था। पुलिस तुरंत उन्हें इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अहरौरा ले गई, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इसके बाद पुलिसकर्मियों ने मृतक की पहचान करने का प्रयास किया। गाड़ी से मिले दस्तावेजों के आधार पर मृतक की पहचान गजानंद गिरी के रूप में हुई। परिजनों को घटना की सूचना दे दी गई है। थाना प्रभारी अजय कुमार मिश्रा ने बताया कि अंत्य परीक्षण रिपोर्ट से पुष्टि हुई है कि गजानंद गिरी की मौत हृदय गति रुकने के कारण हुई थी।

सोनभद्र में कांग्रेस का संगठन सृजन अभियान शुरू,नए जिलाध्यक्ष के चयन पर पर्यवेक्षकों ने दिया विचार

सोनभद्र। सोनभद्र में कांग्रेस के 'संगठन सृजन अभियान' के तहत जिला कांग्रेस कमेटी के नए अध्यक्ष के चयन और संगठनात्मक गतिविधियों पर चर्चा के लिए एक प्रेस वार्ता आयोजित की गई। इस दौरान एआईसीसी पर्यवेक्षक अली मेहंदी और पीसीसी पर्यवेक्षक भगवती प्रसाद चौधरी तथा राजेश साहनी मौजूद रहे। यह प्रेस वार्ता सोनभद्र जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यालय पर हुई। पर्यवेक्षकों ने बताया कि 25 अगस्त से जिले में जिला, विधानसभा और ब्लॉक स्तर पर संगठनात्मक बैठकें शुरू होंगी। इन बैठकों में कांग्रेस पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ विस्तृत संवाद किया जाएगा। इसका उद्देश्य संगठन की जमीनी स्थिति को समझना, कार्यकर्ताओं की राय जानना और संगठन को मजबूत करने के लिए सुझाव प्राप्त करना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इन बैठकों और कार्यकर्ताओं से मिले फीडबैक के आधार पर जिला अध्यक्ष पद के लिए योग्य उम्मीदवारों का एक पैनल तैयार किया जाएगा। यह पैनल कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को भेजा जाएगा। पर्यवेक्षकों ने यह भी जानकारी दी कि 'संगठन सृजन अभियान' के तहत निर्धारित प्रक्रिया पूरी करने के बाद, आगामी 8 सितंबर तक जिले के लिए नए जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष के नाम की घोषणा कर दी जाएगी।

स्पोर्ट्स

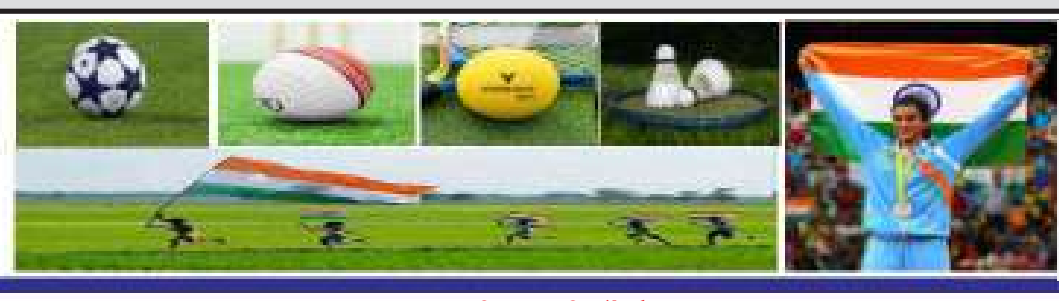

पूर्व वर्ल्ड स्नूकर चैंपियन बच्चों के यौन शोषण में पाए गए दोषी,1993 से 2010 के बीच लड़की और लड़के से दुर्व्यवहार,स्नूकर संस्था ने सदस्यता खत्म की

ग्लासगो। पूर्व वर्ल्ड स्नूकर चैंपियन ग्रेम डॉट को बच्चों के यौन शोषण के दो मामलों में दोषी पाया गया है। 49 साल

के डॉट के खिलाफ ग्लासगो हाई कोर्ट में पांच दिन तक सुनवाई चली। ज्यूरी ने उन्हें 1993 से 1996 के बीच एक लड़की और 2006 से 2010 के बीच एक लड़के के साथ किए गए यौन दुर्व्यवहार से जुड़े दोनों मामलों में दोषी माना। अदालत ने डॉट की सजा पर फैसला अगली सुनवाई में करने का आदेश दिया है। यह सुनवाई 29 सितंबर 2026 को एडिनबर्ग में होगी। तब तक डॉट हिरासत में रहेंगे। लड़की ने 1990 के दशक के दुर्व्यवहार के बारे में बताया-सुनवाई के दौरान अदालत को बताया गया कि डॉट ने 1990 के दशक में एक स्कूली लड़की के साथ कई बार अनुचित व्यवहार किया। अब 40 की उम्र में पहुंच चुकी महिला ने आरोप लगाया कि डॉट ने उसे गलत तरीके से छुआ और उसे यौन गतिविधियों में शामिल करने की कोशिश की। महिला ने अदालत में बताया कि इन घटनाओं से वह डर गई और सदमे में थी। डॉट ने उसे एक टेडी बियर भी दिया था। पुलिस ने 2001 में इन आरोपों को लेकर डॉट से संपर्क किया था, लेकिन उस समय कोई चार्ज नहीं लगाया गया। दूसरे मामले में करीब 8 साल के लड़के के साथ दुर्व्यवहार- दूसरे मामले में एक लड़के ने अदालत को बताया कि डॉट ने 2006 के बाद उसका यौन शोषण किया। उस समय उसकी उम्र करीब 8 साल थी। उसने अदालत में डॉट पर बाथरूम, कार और अन्य जगहों पर अनुचित तरीके से छूने और यौन दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया। उसने यह भी बताया कि डॉट उसे चिप्स, सॉफ्ट ड्रिंक और एक बार 50 पाउंड देकर 'इनाम' देता था। डॉट ने सभी आरोपों को झूठा बताया था- डॉट ने सुनवाई के दौरान आरोपों को गलत बताया था और कहा था कि उन्होंने कभी किसी के साथ अनुचित व्यवहार नहीं किया। इसके बावजूद ज्यूरी ने दोनों मामलों में उन्हें दोषी माना। पुलिस स्कॉटलैंड के डिटेक्टिव इंस्पेक्टर गैरी स्मिली ने डॉट को 'खतरनाक व्यक्ति' बताया। 2006 में वर्ल्ड चैंपियन बने थे डॉट- ग्रेम डॉट ने 2006 में वर्ल्ड स्नूकर चैंपियनशिप का खिताब जीता था। वह 2004 और 2010 में भी वर्ल्ड चैंपियनशिप के फाइनल तक पहुंचे थे।स्नूकर संस्था ने हमेशा के लिए सदस्यता खत्म की-दोषी पाए जाने के बाद वर्ल्ड प्रोफेशनल बिलियर्ड्स एंड स्नूकर एसोसिएशन (डब्लूपीबीएसए) ने डॉट की सदस्यता तत्काल प्रभाव से स्थायी रूप से रद्द कर दी। संस्था ने उन्हें खेल से पूरी तरह

हटाने का फैसला लिया है और वर्ल्ड स्नूकर से उन्हें हॉल ऑफ फेम से हटाने का अनुरोध भी किया है। डॉट को अप्रैल 2025 में ही प्रोफेशनल स्नूकर की सभी गतिविधियों से निलंबित कर दिया गया था। 2025-26 सीजन खत्म होने के बाद उन्हें प्रोफेशनल रैंकिंग से भी हटा दिया गया था। भारत में भी सामने आ चुके हैं ऐसे मामले-खेलों में बच्चों के यौन शोषण के मामले भारत में भी सामने आए हैं। इनमें कई मामलों में कोच या ट्रेनर पर नाबालिग खिलाड़ियों के शोषण के आरोप लगे और कुछ मामलों में अदालत ने दोषी ठहराकर सजा भी सुनाई। 1. आर्चरी कोच कुलदीप वेदवान को 5 साल की सजा-2026 में हरियाणा की फास्ट-ट्रैक स्पेशल कोर्ट ने राष्ट्रीय स्तर के आर्चरी कोच कुलदीप वेदवान को नाबालिग महिला तीरंदाज से यौन दुर्व्यवहार के मामले में 5 साल की कठोर कैद की सजा सुनाई। कोर्ट ने पॉक्सो एक्ट के तहत उन्हें दोषी माना और 15 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। मामला 2023 की एक प्रतियोगिता के दौरान का था। 2. केरल के क्रिकेट कोच मनु एम के खिलाफ कई मामले-केरल के तिरुवनंतपुरम में क्रिकेट कोच मनु एम के खिलाफ नाबालिग खिलाड़ियों के यौन शोषण के कई मामले सामने आए। 2024 में एक पूर्व प्रशिक्षु के शिकायत करने के बाद अन्य लड़कियां भी सामने आईं और कुल 6 मामले दर्ज हुए। अदालत ने 2026 में कई मामलों में उन्हें दोषी ठहराया। एक मामले में उन्हें 10 साल की कठोर कैद और 66 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई गई। दूसरे मामले में उन्हें 48 साल की कठोर कैद सुनाई गई, जबकि जून 2026 में चौथे मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद उनकी कुल सजा 127 साल तक पहुंच गई; प्रभावी तौर पर उन्हें 42 साल जेल में रहना होगा। 3. शूटिंग कोच अंकुश भारद्वाज पर नाबालिग खिलाड़ी का आरोप-2026 में शूटिंग कोच और अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता अंकुश भारद्वाज के खिलाफ एक नाबालिग शूटर ने यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया। पुलिस ने पॉक्सो के तहत मामला दर्ज किया और जांच शुरू हुई। 4. हॉकी ट्रेनिंग के दौरान नाबालिग खिलाड़ी से यौन दुर्व्यवहार का मामला-बीएसएफ की 'प्रहरी बाल विकास योजना' के तहत हॉकी ट्रेनिंग ले रही 12 साल की नाबालिग खिलाड़ी से कथित यौन दुर्व्यवहार का मामला भी अदालत तक पहुंचा। 2021 की घटना में हॉकी कोच पर पॉक्सो के तहत गंभीर यौन हमले का आरोप लगाया गया था। दुनिया में खेलों से जुड़े बड़े मामले-1. लैरी नासर, जिम्नास्टिक्स का सबसे बड़ा मामला-अमेरिका में जिम्नास्टिक्स के पूर्व टीम डॉक्टर लैरी नासर का मामला दुनिया के सबसे चर्चित खेल यौन शोषण मामलों में शामिल है। नासर पर युवा महिला जिम्नास्टों के लंबे समय तक यौन शोषण के आरोप लगे थे। 2018 में उन्हें 40 साल तक की जेल की सजा सुनाई गई। 2. बैरी बेनेल, ब्रिटिश फुटबॉल का बड़ा मामला-ब्रिटेन में पूर्व फुटबॉल कोच और स्काउट बैरी बेनेल पर बच्चों के यौन शोषण के कई मामले सामने आए। वह मैनचेस्टर सिटी से भी जुड़े रहे थे। 2018 में उन्हें 50 मामलों में दोषी ठहराकर 30 साल की जेल की सजा सुनाई गई। अदालत में बताया गया कि उन्होंने 1979 से 1990 के बीच 8 से 15 साल की उम्र के 11 लड़कों का शोषण किया था। 3. जेरी सैंडस्की, अमेरिकी कॉलेज फुटबॉल-अमेरिका में पेन स्टेट के पूर्व असिस्टेंट फुटबॉल कोच जेरी सैंडस्की को 2012 में बच्चों के यौन शोषण के 45 मामलों में दोषी पाया गया। मामले में 10 लड़कों के साथ करीब 15 साल तक दुर्व्यवहार के आरोप साबित हुए। उन्हें 30 से 60 साल की जेल की सजा सुनाई गई। भारत और दुनिया के मामलों में एक पैटर्न-इन मामलों को साथ रखने पर एक बात साफ दिखाई देती है। कई मामलों में आरोपी कोच, डॉक्टर या ट्रेनर जैसे भरोसे और अधिकार वाले पदों पर थे। यानी खिलाड़ी और खासकर नाबालिग खिलाड़ी अक्सर ऐसे लोगों पर निर्भर होते हैं, जिनके पास उनके करियर, ट्रेनिंग या टीम में जगह को लेकर प्रभाव होता है। इसी वजह से खेल संस्थाओं में सेफगार्डिंग, शिकायत की स्वतंत्र व्यवस्था, बैकग्राउंड चेक और नाबालिग खिलाड़ियों के साथ कोच-खिलाड़ी संबंधों के स्पष्ट नियम बेहद महत्वपूर्ण हो जाते हैं। पॉक्सो एक्ट क्या है, बच्चों को यौन अपराधों से बचाने वाला कानून, शिकायत से लेकर सजा तक समझें-ग्रेम डॉट मामले जैसे मामलों में नाबालिगों के खिलाफ यौन अपराधों की चर्चा के साथ यह समझना भी जरूरी है कि भारत में बच्चों की सुरक्षा के लिए क्या कानूनी व्यवस्था है। प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रंस फ्रॉम सेक्शुअल ऑफेंस यानी पॉक्सो 2012 में लागू किया गया था। यह 18 साल से कम उम्र के सभी बच्चों को यौन शोषण, यौन उत्पीड़न और पोर्नोग्राफी से सुरक्षा देता है। कानून में बच्चे के लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है। खेल अकादमी में बच्चे की सुरक्षा देकर भर्ती करें-खेलों में बच्चे लंबे समय तक कोच, ट्रेनर, फिजियो और दूसरे सपोर्ट स्टाफ के संपर्क में रहते हैं। इसलिए किसी अकादमी में दाखिला कराने से पहले सिर्फ उसकी ट्रेनिंग और सुविधाएं देखना काफी नहीं है। बच्चों की सेफगार्डिंग पॉलिसी के बारे में जानकारी लेना भी जरूरी है।

दलीप ट्रॉफी में वैभव ने जर्सी नंबर पर टेप लगाया,सिर्फ नंबर-3 दिखा, 6 गेंद में 8 बनाकर रनआउट हुए

स्पोर्ट डेस्क। दलीप ट्रॉफी क्वार्टर फाइनल में ईस्ट जोन के उप-कप्तान 15 साल के वैभव सूर्यवंशी जर्सी पर टेप लगाकर

अपना पसंदीदा नंबर-3 दिखाते नजर आए। हालांकि, वे बल्ले से असर नहीं छोड़ सके और 6 गेंदों में 8 रन बनाकर आउट हो हुए थे। उन्होंने लगातार दो चौके लगाए, लेकिन ओवर की आखिरी गेंद पर गली में कैच दे बैठे। वैभव आमतौर पर 3 नंबर की जर्सी पहनते हैं, लेकिन किसी वजह से इस मैच में उन्हें किसी और नंबर की जर्सी पहनकर मैदान पर उतरना पड़ा। 6 गेंदों में दो चौके, फिर गली में कैच-नॉर्थ ईस्ट जोन ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी थी। वैभव ने पारी के दूसरे ओवर में बिश्वोरजीत कोंथौजम की गेंदों पर लगातार दो चौके लगाए। इसके बाद अगली गेंद डॉट रही, लेकिन ओवर की आखिरी गेंद पर वैभव ने बल्ला लगाया और गली में जोसेफ लालथंकुमा को कैच दे बैठे। वे 6 गेंदों पर 8 रन बनाकर आउट हुए। 138 रन पर 5 विकेट गिरने के बाद संभली पारी-ईस्ट जोन की शुरुआत अच्छी नहीं रही। वैभव 8 और कप्तान ईशान किशन 4 रन बनाकर आउट हो गए।

टीम ने 138 रन तक 5 विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद सुदीप कुमार घरामी और शाहबाज अहमद ने शानदार शतक लगाए। सुदीप ने 146 और शाहबाज ने 167 रन बनाए। दोनों की पारियों से ईस्ट जोन ने पहली पारी में 467 रन बनाए।

111 रन पर सिमटा नॉर्थ ईस्ट जोन, फॉलोऑन-467 रन के जवाब में नॉर्थ ईस्ट जोन की टीम 111 रन पर ऑलआउट हो गई। अभिजीत सरकार ने 9.5 ओवर में 20 रन देकर 5 विकेट लिए। शाहबाज अहमद ने भी 3 विकेट हासिल किए। 356 रन की पहली पारी की बढ़त के बाद ईस्ट जोन ने नॉर्थ ईस्ट जोन को फॉलोऑन दे दिया। ईस्ट जोन की टीम अब मैच पर मजबूत पकड़ बना चुकी है।

वैभव सूर्यवंशी ने 4 गेंद में 2 विकेट लिए,दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन की तरफ से बॉलिंग की पर बैटिंग में 8 रन ही बना सके

बेंगलुरु। दलीप ट्रॉफी क्वार्टर फाइनल में ईस्ट जोन के उप-कप्तान 15 साल के वैभव सूर्यवंशी जर्सी पर टेप लगाकर अपना पसंदीदा नंबर-3 दिखाते नजर आए। हालांकि, वे बल्ले से असर नहीं छोड़ सके और 6 गेंदों में 8 रन बनाकर आउट हो हुए थे। उन्होंने लगातार दो चौके लगाए, लेकिन ओवर की आखिरी गेंद पर गली में कैच दे बैठे। वैभव आमतौर पर 3 नंबर की जर्सी पहनते हैं, लेकिन किसी वजह से इस मैच में उन्हें किसी और नंबर की जर्सी पहनकर मैदान

पर उतरना पड़ा। 6 गेंदों में दो चौके, फिर गली में कैच-नॉर्थ ईस्ट जोन ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी थी। वैभव ने पारी के दूसरे ओवर में बिश्वोरजीत कोंथौजम की गेंदों पर लगातार दो चौके लगाए। इसके बाद अगली गेंद डॉट रही, लेकिन ओवर की आखिरी गेंद पर वैभव ने बल्ला लगाया और गली में जोसेफ लालथंकुमा को कैच दे बैठे। वे 6 गेंदों पर 8 रन बनाकर आउट हुए। 138 रन पर 5 विकेट गिरने के बाद संभली पारी-ईस्ट जोन की शुरुआत अच्छी नहीं रही। वैभव 8 और कप्तान ईशान किशन 4 रन बनाकर आउट हो गए। टीम ने 138 रन तक 5 विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद सुदीप कुमार घरामी और शाहबाज अहमद ने शानदार शतक लगाए। सुदीप ने 146 और शाहबाज ने 167 रन बनाए। दोनों की पारियों से ईस्ट जोन ने पहली पारी में 467 रन बनाए। 111 रन पर सिमटा नॉर्थ ईस्ट जोन, फॉलोऑन- 467 रन के जवाब में नॉर्थ ईस्ट जोन की टीम 111 रन पर ऑलआउट हो गई। अभिजीत सरकार ने 9.5 ओवर में 20 रन देकर 5 विकेट लिए। शाहबाज अहमद ने भी 3 विकेट हासिल किए। 356 रन की पहली पारी की बढ़त के बाद ईस्ट जोन ने नॉर्थ ईस्ट जोन को फॉलोऑन दे दिया। ईस्ट जोन की टीम अब मैच पर मजबूत पकड़ बना चुकी है।

क्या खिलाड़ियों को पता था उन्होंने कॉकरोच वाली चाय पी, मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन को हाईकोर्ट की फटकार

मुंबई। क्या खिलाड़ियों को पता था कि वे कॉकरोच और मक्खियों वाली नॉन वेज चाय पी रहे हैं? यह सवाल मुंबई हाईकोर्ट ने मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) से पूछा है। एमसीए मुंबई शहर में किकेट को चलाने वाली सबसे बड़ी संस्था है। उसके ऑफिस परिसर में पांच रेस्टोरेंट जहां खिलाड़ी खाते-पीते हैं। हाईकोई इन रेस्टोरेंट में साफ-सफाई न होने की शिकायत पर सुनवाई कर रहा है। कोर्ट ने फूड एंड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन यानी एफडीए को इन रेस्टोरेंट्स का दोबारा निरीक्षण करने का निर्देश दिया है। सस्पेंड हुए थे रेस्टोरेंट्स के लाइसेंस-मामला मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन की उन याचिकाओं से जुड़ा है, जिनमें एफडीए की कार्रवाई को चुनौती दी गई थी। एफडीए ने एमसीए के 5 रेस्टोरेंट्स के लाइसेंस सस्पेंड किए थे। निरीक्षण में किचन में कॉकरोच और मक्खियां, गंदा फर्श और साफ-सफाई से जुड़ी गंभीर कमियां मिली थीं। इन रेस्टोरेंट्स के लाइसेंस एमसीए के नाम पर थे, जबकि संचालन एक निजी कंपनी

इंफ्रास्ट्रक्चर कर रही थी एमसीए बोला- पहले सुधार का मौका मिलना चाहिए था:-एमसीए की ओर से सीनियर वकील विक्रम नानकानी ने कहा कि लाइसेंस सस्पेंड करने से पहले एफडीए को 'इम्प्रूवमेंट नोटिस' देना चाहिए था। इससे कमियां दूर करने का मौका मिलता। कोर्ट ने इस दलील को नहीं माना। बेंच ने कहा कि जब निरीक्षण में गंभीर लापरवाही सामने आती है तो एफडीए तत्काल लाइसेंस सस्पेंड कर सकता है। कोर्ट ने कहा- कॉकरोच और मक्खियां हैं तो

यह 'नॉन-वेज चाय' हुई-सुनवाई के दौरान एमसीए के वकील ने कहा कि रेस्टोरेंट बंद होने से क्रिकेटर्स को चाय तक नहीं मिल पा रही है। इस पर एक्टिंग चीफ जस्टिस रवींद्र घुगे ने कहा कि जब किचन में मक्खियां और कॉकरोच हैं तो यह 'नॉन-वेजीटेरियन चाय' हुई। क्या खिलाड़ियों को पता है कि वे कैसी चाय पी रहे हैं? कोर्ट ने खिलाड़ियों के लिए अस्थायी तौर पर चाय और कॉफी की वेंडिंग मशीन लगाने की अनुमति दे दी। एफडीए की कार्रवाई की कोर्ट ने तारीफ की-हाईकोर्ट ने एफडीए की कार्रवाई की सराहना भी की। कोर्ट ने कहा कि फूड सेफ्टी को लेकर ऐसी कार्रवाई जारी रहनी चाहिए। हालांकि, बेंच ने यह भी कहा कि रेस्टोरेंट्स अपनी कमियां दूर कर लें तो लाइसेंस सस्पेंशन को आगे नहीं खींचना चाहिए। 29 अगस्त को होगी अगली सुनवाई-कोर्ट ने एफडीए को एमसीए और निजी कंपनी के बीच हुए कॉन्ट्रैक्ट की वैधता पर भी विचार करने को कहा है। एफडीए को रेस्टोरेंट्स की दोबारा जांच करनी होगी। मामले की अगली सुनवाई 29 अगस्त को होगी।

बारिश में दूषित हो सकता है पानी,हो सकते हैं गंभीर स्वास्थ्य खतरे,एक्सपर्ट से जानें वाटर टैंक क्लीनिंग का सही तरीका

नयी दिल्ली। बारिश के मौसम में जल प्रदूषण का रिस्क बढ़ जाता है। कई बार पानी देखने में साफ लगता है, लेकिन उसमें बैक्टीरिया, वायरस और दूसरे हानिकारक सूक्ष्मजीव मौजूद होते हैं। सीवर लीकेज और जलभराव के कारण यह रिस्क बढ़ता है। वही वाटर सप्लाई हमारे घरों में होती है। पानी की टंकी में, अंडर वाटर टैंक में वही पानी इकट्?ठा होता है। ऐसे में अगर वाटर टैंक की नियमित सफाई न हो या आरओ के फिल्टर समय पर बदले न जाएं तो वो दूषित पानी हमारे शरीर में पहुंच सकता है। इसे पीने से डायरिया, टाइफाइड और पीलिया जैसी बीमारियों का रिस्क बढ़ जाता है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में मानसून में पानी की टंकी और आरओ की सफाई पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- दूषित पानी से किन बीमारियों का रिस्क बढ़ता है? वाटर टैंक साफ करते समय किन बातों का ध्यान रखें? साथ ही विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अरविंद अग्रवाल, डायरेक्टर, इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- बारिश के मौसम में पानी की टंकी और आरओ की सफाई पर जोर क्यों दिया जाता है?जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- बारिश में पानी के दूषित होने का रिस्क बढ़ जाता है। जलभराव और गंदगी के कारण पानी के सोर्स में बैक्टीरिया और अन्य सूक्ष्मजीव पहुंच सकते हैं। लंबे समय तक सफाई न होने पर टंकी की तल में मिट्टी, कचरा और कीचड़ जमा हो सकता है। आरओ के फिल्टर और मेम्ब्रेन में गंदगी जमा होने से उसकी कार्यक्षमता घट सकती है। दूषित पानी पीने से डायरिया, टाइफाइड, हैजा और पेट से जुड़ी अन्य बीमारियों का रिस्क बढ़ जाता है। इसलिए इस मौसम में सफाई ज्यादा जरूरी है। सवाल- क्या मानसून में पानी जल्दी दूषित होता है? जवाब- हां, बारिश के दौरान मिट्टी, गंदगी और सीवेज का पानी वाटर सोर्स तक पहुंच जाता है। पाइपलाइन में लीकेज होने से सप्लाई में गंदा पानी मिल सकता है। इसके अलावा नमी की वजह से बैक्टीरिया और फंगस तेजी से बढ़ते हैं, जिससे पानी जल्दी दूषित होता है। सवाल- क्या सिर्फ पुराने घरों में यह समस्या होती है? जवाब- नहीं, अगर रेगुलर टंकी की सफाई न हो या समय पर आरओ की सर्विसिंग न हो तो यह समस्या नए घरों में भी हो सकती है। सवाल- गंदी आरओ मशीन के इस्तेमाल से क्या नुकसान हो सकता है? जवाब- इससे बैक्टीरिया और फंगस पनप सकते हैं। ऐसी स्थिति में मशीन पानी को पूरी तरह फिल्टर नहीं कर पाती। लंबे समय तक ये दूषित पानी पीने से डाइजेस्टिव इश्यूज हो सकते हैं। सवाल- दूषित पानी पीने से किन बीमारियों का रिस्क होता है? जवाब- दूषित पानी कई संक्रामक बीमारियों का कारण बन सकता है। इसका असर सबसे पहले डाइजेस्टिव सिस्टम पर पड़ता है और कई बार गंभीर इन्फेक्शन भी हो सकता है। दूषित पानी से होने वाली बीमारियांः- उल्टी-दस्त, फूड पॉइजनिंग, डायरिया, टाइफाइड, हैजा, पीलिया, स्किन एलर्जी, इंटेस्टाइनल इन्फेक्शन। सवाल- किन लोगों को रिस्क ज्यादा होता है?जवाब- दूषित पानी सभी के लिए नुकसानदायक है, लेकिन कुछ लोगों के लिए ये ज्यादा रिस्की होता है, जैसेकि- जिनका डाइजेस्टिव सिस्टम कमजोर है।जिनकी इम्यूनिटी कमजोर है। जिन्हें कोई हेल्थ कंडीशन (जैसे किडनी, लिवर, हार्ट डिजीज) है। जो डायबिटिक हैं। छोटे बच्चे, बुजुर्ग प्रेग्नेंट महिलाएं सवाल- क्या दूषित पानी के इस्तेमाल से स्किन प्रॉब्लम्स भी हो सकती हैं? जवाब- हां, दूषित पानी के इस्तेमाल से खुजली, रैशेज, फंगल इन्फेक्शन और बाल झड़ने जैसी समस्याएं हो

सकती हैं। सेंसिटिव स्किन वाले लोगों में इसका रिस्क ज्यादा होता है। सवाल- पानी की टंकी कितने दिनों में साफ करनी चाहिए? जवाब- आमतौर पर घर की पानी की टंकी हर 3-6 महीने में साफ करानी चाहिए। अगर पानी में स्मेल, रंग या गंदगी नजर आए तो तुरंत सफाई करवाना बेहतर है।सवाल- कैसे जानें कि अब वाटर टैंक साफ करने की जरूरत है? जवाब- अगर पानी का रंग, स्वाद या स्मेल बदल जाए तो यह टंकी में गंदगी जमा होने का संकेत है। सवाल- क्या वाटर टैंक खुला रहने से रिस्क बढ़ता है? जवाब- हां, टंकी खुली रहने से उसमें धूल, कीड़े, मच्छर और बारिश का गंदा पानी पहुंचता है। इससे बैक्टीरिया पनप सकते हैं। इसलिए टंकी हमेशा पूरी तरह ढककर रखें। सवाल- क्या खुद से पानी की टंकी साफ कर सकते हैं? जवाब- छोटी टंकियों की बेसिक सफाई की जा सकती है। लेकिन बड़ी या ऊंचाई वाली टंकियों की सफाई हमेशा प्रोफेशनल्स से कराना चाहिए। सवाल- वाटर टैंक साफ करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- सफाई से पहले टंकी पूरी तरह खाली करें। साफ ब्रश और सेफ डिसइन्फेक्टेंट का यूज करें। सफाई के बाद टंकी को अच्छी तरह धोएं। वाटर टैंक क्लीनिंग का सही तरीकाः- दस्ताने और मास्क पहनें। साफ ब्रश का इस्तेमाल करें। सेफ डिसइन्फेक्टेंट यूज करें। टंकी में जमा कीचड़ हटाएं। ब्रश से दीवारें साफ करें। ढक्कन और वेंट जायें। पाइपलाइन चेक करें। अंत में साफ पानी से धोएं। सफाई के दौरान बच्चों को दूर रखें। पहली बार का पानी यूज न करें। सवाल- आरओ का फिल्टर कितने दिनों में बदलना चाहिए? जवाब- आरओ के अलग-अलग फिल्टर की लाइफ अलग होती है। आमतौर पर इन्हें इस तरह बदला जाता है- सेडिमेंट (प्री) फिल्टरः हर 3-6 महीने में। कार्बन फिल्टरः हर 6-12 महीने में। पोस्ट-कार्बन फिल्टरः हर 12 महीने में।आरओ मेम्ब्रेनः हर 1-2 साल में। ध्यान दें, पानी में टीडीएस का लेवल ज्यादा हो तो फिल्टर जल्दी बदलने पड़ सकते हैं। पानी का स्वाद, स्मेल या फ्लो बदलने लगे तो फिल्टर चेक कराना चाहिए। सवाल- आरओ खराब या गंदा होने के संकेत क्या हैं? जवाब- आरओ मशीन खराब या गंदा होने के संकेत-आरओ गंदा / डैमेज होने के संकेतः- पानी का स्वाद बदले। पानी से स्मेल आए। पानी का फ्लो कम हो। मशीन से आवाज आए। मशीन से लीकेज हो। पानी गंदा दिखे। बार-बार फिल्टर चोक हो। बिजली खपत बढ़े। सवाल- क्या सिर्फ फिल्टर बदलना काफी है? जवाब- नहीं, आरओ के फिल्टर के साथ मशीन, पाइप और स्टोरेज टैंक की सफाई भी जरूरी है। सवाल- क्या आरओ का पानी हमेशा 100फीसदी सुरक्षित होता है? जवाब- नहीं, आरओ तभी सुरक्षित पानी देता है, जब उसकी रेगुलर सर्विसिंग और सफाई हो। खराब या पुराने फिल्टर होने पर पानी दूषित हो सकता है। सवाल- मानसून में पानी को साफ और सुरक्षित रखने के लिए क्या करें? जवाब- मानसून में टंकी और आरओ की रेगुलर सफाई के साथ पाइपलाइन की जांच भी जरूरी है।

एआई में आगे बढ़ने के लिए विदेशी डेटा सेंटरों को छूट कितनी उचित?

भारत एआई इंफ्रास्ट्रक्चर हब बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसका एक जरिया विदेशी कंपनियों के लिए भारत में डेटा सेंटर की स्थापना को आसान करना भी है। डेटा सेंटर ऐसी कंप्यूटर सिस्टम्स फेसेलिटी हैं, जो डेटा स्टोर करने में इस्तेमाल होती हैं और क्लाउड स्टोरेज से लेकर एआई तक हर चीज को सपोर्ट करती हैं। इस साल के बजट में विदेशी कंपनियों को भारत में डेटा सेंटर स्थापित करने के लिए 21 साल की टैक्स छूट दी गई है। केंद्र की इस टैक्स छूट के अलावा, राज्य सरकारों ने भी विदेशी डेटा सेंटरों को कई तरह के प्रोत्साहन दिए हैं। लेकिन अमेरिका में देखें तो इन्हीं कंपनियों के डेटा सेंटरों में बड़े निवेश के प्रस्ताव स्थानीय विरोध के कारण वापस ले लिए गए हैं। तब सवाल उठता है कि एआई इकोनॉमी में प्रवेश करने के लिए विदेशी डेटा सेंटरों की मेजबानी करना क्या भारत के लिए सही रणनीति है?पहले तो हम देखें कि इस टैक्स छूट को लेने वाली विदेशी कंपनियों के लिए टेक्नोलॉजी ट्रांसफर की कोई शर्त नहीं रखी गई है और न ही भारत में एआई मैन्युफैक्चरिंग और तकनीकी क्षमता बढ़ाने के कोई प्रावधान हैं। मौजूदा भारत-अमेरिका ट्रेड फ्रेमवर्क के तहत भारत ने वादा किया है कि वह तकनीकी समेत 500 अरब डॉलर तक की अमेरिकी वस्तुएं और सेवाएं खरीदेगा। अमेरिकी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी उपकरणों पर आयात प्रतिबंध भी हटाएगा। ऐसे में बहुत संभावना है कि भारत में डेटा सेंटर चलाने वाली कंपनियां घरेलू क्षमता विकसित करने के बजाय अमेरिका से उपकरणों का आयात करेंगी। गौरतलब यह भी है कि डेटा सेंटर चलाने वाली भारतीय कंपनियों को इस टैक्स छूट का लाभ नहीं मिलता, क्योंकि यह केवल विदेशी कंपनियों के लिए है। इन हालात में टेक्नोलॉजी ट्रांसफर के बगैर डेटा सेंटर इनोवेशन के इंजन नहीं, महज गोदाम बनकर रह जाते हैं। इस टैक्स छूट के लिए जरूरी है कि इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय डेटा सेंटरों के लिए एक योजना लाए। इसमें नॉलेज ट्रांसफर और भारतीय कंपनियों के लिए सीधे प्रोत्साहन का प्रावधान शामिल हो। इनके बिना भारत इंफ्रास्ट्रक्चर मुहैया कराने तक ही सीमित रहेगा, एआई क्षमता विकसित नहीं कर पाएगा। दूसरी बात, डेटा सेंटरों में अत्यधिक बिजली खपत होती है और उन्हें कूलिंग के लिए पानी की बहुत अधिक जरूरत होती है। भारत जैसे देश में इनके लिए नियामक प्रावधान की जरूरत है, जहां हीटवेव और जल संकट पहले ही जनजीवन को प्रभावित कर रहे हैं।आम तौर पर तर्क दिया जाता है कि भारत को इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने की जरूरत है और पर्यावरण संबंधी ये चिंताएं तो पश्चिमी देशों की लग्जरी हैं। लेकिन यह तर्क भारत में जल संकट के खतरे को नजरअंदाज करता है। भारत में दुनिया की 18इ आबादी रहती है, लेकिन जल संसाधन केवल 4इ हैं। भारत के मौजूदा 50 डेटा सेंटर पहले ही ऐसे क्षेत्रों में हैं, जहां पानी की भारी किल्लत है। विदेशी डेटा को भारत में रखने के भू-राजनीतिक जोखिम भी हैं। अमेरिका-ईरान युद्ध में ईरान ने यूएई और बहरीन में एडब्ल्यूएस डेटा सेंटरों पर हमला किया। ईरान ने जिन लक्ष्यों की सूची जारी की, उनमें भी प्रमुख अमेरिकी टेक कंपनियों के डेटा सेंटर शामिल थे और उन्हें 'एनिमी टेक्नोलॉजी इंफ्रास्ट्रक्चर' के तौर पर वर्गीकृत किया गया था।

डेटा सम्प्रभुता का सिद्धांत भी कहता है कि डिजिटल डेटा उसी देश के कानूनों या न्यायिक क्षेत्र के अधीन होता है, जहां वह भौतिक रूप से उत्पन्न और स्टोर होता है। बजट में भी प्रावधान है कि विदेशी कंपनी ऐसे 'स्पेसिफाइड डेटा सेंटर' के माध्यम से काम करे, जो भारतीय स्वामित्व में हो। (ये लेखिकाओं के अपने विचार हैं,ऋचा रॉय और अरूंधती काटजू)

ट्रम्प को चीन से कोई 'बिग ब्यूटीफुल डील' नहीं मिलेगी

ट्रम्प और शी जिनपिंग की मुलाकात जल्द ही बीजिंग समिट में होगी। अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रम्प की यह पहली चीन यात्रा होगी। इससे पहले, अक्टूबर 2025 में दोनों नेता दक्षिण कोरिया के बुसान में मिले थे। पहले कार्यकाल में ट्रम्प ने चीन के साथ अमेरिका के दशकों पुराने जुड़ाव को खत्म कर दिया था।एक साल तक दोनों देशों के बीच चले टैरिफ युद्ध के बाद अब ट्रम्प की इस यात्रा का उद्देश्य शायद दोनों देशों के बीच रिश्तों को फिर से बहाल करना है। चीन से अमेरिका के पुराने रिश्ते इस भ्रम पर आधारित थे कि पश्चिमी देशों के साथ आर्थिक जुड़ाव चीन को अधिक खुला और लोकतांत्रिक बनाएगा। लेकिन नया रिश्ता ऐसे चीन से निपटने की व्यावहारिक जरूरत है, जो पूरी तरह कम्युनिस्ट पार्टी के नियंत्रण में है और एक आर्थिक तथा तकनीकी महाशक्ति बन चुका है।निःसंदेह, शानो-शौकत और दिखावे के शौकीन ट्रम्प का चीन में बेहद भव्य स्वागत होगा। कुछ प्रतीकात्मक कदम और कारोबारी समझौते हो सकते हैं। लेकिन जोर प्रतिस्पर्धा खत्म करने पर नहीं, उसे मैनेज करने पर ही रहेगा। बुसान में शी-ट्रम्प के बीच हुए टैरिफ समझौते को आगे बढ़ाया जा सकता है, लेकिन तकनीकी, सुरक्षा और भू-राजनीतिक प्रभाव के क्षेत्रों में दोनों देशों की प्रतिद्वंद्विता में कोई बदलाव नहीं आएगा। चीन के लिए ताइवान अहम प्राथमिकता है। पिछले साल ट्रम्प ताइवान के लिए 11 अरब डॉलर के हथियार पैकेज की मंजूरी दे चुके हैं। लगभग 14 अरब डॉलर के अन्य पैकेज भी प्रक्रियाधीन हैं, जिनमें अत्याधुनिक मिसाइलें शामिल हैं। चीन ने अमेरिका को कहा था कि वह ताइवान को हथियार बेचने के मुद्दे पर सावधानी बरते। इसी बीच, ताइवान की विपक्षी पार्टी केएमटी की चेयरपर्सन चेंग ली-वुन की चीन में शी से हालिया मुलाकात यह संकेत देती है कि ताइवान को लेकर चीन के पास सैन्य विकल्पों के अलावा और भी रास्ते हैं। शी-ट्रम्प बैठक का सबसे संभावित नतीजा यही होने वाला है कि दोनों पक्ष अपने-अपने रुख दोहराएंगे और मतभेदों पर परदा डालने की कोशिश करेंगे। फिर ये बातचीत ऐसे समय हो रही है, जब ईरान युद्ध का असर पूरी दुनिया पर है और दोनों नेताओं की मुलाकात तक इसके समाप्त होने की संभावना भी नहीं दिख रही। निश्चित ही बातचीत में ईरान बड़ा विषय रहेगा, क्योंकि वह चीन का करीबी साझेदार है और उसके तेल निर्यात का बड़ा हिस्सा चीन में ही जाता है। ट्रम्प शायद चीन पर दबाव बनाएंगे कि वह होर्मुज स्ट्रेट खोलने के लिए ईरान को राजी करे। वैसे भी चीन इसका समर्थन करता है। चीन भी इसे इस नजरिए से देखेगा कि ईरान मसले ने अमेरिका का ध्यान पूर्वी एशिया से हटा दिया है। कई विश्लेषक पहले ही क्वाड की घटती प्रासंगिकता की ओर इशारा कर चुके हैं। 2025 में क्वाड का कोई समिट नहीं हुआ और कब होगा, यह भी तय नहीं। हालांकि, इसी माह के अंत में क्वाड देशों की बैठक नई दिल्ली में होने वाली है। हाल ही एक पोस्ट में ट्रम्प ने इस यात्रा को लेकर उम्मीदों को अपने अंदाज में जाहिर किया। उन्होंने खुद ही ऐलान कर दिया कि होर्मुज स्ट्रेट खुलने से चीन बहुत खुश है। ट्रम्प ने लिखा, 'मैं यह पूरी दुनिया के लिए और उनके लिए भी कर रहा हूं।' उन्होंने यह भी कहा कि चीन ने ईरान को हथियार नहीं भेजने पर सहमति जताई है। वैसे चीन के प्रति ट्रम्प की शत्रुता कम नहीं हुई है, लेकिन उनका अंदाज बदल गया है। धमकियां नाकाम होने पर अब वे दोस्ताना और सौदेबाजी वाला रवैया आजमा रहे हैं। ट्रम्प अपनी शैली के मुताबिक इस समिट को एक शानदार जीत के रूप में पेश करना चाहेंगे, जिसमें कोई 'बिग ब्यूटीफुल डील' हो जाए। लेकिन चीन समझदार है और शायद ही उन्हें उनकी उम्मीदों के मुताबिक कोई बड़ी डील देगा।चीन के प्रति ट्रम्प की शत्रुता कम नहीं हुई है, लेकिन उनका अंदाज बदल गया है। धमकियां नाकाम होने पर अब वे दोस्ताना और सौदेबाजी वाला रवैया आजमा रहे हैं। ट्रम्प शी जिनपिंग के साथ समिट को एक शानदार जीत के रूप में पेश करना चाहेंगे। (ये लेखक के अपने विचार हैं,मनोज जोशी)

सस्ती एनर्जी का दौर फिलहाल के लिए तो खत्म हो चुका है

वैश्विक तेल संकट अब भारत के घरेलू बजटों को प्रभावित करने वाला है। दुनिया भर में सरकारें पहले ही किसी न किसी रूप में ऊर्जा-अनुशासन लागू करने लगी हैं। श्रीलंका ने चार-दिवसीय वर्क-वीक और ईंधन पास की नीति लागू की है। बांग्लादेश ने ईंधन की राशनिंग शुरू कर दी है। फिलीपींस ने ऊर्जा आपातकाल घोषित कर दिया है। दक्षिण कोरिया ने तीन दशकों में पहली बार ईंधन मूल्य सीमा लागू की है। जापान ने रिकॉर्ड रणनीतिक भंडार जारी किए। यूरोपीय देश नागरिकों को ऊर्जा बचाने की चेतावनी दे रहे हैं, क्योंकि कई बाजारों में पेट्रोल की कीमतें 200 रु. प्रति लीटर से ऊपर पहुंच चुकी हैं। सस्ती एनर्जी का युग समाप्त हो चुका है, कम-से-कम फिलहाल के लिए। इसका कारण हजारों किलोमीटर दूर स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में निहित है। यह संकीर्ण जलमार्ग दुनिया की लगभग 20फीसदी तेल आपूर्ति के लिए जिम्मेदार है। ईरान युद्ध इस महत्वपूर्ण मार्ग को अनिश्चितता के क्षेत्र में बदल चुका है। तेल टैंकरों के मार्ग बदले जा रहे हैं, शिपिंग बीमा लागतों में विस्फोटक वृद्धि हुई है, माल ढुलाई की लागत बढ़ गई है और आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हैं।

भारत तो दुनिया की सबसे अधिक प्रभावित अर्थव्यवस्थाओं में है। हमारे लगभग 50फीसदी कच्चे तेल और 90फीसदी रसोई गैस का आयात होर्मुज से होता है। सरल शब्दों में कहें तो जब पश्चिम एशिया में आग लगती है तो खामियाजा भारत को भुगतना पड़ता है। अभी तक भारतीय उपभोक्ताओं को इस संकट के सबसे बुरे प्रभाव से बचाकर रखा गया है। वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में तेज बढ़ोतरी के बावजूद पेट्रोल और डीजल की कीमतें अधिकांशतः स्थिर बनी हुई हैं। न तो राशनिंग हुई है, न पेट्रोल पंपों के बाहर लंबी कतारें लगी हैं। लेकिन इसकी भी एक कीमत चुकानी पड़ी है। सरकार ने उत्पाद शुल्क में कटौती की। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों ने भारी अंडर-रिकवरी का बोझ उठाया। रिफाइनरियों को असामान्य रूप से ऊंची क्षमता पर काम करने के लिए मजबूर किया गया। एक तरह से राज्य ने उस झटके का एक हिस्सा स्वयं वहन किया, जिसे अन्यथा बाजार सीधे उपभोक्ताओं पर डाल देता। आलोचकों का कहना है कि यह कदम राजनीतिक कारणों के चलते उठाया गया, कि चुनाव समाप्त होने तक ईंधन की कीमतों को कृत्रिम रूप से दबाकर रखा गया, और अब उपभोक्ताओं को मूल्य-वृद्धि के लिए तैयार किया जा रहा है। लेकिन यह तर्क उस व्यापक हकीकत की अनदेखी करता है, जिसका सामना हर तेल-आयातक अर्थव्यवस्था कर रही है। दुनिया भर की सरकारों के सामने यही दुविधा थी कि झटके को तुरंत उपभोक्ताओं पर डाल दिया जाए और महंगाई को भड़का दिया जाए, या उसे अस्थायी रूप से स्वयं वहन किया जाए। अधिकांश सरकारों ने किसी न किसी रूप में हस्तक्षेप का रास्ता चुना। भारत ने भी यही किया।

क्योंकि ईंधन की कीमतें पेट्रोल पम्प पर लिखे अलग-थलग आंकड़े नहीं होतीं, उनका प्रभाव पूरी अर्थव्यवस्था में फैलता है- डीजल की ऊंची कीमतें परिवहन लागत बढ़ाती हैं, इससे खाद्य पदार्थों के दाम बढ़ते हैं, मैन्युफैक्चरिंग महंगी हो जाती है, हवाई यात्रा की लागत बढ़ जाती है और महंगाई व्यापक रूप से फैलकर असर डालती है। यदि युद्ध कल समाप्त हो जाए, तब भी कीमतें अचानक सामान्य नहीं होंगी।

टैंकरों को पहुंचने में हफ्तों लगते हैं, युद्धविराम की घोषणा के बाद भी बीमा दरें लंबे समय तक ऊंची बनी रहती हैं, देशों को अपने घट चुके भंडार फिर से भरने में समय लगता है, व्यापारी सतर्क बने रहते हैं, और आपूर्ति श्रृंखलाएं धीरे-धीरे ही सामान्य हो पाती हैं। आप इसकी कीमत या तो सीधे ऊंचे ईंधन दामों के रूप में चुकाते हैं, या अप्रत्यक्ष रूप से करों, महंगाई, राजकोषीय दबाव और सरकार के अन्य क्षेत्रों में घटे हुए खर्च के माध्यम से। इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,पलकी शर्मा)

क्या अब राजनीति में मुसलमान हाशिये पर हैं?

करीब सात साल पहले मैंने एक लेख लिखा था, जिसका शीर्षक था : 'क्या मुसलमान भाजपा के लिए कोई अहमियत रखते हैं?' हाल के राज्यों के चुनाव नतीजे- खासकर बंगाल और असम के- जहां मुस्लिम वोटरों की आबादी 30फीसदी से ज्यादा है- दिखाते हैं कि यह मुद्दा अब और बड़ा हो गया है। राजनीतिक तौर पर तो निष्कर्ष यही निकलता है कि मुसलमान आज भाजपा के लिए 2019 के मुकाबले काफी कम मायने रखते हैं। बंगाल और असम में भाजपा ने इस बार एक भी मुस्लिम उम्मीदवार उतारे बिना दो-तिहाई सीटें जीत लीं। दूसरी तरफ, असम में विपक्ष के जीते 24 उम्मीदवारों में से 22 मुस्लिम हैं। इनमें भी कांग्रेस के 19 जीते उम्मीदवारों में से 18 मुस्लिम हैं। बंगाल में 293 नए विधायकों में 40 मुस्लिम हैं, जिनमें से 34 टीएमसी के हैं। यानी टीएमसी के कुल 80 जीते उम्मीदवारों में से 45 फीसदी मुस्लिम हैं। इसका मतलब यह है कि जिन दो राज्यों में मुस्लिम आबादी सबसे ज्यादा है (जम्मू-कश्मीर अब राज्य नहीं है), वहां मुसलमान सत्ता से बाहर हो चुके हैं। भाजपा और सेकुलर पार्टियों के बीच हिंदू-मुस्लिम आधार पर बंटवारा साफ हो गया है। केरल में यूडीएफ के 102 नए विधायकों में 30 मुस्लिम और 29 ईसाई हैं। सेकुलर खेमे को इस बात से राहत हो सकती है कि कम से कम केरल में मुसलमान सत्ता में शामिल हैं, लेकिन यह राहत इस डर से कम हो जाती है कि भाजपा अब इसे अल्पसंख्यकों की सरकार बताकर हिंदू वोटरों को प्रभावित करने की कोशिश करेगी।राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो 18वीं लोकसभा में कुल 24 मुस्लिम सांसद हैं, यानी सिर्फ 4.42 फीसदी, जबकि देश में मुस्लिम वोटरों की आबादी 15 फीसदी से ज्यादा है। 16वीं लोकसभा में 22 और 17वीं लोकसभा में 27 मुस्लिम सांसद थे। जबकि 1980 में 49 और 1984 में 45 मुस्लिम सांसद चुने गए थे। तब उनका प्रतिशत क्रमशः 9 और 8.3 था। लोकसभा में मुस्लिम सांसदों की संख्या अकसर 5 फीसदी के आसपास रही है, लेकिन केंद्र में उन्हें हमेशा अच्छा प्रतिनिधित्व मिलता रहा। यहां तक कि वाजपेयी सरकार में सिकंदर बख्त मंत्री थे। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा उपसभापति जैसे पदों से लेकर सेना और खुफिया एजेंसियों के प्रमुख पदों तक मुसलमान पहुंच चुके हैं, लेकिन आज वे किसी भी ऐसे पद पर नहीं हैं। आज कोई मुस्लिम मुख्यमंत्री नहीं है। जम्मू-कश्मीर अब केंद्र शासित प्रदेश है। सिर्फ एक मुस्लिम राज्यपाल हैं- बिहार में सैयद अता हसनैन। केंद्र सरकार के करीब 100 सचिवों में सिर्फ एक मुस्लिम हैं- कामरान रिजवी- जो हैवी इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के सचिव हैं। सुप्रीम कोर्ट के 32 जजों में भी सिर्फ एक मुस्लिम जज हैं- जस्टिस एहसानुद्दीन अमानुल्लाह। भारत के आखिरी मुस्लिम मुख्य न्यायाधीश जस्टिस एएम अहमदी थे, जो 24 मार्च 1997 को रिटायर हुए थे। यह सब देखकर ऐसा लग सकता है कि भारतीय मुसलमानों को किनारे कर दिया गया है, लेकिन इस सोच पर फिर से विचार करने की जरूरत है। डॉक्टरी, कानून, शिक्षा, विज्ञान, सॉफ्टवेयर, बैंकिंग, मनोरंजन और मीडिया जैसे क्षेत्रों में मुसलमानों की संख्या बढ़ रही है। सिविल सेवा और सेना में भी उनका चयन बढ़ा है। इसलिए समस्या यह नहीं है कि मुसलमान हर क्षेत्र से बाहर हो रहे हैं। असली समस्या यह है कि राजनीति में उनका प्रतिनिधित्व लगातार कम हो रहा है। 1996 में वाजपेयी सरकार 13 दिन चली थी और 1999 में एक वोट से गिर गई थी। तब भाजपा नेता बलबीर पुंज इस बात से नाराज थे कि मुस्लिम वोटों पर निर्भर पार्टियां भाजपा को स्वीकार नहीं कर रही थीं। उनका मानना था कि मुसलमान तय कर रहे थे भारत पर कौन राज करेगा और कौन नहीं, लेकिन अब यह स्थिति बदल गई है। ये तथ्य तीन बड़े निष्कर्षों की ओर इशारा करते हैं। एक, भाजपा की विरोधी या सेकुलर पार्टियों को भाजपा अब मुस्लिम पार्टियों की तरह पेश करना चाहती है, जबकि उनके नेता हिंदू हैं। इससे हिंदू बनाम बाकी सब वाला माहौल बनता है, जो 80 फीसदी बनाम 20 फीसदी की राजनीति में बदल जाता है। यह भाजपा के लिए सबसे फायदेमंद स्थिति है। भाजपा चुनिंदा इलाकों में ईसाइयों के बीच भी काम करती है। गोवा और केरल में उसे इसका मौका मिला है। भाजपा के पास धैर्य भी है और समय भी। उत्तर-पूर्व में उसने ईसाई जनजातियों के साथ सुविधाजनक रिश्ता बना लिया है। वहां उसने कभी गोमांस पर प्रतिबंध की मांग नहीं की। अब भी कुछ सेकुलर पार्टियां मुस्लिम वोटों पर निर्भर हैं, लेकिन वे इतनी सतर्क हो गई हैं कि मुसलमानों के समर्थन में खुलकर बोलने से भी बचती हैं। जैसे दिल्ली में आम आदमी पार्टी सरकार ने शाहीन बाग आंदोलन और उसके बाद हुए दंगों के दौरान चुप्पी बनाए रखी। इससे धर्मनिरपेक्षता बचाने की जिम्मेदारी मुसलमानों पर आ गई है। यह न सिर्फ मुश्किल और अव्यावहारिक है, बल्कि गलत भी है। आज मुसलमानों से कहा जाता है कि वे उसी उम्मीदवार को वोट दें, जो भाजपा को हरा सके। इसके पीछे यह उम्मीद होती है कि इससे उन्हें सुरक्षा मिलेगी। एक मजबूत धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के लिए यह बहुत कमजोर सोच है। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट भी बताती है कि इससे मुसलमानों को फायदा नहीं हुआ। अब सेकुलर दलों को हिंदुओं के साथ इतना बड़ा गठबंधन बनाना होगा, जो जीत दिलाने वाला वोट प्रतिशत जुटा सके। पहले हिंदी पट्टी की पार्टियां जाति के आधार पर हिंदुओं को बांटकर जीत हासिल करती थीं, लेकिन भाजपा ने उस राजनीति को तोड़ दिया है। अगर मुसलमान अपनी अलग पार्टी बनाएंगे, तो उससे भाजपा को ही फायदा होगा और उसकी ताकत बढ़ेगी। जिन्ना के बाद भारत के मुसलमानों ने कभी किसी मुस्लिम नेता को अपना सबसे भरोसेमंद नेता नहीं माना। वे नेहरू-गांधी परिवार, यूपी-बिहार के यादव नेताओं, ममता बनर्जी और कई जगहों पर वाम दलों के हिंदू नेताओं पर भरोसा करते रहे हैं। लेकिन वे पहले कभी इस तरह सत्ता से बाहर नहीं हुए थे, जैसे आज हैं। इसे ठीक करने का एक ही तरीका है- ऐसा नेतृत्व उभरे, जो बड़ी संख्या में हिंदुओं को साथ लेकर नया गठबंधन बनाए। भारत के हिंदुओं ने ही संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता को चुना था, इसलिए उसे बचाने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है। भाजपा को वही चुनौती दे पाएगा, जो हिंदुओं के साथ भरोसे का रिश्ता बना सके। पार्टियों में हिंदू-मुस्लिम बंटवारा अब और स्पष्ट है.भाजपा के लिए मुस्लिम वोटर्स अब जरूरी नहीं रह गए हैं। ऐसे में क्या कोई हिंदू-नेतृत्व वाला राजनीतिक गठबंधन ही उसे चुनावों में चुनौती दे सकता है? क्योंकि यह तो साफ है कि भाजपा और सेकुलर पार्टियों के बीच हिंदू-मुस्लिम बंटवारा अब और मजबूत हो गया है। (ये लेखक के अपने विचार हैं, शेखर गुप्ता)

एक और पड़ोसी मुल्क से रिश्तों में सूझबूझ हमारे लिए जरूरी

बांग्लादेश हमारे लिए एक समस्या बना हुआ है और इसे नजरअंदाज करना लगातार मुश्किल होता जा रहा है। फिलहाल सबसे बड़ा मसला बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान की प्रस्तावित भारत यात्रा है। भारत ने उन्हें औपचारिक निमंत्रण दे रखा है। बल्कि देखें तो फिलहाल दो निमंत्रण हैं- एक द्विपक्षीय यात्रा का और दूसरा ब्रिक्स समिट के लिए। फिर भी, हर दिन इस पर असमंजस और गहराता जा रहा है कि क्या रहमान भारत आएंगे? अगस्त के आखिर में उनके आने की उम्मीद थी। फिर शेख हसीना ने दिल्ली में प्रेस कॉन्फ्रेंस की और नई सरकार पर बांग्लादेश को बर्बाद करने का आरोप लगाया। रहमान के मंत्रियों ने भी भारत पर हसीना को समर्थन देने का आरोप लगाया। तो यात्रा टल गई। अब रहमान के सलाहकार का कहना है कि भारत की उनकी पहली यात्रा द्विपक्षीय होनी चाहिए। इससे ब्रिक्स में उनकी भागीदारी की संभावना खत्म होती दिखती है। जबकि द्विपक्षीय यात्रा अभी भी अनिश्चित है। रहमान की यात्रा को लेकर यह असमंजस कई मायनों में दोनों देशों के बीच रिश्तों की अनिश्चितता का ही प्रतिबिम्ब है। इसका पहला नतीजा तो साफ है कि अब हसीना वाले दौर में वापस नहीं लौटा जा सकता। वह दोनों देशों के बीच असाधारण गर्मजोशी, भरोसे और सहयोग का दौर था। ढाका भारत का भरोसेमंद साझेदार था। तब हमारे बीच सुरक्षा सहयोग गहराया था, कनेक्टिविटी बढ़ी थी और राजनीतिक रिश्ते स्थिर रहे थे। अब समीकरण बदल गए हैं। बांग्लादेश के वोटर दक्षिणपंथ की ओर झुक गए हैं। आज वहां एक उदार और धर्मनिरपेक्ष पार्टी के लिए बहुत कम गुंजाइश बची है और वोटरों के एक हिस्से में भारत को लेकर संदेह बढ़ा है। हसीना राजनीतिक वापसी की बात करती तो हैं, लेकिन अभी यह नामुमकिन लगता है। शुरुआत में रहमान का रुख भारत के प्रति तर्कसंगत और संतुलित नजर आया था। लेकिन हाल के संकेत चिंताजनक हैं, खासकर पाकिस्तान के साथ काम करने की बांग्लादेश की बढ़ती इच्छा। इसका सबसे बड़ा उदाहरण उस गठजोड़ में ढाका की दिलचस्पी है, जिसे 'इस्लामिक नाटो' कहा जा रहा है। सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये ने एक पारस्परिक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत इनमें से किसी एक देश पर हमला सभी पर हमला माना जाएगा। बांग्लादेश ने अब कहा है कि इन तीन देशों से जुड़े किसी आर्थिक या रक्षा ढांचे में शामिल होने को लेकर उसका रुख सकारात्मक है। अगर ऐसा होता है तो 1971 के इतिहास और बांग्लादेश मुक्ति आंदोलन के दौरान पाकिस्तानी सेना द्वारा किए नरसंहार के बावजूद ये दोनों एक ही सैन्य गठबंधन में आ सकते हैं। यह स्थिति रणनीतिक रूप से भी भारत के लिए असहज है। अभी यह कथित 'इस्लामिक नाटो' मूल रूप से पश्चिम एशिया का समूह है। इसके सुरक्षा संबंधी गुणा-भाग उसी क्षेत्र पर केंद्रित हैं और सीधे तौर पर यह भारत के खिलाफ नहीं दिखता। लेकिन जैसे ही बांग्लादेश इसका सदस्य बना, हालात बदल जाएंगे। तब यह समूह दक्षिण एशिया और संभवतः भारत के पूर्वी हिस्से तक आ पहुंचेगा। बांग्लादेश अपनी विदेश नीति में फैलाव ला रहा है और यह आगे भी जारी रहेगा। इस दूसरी हकीकत के लिए भी हमें तैयार रहना होगा।बांग्लादेश एक अहम रणनीतिक तटरेखा वाला 17.8 करोड़ लोगों का देश है और बीते दो दशकों में उसकी आर्थिक उन्नति की कहानी भी प्रभावशाली रही है। अमेरिका उससे जुड़ना चाहता है। चीन वहां अपना प्रभाव चाहता है। यूरोप भी उसमें हिस्सेदारी चाहता है। अब पश्चिम एशिया की ताकतें भी इस समीकरण में जुड़ रही हैं।

युवा उम्र में चरित्र को समझें और अपने तेज का उपयोग करें

आजकल खासतौर पर नए बच्चे खूब मेहनत कर रहे हैं। लेकिन अब परिश्रम के साथ शिक्षा, योग्यता और संस्कार का तेज भी शामिल करना पड़ेगा। क्योंकि जब हम संस्कार अपनाते हैं तो अपने चरित्र पर टिकते हैं। भीतर से जो तेज जागता है, वह चरित्र से जागता है, बाहर के व्यक्तित्व से नहीं। हममें सूर्य की तरह तेज है, बस प्रकट करना है। तुलसीदास जी ने लिखा है- राकापति षोडस उअहिं तारागन समुदाइ, सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ। सभी तारागणों के साथ 16 कलाओं से पूर्ण चंद्रमा उदय हो और जितने पर्वत हैं, उन सब में दावाग्नि लगा दी जाए तो भी सूर्य का उदय हुए बिना रात्रि नहीं जा सकती। खासतौर पर युवा उम्र में चरित्र को समझें और अपने तेज का उपयोग करें। उम्र को बीत जाना है। कोई वक्त इतना सलोना नहीं होता कि जीवन भर रुक जाए। इसलिए बचपन से ही सूर्य नमस्कार से बच्चों को जोड़ें। सूर्य को जल देने की परंपरा का वैज्ञानिक महत्व बताएं। कहीं ऐसा न हो कि उम्र बीत जाए और हम अपने ही तेज का उपयोग न कर पाएं। पं. विजयशंकर मेहता

अमेरिका में 2 लाख विदेशियों के वीजा रद्द होंगे,इतने बड़े पैमाने में पहली बार एक साथ इतने वीजा कैंसिल होंगे

अधिकारी बोले- घूमने आते हैं, फिर शरण मांगते

वॉशिंगटन। अधिकारियों के मुताबिक यह प्रक्रिया अलग-

अलग चरणों में चलेगी, इसलिए संख्या बदल सकती है।पिछले 18 महीनों में 1.75 लाख वीजा रद्द हो चुके- बी1 वीजा कारोबार या बिजनेस से जुड़े कामों के लिए दिया जाता है। वहीं बी2 वीजा पर्यटन, रिश्तेदारों से मिलने या इलाज के लिए जारी किया जाता है। फिलहाल यह साफ नहीं है कि इन वीजा धारकों में से कितने लोगों ने अमेरिका में शरण मांगी है या उनका आवेदन अभी विचाराधीन है। अमेरिकी विदेश विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले 18 महीनों में करीब 1.75 लाख वीजा रद्द किए जा चुके हैं। इनमें ऐसे लोग भी शामिल हैं, जिन पर अपराध के आरोप थे या जो अपराध में दोषी पाए गए थे। कुछ मामलों में अमेरिकी नीतियों के खिलाफ गतिविधियों या बयानों के कारण भी वीजा रद्द किए गए। एच-1बी वीजा फीस का नया प्रस्ताव जारी- इधर एच-1बी वीजा की फीस बढ़ाए जाने की चर्चा है। अमेरिकी गृह मंत्रालय ने सोमवार को फीस बढ़ोतरी का नया प्रस्ताव जारी किया। प्रस्ताव के मुताबिक, एच-1बी वीजा के लिए विदेशी कर्मचारियों को करीब 99 लाख रुपए तक फीस देनी पड़ सकती है। इस प्रस्ताव को मंगलवार को आधिकारिक गजट में प्रकाशित किया जाना है। इसके बाद 30 दिनों तक आम लोग, कंपनियां और अन्य संगठन अपनी राय दे सकेंगे। साल के अंत तक नई फीस लागू की जा सकती है। ट्रम्प ने पिछले साल सितंबर में भी एच-1बी वीजा फीस को करीब 1 लाख रुपए से बढ़ाकर 95 लाख रुपए करने का आदेश दिया था। हालांकि, जून 2026 में एक अमेरिकी फेडरल कोर्ट ने उस आदेश को रद्द कर दिया था। अमेरिका हर साल एच-1बी वीजा के 85 हजार आवेदन मंजूर करता है। इनमें से करीब 70 हजार वीजा भारतीयों को मिलते हैं। यूनिवर्सिटीज की सलाह- 15 सितंबर से पहले अमेरिका लौट जाएं- अमेरिका की कई यूनिवर्सिटीज ने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को 15 सितंबर से पहले देश लौटने की सलाह दी है। इसी दिन से छात्र वीजा से जुड़े नए नियम लागू होने वाले हैं। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने एफ-1 और जे-1 वीजा धारक छात्रों और शोधकर्ताओं से कहा है कि वे तय समय से पहले अमेरिका पहुंचने की कोशिश करें। नए नियम लागू होने के दिन जो छात्र अमेरिका में मौजूद होंगे, उन पर पुरानी व्यवस्था लागू रहेगी। लेकिन 15 सितंबर के बाद यदि वे अमेरिका से बाहर जाकर दोबारा लौटते हैं, तो उन पर नए नियम लागू हो सकते हैं। उनके I-94 रिकॉर्ड में तय अवधि दर्ज की जा सकती है। नए नियमों के तहत एफ-1 वीजा धारकों को पढ़ाई पूरी होने के बाद अमेरिका में रुकने के लिए मिलने वाली 60 दिन की मोहलत घटाकर 30 दिन की जा सकती है। शिकागो, जॉर्जटाउन, ओहायो स्टेट और कोलंबिया समेत कई यूनिवर्सिटीज ने भी अपने छात्रों को इस बारे में चेतावनी जारी की है।

पुतिन सितंबर में आ सकते हैं भारत,बोले- मोदी से मुलाकात जल्द, जयशंकर ने रूस पहुंचकर ब्रिक्स का न्योता दिया

यह दोनों देशों के बीच आपसी हित और भरोसे को दिखाता है। 2022 से भारत-रूस व्यापार बढ़ा-

रूस और भारत के बीच कारोबार 2022 के बाद तेजी से बढ़ा है, जिसकी बड़ी वजह भारत का रूस से कच्चे तेल का आयात बढ़ना है। हालांकि वित्त वर्ष 2025-26 में यह कारोबार पिछले साल के रिकॉर्ड स्तर से करीब 13फीसदी घटा था। वित्त वर्ष 2024-25 में दोनों देशों के बीच कारोबार रिकॉर्ड 68.7 अरब डॉलर तक पहुंच गया था। लेकिन वित्त वर्ष 2025-26 में यह घटकर करीब 59.9 अरब डॉलर रह गया, यानी पिछले साल के मुकाबले करीब 13फीसदी की कमी आई। दोनों देशों के बीच कारोबार में सबसे बड़ा हिस्सा रूस से भारत को होने वाले तेल निर्यात का है। इसके अलावा रूस से भारत खाद, कोयला और दूसरे कच्चे माल खरीदता है। हालांकि दोनों देशों के बीच व्यापार में अभी भी बड़ा असंतुलन है। भारत रूस से जितना सामान खरीदता है, उसके मुकाबले रूस को भारत का निर्यात काफी कम है। दोनों देशों ने 2030 तक आपसी कारोबार को 100 अरब डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए भारत खास तौर पर रूस को अपनी दवाइयां, कृषि उत्पादों, मशीनरी और दूसरे सामानों की बिक्री बढ़ाना चाहता है। भारत ने जुलाई में आधे से ज्यादा तेल रूस से खरीदा-भारत ने जुलाई 2026 में रूस से रिकॉर्ड 24.7 लाख बैरल प्रतिदिन कच्चा तेल खरीदा, जो देश के कुल तेल आयात का 50.83फीसदी था। यानी पिछले महीने भारत में आयात होने वाले हर दो बैरल तेल में एक से ज्यादा बैरल रूस से आया।रूस लगातार भारत का सबसे बड़ा तेल सप्लायर बना हुआ है। जुलाई 2025 के मुकाबले जुलाई 2026 में रूस से भारत का तेल आयात 62.4फीसदी बढ़ा। हालांकि, जून 2026 में हुए रिकॉर्ड 26 लाख बैरल प्रतिदिन के मुकाबले जुलाई में तेल आयात 4.8फीसदी कम रहा।

अमेरिका का ईरान की कमाई के 5 रास्तों पर रोक, इनमें सोना, टेक्नोलॉजी और शिपिंग शामिल, कहा- जो देश बिजनेस करेंगे वो भी भुगतेंगे

तेहरान/वॉशिंगटन। अमेरिका का सबसे बड़ा दबाव उसकी डॉलर और बैंकिंग व्यवस्था पर है।

किसी कंपनी पर प्रतिबंध लगने के बाद उसके लिए अमेरिकी बैंकों और कंपनियों के साथ कारोबार करना मुश्किल हो सकता है। कुछ मामलों में अमेरिकी वित्तीय व्यवस्था तक उसकी पहुंच भी रोकी जा सकती है। यानी किसी भारतीय, चीनी, तुर्की या यूएई की कंपनी के सामने यह खतरा रहता है कि ईरान के साथ कारोबार जारी रखने पर उसे अमेरिकी बाजार और बैंकिंग व्यवस्था में नुकसान उठाना पड़ सकता है। इसी वजह से कई कंपनियां अमेरिकी प्रतिबंधों में फंसने के जोखिम से बचने के लिए ईरान के साथ कारोबार कम कर देती हैं या उससे दूरी बना लेती हैं। भारत पर क्या असर पड़ सकता है, 5 पॉइंट में समझें-ईरान के साथ आर्थिक संबंध खत्म करने के अमेरिकी प्रतिबंधों पर भारत पर असर पड़ सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भारत पर सीधे अमेरिकी प्रतिबंध लग जाएंगे।तेलः भारत ईरान से कच्चा तेल खरीदता है तो अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण भुगतान और खरीद मुश्किल हो सकती है। चाबहार पोर्टः ईरान के चाबहार बंदरगाह में भारत की रणनीतिक और कारोबारी रुचि है। अमेरिकी प्रतिबंधों का असर इस परियोजना पर पड़ सकता है। डॉलर में भुगतानः अगर ईरान से जुड़े भारतीय कारोबार पर अमेरिकी वित्तीय प्रतिबंध लगते हैं, तो डॉलर में लेन-देन करना मुश्किल हो सकता है। व्यापारः ईरान के साथ कारोबार करने वाली भारतीय कंपनियों को अमेरिकी नियमों का पालन करना पड़ सकता है। कूटनीतिक दबावः अमेरिका भारत से भी ईरान के साथ आर्थिक संबंध सीमित करने को कह सकता है। हालांकि, भारत अपने राष्ट्रीय हित और ऊर्जा जरूरतों के आधार पर फैसला करेगा।

नेतन्याहू बोले- ईरान ने बेटे की हत्या की साज़िश की,हमें मिली सिक्योरिटी ऐशोआराम के लिए नहीं, ट्रम्प के बेटे को भी मिल चुकी धमकी

फिलिस्तीन। यानी नेतन्याहू की सुरक्षा में व्यक्तिगत सुरक्षा,

घर की सुरक्षा, सुरक्षाकर्मियों और खास सुरक्षा इंतजामों की कई परतें हैं। हालांकि, नेतन्याहू की पत्नी और उनके बच्चों के साथ कितने सुरक्षाकर्मी रहते हैं, सुरक्षा का पूरा तरीका क्या है, इसकी जानकारी सार्वजनिक नहीं है। नेतन्याहू अगला चुनाव हारे, तब भी मिलेगी सुरक्षा- इजराइल में प्रधानमंत्री और उनके परिवार को सुरक्षा मिलती है। लेकिन नेतन्याहू परिवार की सुरक्षा को लेकर विवाद इसलिए बढ़ा, क्योंकि सारा नेतन्याहू और उनके दोनों वयस्क बेटों याइर व अवनर को लंबे समय तक सुरक्षा देने का फैसला हुआ। जुलाई 2026 में एक मंत्रीस्तरीय समिति ने नेतन्याहू और उनकी पत्नी सारा को जीवनभर सुरक्षा देने का फैसला किया। वहीं, दोनों बेटों को कम से कम 5 साल तक सुरक्षा देने का निर्णय लिया गया। अवनर इजराइल में रहते हैं। याइर पिछले कुछ सालों से ज्यादातर मियामी में रह रहे हैं। यह सुरक्षा उन्हें नेतन्याहू के आगामी चुनाव हारने की स्थिति में भी मिलेगी। ईरानी टीवी पर ट्रम्प के बेटे बैरन को धमकी मिल चुकी-इससे पहले ईरान के सरकारी टीवी पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बेटे बैरन को लेकर धमकी भरा कार्यक्रम दिखाया गया। तेहरान टाइम्स के मुताबिक करीब 3 मिनट के इस कार्यक्रम में बैरन तक पहुंचने और उनकी सुरक्षा का पता लगाने की कोशिशों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में बैरन के आसपास रहने वाले लोगों, उनकी सोशल मीडिया गतिविधियों और उनसे जुड़े ठिकानों को ग्राफिक्स के जरिए दिखाया गया। इसमें बताया गया कि उनकी सुरक्षा में लगी अमेरिकी सीक्रेट सर्विस तक पहुंचने की कोशिश की जा रही है। कार्यक्रम के आखिर में बैरन को निशाना बनाने से जुड़े 1 करोड़ डॉलर के इनाम का भी जिक्र किया गया। 2 साल पहले नेतन्याहू के निजी आवास पर हुआ था हमला-अक्टूबर 2024 में लेबनान से छोड़ा गया एक ड्रोन इजराइल के कैसरिया शहर में स्थित प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के निजी आवास तक पहुंच गया था। उस समय नेतन्याहू और उनकी पत्नी घर पर नहीं थे और घटना में कोई घायल नहीं हुआ था। बाद में हिज्बुल्लाह ने इस हमले की जिम्मेदारी ली थी। इजराइल ने इसे प्रधानमंत्री और उनके परिवार को निशाना बनाने की कोशिश बताया था। वहीं, नेतन्याहू ने आरोप लगाया था कि ईरान समर्थित समूह उनकी और उनकी पत्नी की हत्या करना चाहते थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ड्रोन घर से टकराया था, जिससे इमारत को कुछ नुकसान भी पहुंचा था। कुछ रिपोर्टों में कहा गया कि ड्रोन घर के एक बेडरूम की खिड़की के पास टकराया था।

जम्मू-कश्मीर के शोपियां में 3 आतंकी गिरफ्तार, हैंड ग्रेनेड और हिजबुल मुजाहिदीन के पोस्टर बरामद, पुलवामा में भी 2 सहयोगी पकडे गए

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के शोपियां जिले में सुरक्षाबलों ने

सोमवार रात चेकिंग के दौरान तीन संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया। उनके पास से 2 हैंड ग्रेनेड और हिजबुल मुजाहिदीन के पांच पोस्टर मिले हैं। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों की पहचान कुलगाम निवासी जुनैद अहमद डार, आमिर यूसुफ और जुनैद मुजफ्फर के रूप में हुई है। बरामद सामान को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी गई है। वहीं, पुलवामा में भी सुरक्षाबलों ने घरवान जंगल में सर्च ऑपरेशन के दौरान दो संदिग्ध आतंकी सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। उनकी पहचान लतीफ अहमद दीदाद और एजाज अहमद बजाद के रूप में हुई है। पुलवामा में पकड़ाए संदिग्धों से हथियार बरामद- पुलवामा में पकड़ाए संदिग्धों के पास से एक पिस्तौल, 12 कारतूस और हैंड ग्रेनेड मिले हैं। पुलिस ने आर्म्स एक्ट और यूएपीए की संबंधित धाराओं में केस दर्ज किया है। सुरक्षा एजेंसियां हथियारों के सोर्स और दोनों के आतंकी नेटवर्क से संबंधों की जांच कर रही हैं।सोपोर में सर्च ऑपरेशन के दौरान एके-47, ग्रेनेड और आईईडी बरामद-इससे पहले सोपोर के मंजसीर इलाके में सोमवार रात को सुरक्षाबलों ने जॉइंट सर्च ऑपरेशन में हथियार बरामद किए हैं। अधिकारियों के मुताबिक, एक खाली पड़े घर से एके-47 राइफल, 3 मैगजीन, 72 कारतूस, 4 हैंड ग्रेनेड और एक आईईडी बरामद किया गया। मामले की जांच जारी है। 7 अप्रैलः 16 साल से फरार पाकिस्तानी आतंकी गिरफ्तारःलश्कर का मेंबर था-जम्मू-कश्मीर पुलिस ने लश्कर-ए-तैयबा टेरर मॉड्यूल से जुड़े कुल 5 लोगों को अरेस्ट किया था। इनमें से दो पाकिस्तानी आतंकी थे और बाकी उनके मददगार थे। एक आतंकी की पहचान अब्दुल्ला उर्फ अबू हुरेरा के रूप में हुई। अब्दुल्ला 16 साल से फरार था। वहीं, दूसरा पाकिस्तानी आतंकी उस्मान उर्फ खुबैब था।

राहुल के निशाने पर सिर्फ हिंदू क्यों,अल्पसंख्यक महिलाओं की बात क्यों नहीं करते-किरेन रिजिजू

नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने सोमवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के 'पितृसत्ता तोड़ो' बयान पर सवाल उठाए। उन्होंने पूछा कि कांग्रेस पार्टी हिंदू परंपराओं को ही निशाना क्यों बनाती है और अल्पसंख्यक महिलाओं की स्थिति पर चुप क्यों रहती है। रिजिजू ने सोशल मीडिया एक्स पर कांग्रेस के सामाजिक सुधार के तरीके को चुनिंदा बताया। उन्होंने कहा कि अगर पार्टी महिलाओं के साथ खड़ी है, तो उसे हर समुदाय की हर महिला के साथ खड़ा होना चाहिए। 22 अगस्तः राहुल बोले थे- मनुस्मृति में महिलाएं परिवार की संपत्ति-राहुल गांधी ने शनिवार को पुणे में 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम में महिलाओं की आजादी और पितृसत्ता के मुद्दे पर एक घंटा 16 मिनट बात की थी। उन्होंने कहा, 'महिला की पहचान उसके पिता, पति या बेटे से नहीं होती, बल्कि उसकी अपनी पहचान होती है।' मनुस्मृति का जिक्र करते हुए महिलाओं को पिता, पति और बच्चों की संपत्ति मानने वाली सोच को शर्मनाक बताया।राहुल ने कहा कि महिलाओं के खिलाफ 3 तरह से हिंसा होती है। पहली- पैदा होते ही हत्या, दूसरी- शारीरिक अत्याचार, तीसरी- आर्थिक बंदिशें। उन्होंने कहा कि महिलाओं को शिक्षा, नौकरी, संपत्ति और अपने फैसले लेने की पूरी आजादी मिलनी चाहिए। राहुल ने छात्राओं से कहा कि वे डरें नहीं, अपनी आवाज बुलंद करें और अपने लिए लड़ें। इस दौरान राहुल ने 5 लड़कियों से बातचीत की। राहुल ने कहा थाः- लड़कियों की शादी के कारण पढ़ाई छूट जाती है, 5 बड़ी बातें:-1. महिलाओं की पहचान पिता, पति या बेटे से नहींः राहुल ने कहा कि महिलाओं का पिता, पति और बेटे से रिश्ता जरूर है, लेकिन उनकी पहचान उनसे नहीं है। महिलाएं किसी पर आश्रित नहीं हैं और उन्हें स्वतंत्र पहचान के साथ जीना चाहिए। 2. महिलाओं पर हिंसा, अपमान, समय और नियंत्रणः राहुल ने कहा कि महिलाओं को नियंत्रित करने के चार तरीके हैं- हिंसा, अपमान/अनादर, समय और कंट्रोल। उन्होंने कहा कि महिलाओं को देर तक बाहर रहने, काम करने और अपनी पसंद से जीवन जीने पर रोक का सामना करना पड़ता है। 3. शिक्षा और रोजगार में भेदभावः राहुल ने सवाल उठाया कि यह सोच कहां से आती है जिसमें लड़के को पढ़ाने और लड़की को पढ़ाई या नौकरी से रोकने की मानसिकता होती है।

पंजाब में थाईलैंड की युवती नशे में फंसी, लुधियाना के पार्लर में काम करते चिट्टे की लत लगी

लुधियाना। लुधियाना में नशे की लत ने थाईलैंड की एक युवती की जिंदगी इस कदर बदल दी कि वह सड़क पर भटकने और खुदकुशी की कोशिश करने तक पहुंच गई। करीब डेढ़-दो साल पहले लुधियाना आई थी, यहां मसाज पार्लर में काम किया। धीरे-धीरे उसे आइस (चिट्टा), भांग और शराब की लत लग गई। नशे के कारण उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई और वह कई बार सड़कों पर दौड़ती और लोगों से झगड़ती रही। होटल से नौकरी जाने के बाद वह सड़क पर रहने को मजबूर हो गई। युवती वह बार-बार थाईलैंड में अपनी 13 साल की बेटी होने की बात कह रही है। सोशल मीडिया पर उसकी वीडियो सामने आने के बाद लुधियाना के जसकीरत सिंह ने उसकी मदद की और मनुखता दी सेवा सोसायटी से संपर्क किया। फिलहाल युवती को सुपनियां दे घर में रखा गया है, जहां उसका इलाज चल रहा है। युवती की कहानी सिलसिलेवार जानिए- 13 साल की एक बेटी हैः युवती के पास जो पासपोर्ट है, उसके पर उसका नाम चैमाईपॉर्न येनयिंग है। उसका जन्म अगस्त 1991 में हुआ है और वह थाईलैंड के बुरी राम इलाके की रहने वाली है। युवती ने कहा कि थाईलैंड में उसकी तेरह साल की एक बेटी है। वो बार-बार कह रही है कि उसकी बेटी थाईलैंड में है। हालांकि वो एक दिन पहले बेटा होने की बात कर रही थी। डेढ़-दो साल पहले लुधियाना आईः लुधियाना निवासी जसकीरत सिंह ने बताया कि वो येनयिंग को एक साल पहले से जानते हैं। वो करीब डेढ़-दो साल पहले लुधियाना आई और यहां

पर मसाज पार्लर में काम करती थी। लुधियाना आने से पहले वो दिल्ली, मुंबई जैसे शहरों में भी मसाज पार्लरों में काम कर चुकी है। लुधियाना में लगी नशे की लतः जसकीरत सिंह ने बताया कि जब वो उसे एक साल पहले मिला था तब ठीक थी। वो धीरे धीरे नशा करने लगी। इसी दौरान उसे आइस (चिट्टा), भांग और शराब जैसे नशों की भारी लत लग गई। सुसाइड की कोशिश कीः जसकीरत सिंह ने बताया कि नशे ने उसका दिमागी संतुलन इस कदर बिगाड़ दिया कि उसे अपनी सुध-बुध नहीं रही और उसने एक होटल की छत से कूदने की कोशिश की। इसके अलावा वो सड़कों पर दौड़ती रहती थी और हर किसी से लड़ने लगी। होटल वालों ने निकालाः-जसकीरत सिंह ने बताया कि वो जिस होटल में काम करती थी, उन्होंने भी उसे निकाल दिया। उसने जब सुसाइड करने की कोशिश की तो होटल वाले ने उसे निकाल दिया। उसके बाद उसे दूसरे होटल में नौकरी दिलाई वहां से भी उसे निकाल दिया। वीडियो देखकर युवती से मिलेः जसकीरत सिंह ने बताया कि उसने जब सोशल मीडिया युवती की वीडियो देखी तो उसने पहले अपने दोस्त को भेजा और फिर मौके पर गया। उन्होंने बताया कि लड़की ने कहा कि उसे नौकरी से निकाल दिया है।

होटल में कमरा दिलायाः जसकीरत सिंह ने बताया कि उन्होंने रात को युवती को एक होटल में कमरा दिलाया और सुबह होटल ने उसे चेकआउट करके बाहर निकाला। रात को जब उसे होटल में रखा उसी समय मनुखता दी सेवा के गुरप्रीत सिंह मिंटू को फोन किया। उन्होंने सुबह आने को कहा। उन्होंने कि सुबह जब होटल से बाहर निकली तो मनुखता दी सेवा के लोग उसे अपने साथ ले गए। परिवार को तलाश रही संस्था- आश्रम में शुरू हुआ इलाजः संस्था के सेवादार गुरप्रीत सिंह मिंटू उसे अपने आश्रम 'सुपनियां दा घर' (सपनों का घर) ले आए हैं।

फिलहाल वहां डॉक्टरों और सेवादारों की देखरेख मसका इलाज शुरू कर दिया गया है, ताकि उसे मानसिक रूप से स्थिर किया जा सके। अपनों से मिलाने की मुहिमः संस्था ने दस्तावेजों के आधार पर थाईलैंड स्थित उसके परिवार की तलाश शुरू कर दी है ताकि ठीक होने पर उसे सुरक्षित स्वदेश भेजा जा सके। लोगों से भावुक अपीलः मनुखता दी सेवा परिवार ने आम जनता से अपील की है कि अगर थाईलैंड से जुड़ा कोई भी व्यक्ति इस वीडियो को देख रहा है, तो इसे ज्यादा से ज्यादा शेयर करे ताकि इस भटकी हुई बेटी को उसके अपनों से दोबारा मिलाया जा सके।

ईरान की करेंसी रियाल 20 लाख प्रति डॉलर पर पहुंची,यह अब तक का सबसे निचला स्तर

तेहरान। ईरानी करेंसी रियाल डॉलर के मुकाबले अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। इसकी वजह अमेरिका के साथ बीते करीब 6 महीने से जारी जंग और उसपर लगाए गए कड़े आर्थिक प्रतिबंध हैं। ईरान की करेंसी रियाल अनरेगुलेटेड मार्केट में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले अपने अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। करेंसी ट्रैकिंग वेबसाइट बॉनबास्ट के

आंकड़ों के मुताबिक, सोमवार को 1 अमेरिकी डॉलर की कीमत 20 लाख ईरानी रियाल हो गई। सवाल 2: रियाल में अचानक इतनी बड़ी गिरावट क्यों आई? जवाबः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पिछले हफ्ते ईरान के खिलाफ एक बड़ी आर्थिक कार्रवाई का ऐलान किया था। इस घोषणा के बाद से रियाल में करीब 4.5फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। सवाल 3: अमेरिका ईरान के खिलाफ क्या कदम उठा रहा है? जवाब : अमेरिका का मकसद ईरान को आर्थिक रूप से अलग-थलग करना है। इसके लिए अमेरिका ईरान के बचे हुए चुनिंदा कारोबारी पार्टनर्स को चेतावनी दे रहा है, फारस की खाड़ी में उसके मुख्य बंदरगाहों की नाकाबंदी कर रहा है और विदेशी मुद्रा का मुख्य जरिया माने जाने वाले तेल निर्यात पर पूरी तरह रोक लगाने की कोशिश कर रहा है। सवाल 4: ईरान के तेल कारोबार और बैंकिंग पर इसका क्या असर हुआ है? जवाब : ईरान के सेंट्रल बैंक के गवर्नर अब्दोलनासर हेम्मती के मुताबिक, देश का कच्चा तेल निर्यात 'लगभग पूरी तरह बंद' हो गया है। इसके अलावा, ईरान के सबसे बड़े कारोबारी पार्टनर्स में शामिल संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने भी अगले आदेश तक ईरान के साथ सभी वित्तीय लेन-देन रोक दिए हैं। सवाल 5: अमेरिकी प्रशासन ने इस कार्रवाई पर क्या बयान दिया है? जवाब : अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने फाइनेंशियल टाइम्स में लिखा, 'हमारा मकसद उन सभी आर्थिक लाइफलाइनों को काटना है जो इस व्यवस्था को चला रही हैं, ताकि तेहरान पूरी तरह अलग-थलग पड़ जाए।' उन्होंने चेतावनी दी कि आर्थिक मोर्चे पर '3-0' की शुरुआत हो चुकी है। सवाल 6: ईरान की घरेलू मीडिया और विश्लेषकों का इस गिरावट पर क्या कहना है? जवाब : ईरान के प्रमुख बिजनेस अखबार 'दोनिया-ए एकतेसाद' के अनुसार, विदेशी मुद्रा ट्रांसफर में आ रही रुकावटों और गिरते निर्यात के कारण यह संकट गहराया है। इसके साथ ही देश में आयात की बढ़ती मांग और महंगाई की आशंकाओं ने मिलकर करेंसी को कमजोर किया है। सवाल 7: चीन का इस पूरे मामले पर क्या रुख है? जवाबः ईरान से सबसे ज्यादा तेल खरीदने वाले देश चीन ने कहा है कि अमेरिका का आर्थिक दबाव काम नहीं करेगा। चीन ने युद्ध का कूटनीतिक समाधान निकालने की अपील की है। सवाल 8: अमेरिकी दबाव का मुकाबला करने के लिए ईरान की क्या योजना है? जवाबः ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि उनका देश अमेरिकी दबाव का मुकाबला करने के लिए चीन समर्थक साझेदार देशों के साथ व्यापार को दोगुना करेगा। सवाल 9: रियाल के टूटने से आम जनता पर क्या असर होगा?जवाबः डॉलर के मुकाबले किसी भी करेंसी के कमजोर होने से रोजमर्रा की जरूरी चीजों जैसी दवाइयां, खाना तेजी से महंगा होता है। इससे हाइपरइन्फ्लेशन का खतरा खड़ा हो जाता है।

बॉयफ्रेंड बचपन के दोस्त से इनसिक्योर है,कहता है, दोस्ती तोड़ लो, मुझे दोस्ती और प्यार दोनों चाहिए, क्या करूं

नोएडा। सवाल- मेरी उम्र 23 साल है। मैं एक रिलेशनशिप में हूं। हमने साथ में अच्छा समय बिताया है, लेकिन पिछले कुछ समय से सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। प्रॉब्लम ये है कि मेरा पार्टनर मेरे एक बचपन के दोस्त को लेकर बहुत इनसिक्योर फील करता है। वह मुझसे बार-बार कहता है कि मुझे उसमें और अपने दोस्त में से किसी एक को चुनना होगा। मेरे लिए यह स्थिति बहुत मुश्किल है। मैं न तो अपने पार्टनर को खोना चाहती हूं और न ही अपने बचपन के दोस्त को छोड़ना चाहती हूं। मैं उसे कैसे समझाऊं और इस सिचुएशन को कैसे संभालूं? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। जवाब- सबसे पहले सवाल पूछने के लिए आपका शुक्रिया। यह एक कॉमन सिचुएशन है। आपके सवाल से कई लोगों को अपनी सिचुएशन समझने और हैंडल करने में मदद मिलेगी। चलिए अब इसे समझते हैं और उसके सॉल्यूशन पर बात करते हैं। ट्रस्ट और इनसिक्योरिटी का सवाल- यह सिर्फ दोस्त और पार्टनर के बीच चुनाव का सवाल नहीं है, बल्कि ट्रस्ट और इनसिक्योरिटी का सवाल है।अगर पार्टनर कहता है कि 'मुझे या दोस्त' में से किसी एक को चुनो तो यह अल्टीमेटम जैसा है। इससे मन में 'द्वंद' (दोहरे विचार) पैदा हो सकते हैं। इसलिए इसे हैंडल करने में आपको मुश्किल हो रही है। इस स्थिति में मन में क्या सवाल आते हैं, यह इनसिक्योरिटी है या कंट्रोल? पार्टनर का यह कहना कि 'किसी एक को चुनो' तो एक तरह का इमोशनल कंट्रोल या गहरे डर का संकेत है। ऐसा व्यवहार अक्सर उन लोगों में दिखता है, जिन्हें 'छोड़ दिए जाने का डर' होता है। पार्टनर ऐसा क्यों बिहेव कर रहा है, हेल्दी रिश्ते की क्या पहचान है? एक मेच्योर रिलेशनशिप में 'मैं' से ज्यादा 'हम' मायने रखता है। इसमें दोनों एक-दूसरे की अलग पहचान (व्यक्तित्व) को स्वीकार करते हैं। वे एक-दूसरे को बदलने की कोशिश नहीं करते, बल्कि समझते हैं। साथ रहते हुए भी अपनी सोच और पसंद को महत्व देते हैं। ऐसा रिश्ता भरोसा, बराबरी और समझ पर टिका होता है। प्यार के नाम पर पार्टनर का कंट्रोलिंग बिहेवियर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। कुछ संकेत स्पष्ट तौर पर 'रेड फ्लैग' होते हैं। इस स्थिति में सबसे जरूरी संतुलन और क्लैरिटी रखना है। पार्टनर की इनसिक्योरिटी को समझना जरूरी है, लेकिन किसी भी रिश्ते में 'दोस्ती और प्यार में एक चुनने' का दबाव हेल्दी नहीं माना जाता। बेहतर होगा कि आप शांति से खुलकर बात करें। उन्हें भरोसा दिलाएं, साथ ही यह भी स्पष्ट करें कि आपकी दोस्ती आपकी जिंदगी का हिस्सा है। इसके कुछ पॉइंट्स डिटेल में समझें-पार्टनर को समझाएं कि दोस्त आपके जीवन का अहम हिस्सा है, लेकिन उसकी (पार्टनर) जगह अलग और बेहद खास है। कई बार पार्टनर को लगता है कि उसे 'इग्नोर' किया जा रहा है। उसके साथ क्वालिटी टाइम बिताएं और यह महसूस कराएं कि आपके जीवन में उसकी खास अहमियत है। दोस्त और अपने बीच कुछ सीमाएं तय करें। जैसे, पार्टनर के सामने घंटों दोस्त से बात न करें या पार्टनर के साथ डेट के वक्त दोस्त के कॉल न उठाएं। इससे पार्टनर को सुरक्षित महसूस होगा। उससे पूछें, 'तुम्हें डर किस बात का है?' क्या उसे दोस्त के व्यवहार से दिक्कत है या सिर्फ इस बात से कि वह एक लड़का है? अगर इसके बाद भी उसमें कोई सुधार नहीं दिख रहा है तो आपको रिश्ते के बारे में अच्छे से सोचने की जरूरत है। रिश्ते में न करें ये कॉम्प्रोमाइज-रिलेशनशिप में कुछ कॉम्प्रोमाइज होते हैं। आप अपने-सोने जागने का समय बदल सकते हैं। अपनी हॉबीज बदल सकते हैं, लेकिन ये तीन चीजें कॉम्प्रोमाइज नहीं करनी चाहिए- सेल्फ रिस्पेक्ट, पर्सनल स्पेस,ह्यूमन डिग्निटी (मानवीय गरिमा) कोई फैसला लेने से खुद से पूछें सवाल-ऐसी स्थिति में भावनाओं में बहकर तुरंत निर्णय लेना सही नहीं होता। थोड़ा ठहरकर अपनी जरूरतों, सीमाओं और रिश्ते की वास्तविक स्थिति को समझना जरूरी है। खुद से सही सवाल पूछने पर यह स्पष्ट होगा कि आपके लिए क्या सही है। हर रिश्ते में कुछ समझौते होते हैं, लेकिन समझौते और 'आत्मसमर्पण' में फर्क होता है। अगर कोई आपसे बरसों पुरानी दोस्ती खत्म करने को कह रहा है तो वह आपके व्यक्तित्व को कंट्रोल करना चाहता है। निष्कर्ष-रिश्ते में आपसी समझ और 'स्पेस' बहुत जरूरी है। अपने पार्टनर को विश्वास दिलाएं, लेकिन अपनी डिग्निटी (गरिमा) की कीमत पर नहीं। याद रखें, जो व्यक्ति आपको सच में प्यार करता है, वह आपको कभी भी ऐसी स्थिति में नहीं डालेगा, जहां आपको प्यार और दोस्ती के बीच चुनाव करना पड़े।

बारिश में फट रही एड़ियां-नमी, पानी, गंदगी है कारण,जानें कैसे सुरक्षित रखें, मानसून फुट केयर रूटीन के 8 स्टेप्स

नयी दिल्ली। बारिश का मौसम आते ही ज्यादातर लोग सर्दी-जुकाम, वायरल या डेंगू जैसी बीमारियों से बचने की बात करते हैं। लेकिन इसी मौसम में एक और समस्या परेशान करती है- एड़ियों का फटना। लोगों को लगता है कि एड़ियां सिर्फ सर्दियों में फटती हैं, लेकिन यह सच नहीं है। मानसून में लगातार गीलापन, गंदा पानी, खुले फुटवियर और पैरों की ठीक से देखभाल न करने की वजह से भी एड़ियां फट सकती हैं। अगर समय रहते ध्यान न दिया जाए तो छोटी-सी दरार भी संक्रमण की वजह भी बन सकती है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में जानेंगे कि मानसून में एड़ियां ज्यादा क्यों फटती हैं? किन लोगों को ज्यादा खतरा रहता है? फटी एड़ियों से बचने के लिए क्या करें? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. विजय सिंघल, सीनियर कंसल्टेंट, डर्मेटोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- क्या मानसून में एड़ियां ज्यादा फटती हैं? जवाब- हां, ऐसा होता है। इस मौसम में पैर बार-बार गीले होते हैं। फिर सूखते हैं। बार-बार ऐसा होने के कारण त्वचा की बाहरी सुरक्षा परत (स्किन बैरियर) कमजोर होने लगती है। जब त्वचा अपनी नमी बनाए नहीं रख पाती तो एड़ियों की मोटी त्वचा सख्त होकर फटने लगती है। मानसून में बार-बार पैर गीले होने से त्वचा की सुरक्षा परत कमजोर हो सकती है। अगर एड़ियां फटने के साथ खुजली, बदबू या दर्द भी हो तो तुरंत फंगल इन्फेक्शन की जांच करानी चाहिए। सवाल- मानसून में ऐसा क्यों होता है? जवाब- मानसून में एड़ियां ज्यादा फटने के पीछे कई कारण है। बार-बार पैर गीले होना। गीले जूते पहने रहना। त्वचा की नमी कम होना। खुले फुटवियर पहनना। कीचड़ गंदगी का संपर्क। पैरों की सफाई न करना। मॉइस्चराइजर न लगाना। फंगल इन्फेक्शन का रिस्क बढना। सवाल- क्या बारिश के पानी से एड़ियां फटती हैं? जवाब- सीधे तौर पर एड़ियां बारिश के पानी से नहीं फटतीं, लेकिन उससे जुड़ी परिस्थितियां जरूर जिम्मेदार होती हैं। जैसेकि- देर तक गीले जूते पहनना। कीचड़ और गंदे पानी में चलना। घर आकर पैर न धोना। पैरों को ठीक से सुखाए बिना मोजे पहन लेना। बार-बार भीगना और सूखना। इन सभी वजहों से त्वचा कमजोर होने लगती है। सवाल- क्या फंगल इन्फेक्शन की वजह से भी एड़ियां फट सकती हैं? जवाब- हां। मानसून में पैरों में फंगल इन्फेक्शन का खतरा काफी बढ़ जाता है। अगर फटी एड़ियों के साथ नीचे दिए ये लक्षण भी दिखें तो

सिर्फ ड्राई स्किन समझने की गलती न करें। पैरों में फंगल इन्फेक्शन के संकेतः-एड़ियों में दरार, खुजली, लालिमा, सफेद पपड़ी, खराब स्मेल,जलन, उंगलियों के बीच सफेद त्वचा, त्वचा का उखड़ना। फटी एड़ियों का रिस्क इन्हें ज्यादाः- जिन्हें डायबिटीज है। जो ओबीज मोटे हैं। जिन्हें एक्जिमा है। जिन्हें सोरायसिस है। जिन्हें हाइपोथायरॉइडिज्म है। जिनकी स्किन ड्राई है। जो देर तक खड़े रहते हैं। जो खुले फुटवियर पहनते हैं। सवाल- अगर एड़ियां फट गई हैं तो क्या करें? जवाब- अगर एड़ियों में हल्की दरारें हैं और खून या पस नहीं निकल रहा है, तो घर पर देखभाल करके भी उन्हें ठीक किया जा सकता है। सबसे जरूरी है कि एड़ियों की नमी बनाए रखें और उन्हें संक्रमण से बचाएं। एड़ियां फट जाएं तो क्या करें? रोज गुनगुने पानी से पैर धोएं। पैरों को अच्छी तरह सुखाएं। एड़ियों पर मॉइस्चराइजर लगाएं। सोने से पहले फुट क्रीम लगाएं। रात में कॉटन मोजे पहनकर सोएं। बंद आरामदायक फुटवियर पहनें। दिन भर खूब पानी पिए। फटी त्वचा को नोचें नहीं। सवाल- क्या एड़ियों में मॉइस्चराइजर लगाना जरूरी है? जवाब- हां। फटी एड़ियों के इलाज में मॉइस्चराइजर सबसे अहम भूमिका निभाता है। एड़ी की त्वचा शरीर के अन्य हिस्सों की तुलना में मोटी होती है। इसलिए साधारण लोशन की बजाय फुट क्रीम ज्यादा असरदार होती है। ऐसी क्रीम बेहतर मानी जाती हैं, जिसमें इनमें से कोई तत्व होः- यूरिया, लैक्टिक एसिड, ग्लिसरीन, पेट्रोलियम जेली, सैलिसिलिक एसिड (डॉक्टर की सलाह से) ये तत्व त्वचा को मुलायम बनाते हैं और मृत त्वचा को धीरे-धीरे हटाने में मदद करते हैं। सवाल- क्या प्यूमिक स्टोन से एड़ियां साफ करनी चाहिए? जवाब- हां, लेकिन सही तरीके से। अगर एड़ियों में सिर्फ मोटी और सूखी त्वचा है तो नहाने के बाद प्यूमिक स्टोन से हल्के हाथों से रगड़ सकते हैं। ध्यान रखें कि-बहुत जोर से न रगड़ें। रोज इस्तेमाल न करें। खून निकल रहा हो तो बिल्कुल इस्तेमाल न करें। डायबिटीज के मरीज डॉक्टर की सलाह के बिना यूज न करें। सवाल- क्या फटी एड़ियों में घरेलू नुस्खे भी कारगर होते हैं? जवाब- कुछ घरेलू उपाय त्वचा को मुलायम रखने में मदद कर सकते हैं, लेकिन ये गहरी दरारों या संक्रमण का इलाज नहीं हैं। सीमित फायदा देने वाले कुछ घरेलू उपाय इस प्रकार हैं- नारियल तेल, पेट्रोलियम जेली, एलोवेरा जेल, ग्लिसरीन, सवाल- कौन सी चीजें फटी एड़ियों पर कभी नहीं लगानी चाहिए? जवाब- कुछ चीजें कभी न लगाएं। इनसे त्वचा और खराब हो सकती है, जैसेकि- नींबू (सीधे फटी एड़ियों पर लगाना) बेकिंग सोडा, टूथपेस्ट, गरम मोम (वैक्स) तेज ब्लेड से मृत त्वचा को काटनाः- सवाल- क्या पैरों को ज्यादा देर तक पानी में भिगोना सही है? जवाब- नहीं। बहुत देर तक पैर पानी में रखने से त्वचा ज्यादा ड्राय हो सकती है। बेहतर है कि पैरों को- 5-10 मिनट तक गुनगुने पानी में रखें। उसके बाद अच्छी तरह सुखाएं। तुरंत फुट क्रीम लगाएं। सवाल- मानसून में पैरों की डेली केयर कैसे करें? जवाब- अगर रोज थोड़ी-सी सावधानी बरती जाए तो मानसून में भी एड़ियों को फटने से बचाया जा सकता है। उंगलियों को अच्छे से सुखाएं। रोज मॉइस्चराइजर लगाएं। रोज साफ मोजे पहनें। गीले मोजे तुरंत बदलें। एकदम सूखे जूते ही पहनें। बहुत टाइट फुटवियर न पहनें। सवाल- कौन-सी गलतियां सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती हैं? जवाब- अक्सर लोग अनजाने में ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जिनसे एड़ियां और ज्यादा फट जाती हैं, जैसेकि- गीले जूते पूरे दिन पहनना। गंदे मोजे दोबारा पहनना। फटी त्वचा को खींचकर निकालना। ब्लेड से मृत त्वचा काटना। मॉइस्चराइजर न लगाना। दर्द होने पर भी अनदेखी करना। खुले घाव में घरेलू नुस्खे लगाना। सवाल- कब डॉक्टर से मिलना चाहिए? जवाब- अगर एड़ियों में सिर्फ सूखापन है तो घर पर देखभाल काफी होती है। लेकिन इन स्थितियों में डॉक्टर को दिखाना जरूरी है-पैरों के ये संकेत इग्नोर न करें:-गहरी दरार पड़ना। खून निकलना। पस या पानी आना। तेज दर्द होना। चलने में दिक्कत होना। तेज खुजली होना। खराब स्मेल आता। हफ्तों तक सुधार न होना। डायबिटीज के मरीजों में घाव होना।सवाल- मानसून में कैसा फुटवियर पहनना चाहिए? जवाब- बारिश के मौसम में सही फुटवियर चुनना भी एड़ियों की सुरक्षा के लिए जरूरी है। ऐसा फुटवियर पहनें, जिसमें पैर लंबे समय तक गीले न रहें और फिसलने का खतरा भी कम हो। क्या पहनें ? अच्छी ग्रिप वाले। जल्दी सूखने वाले। सही फिटिंग वाले। सांस लेने वाले यानी खुले। क्या न पहनें ? देर से सूखने वाले। बहुत टाइट और बंद। जिनमें हवा न जाए। जिनमें पानी घुस जाए। फटे या घिसे चप्पल। सवाल- क्या फटी एड़ियां अपने आप ठीक हो जाती हैं? जवाब- अगर दरारें हल्की हैं और संक्रमण नहीं है, तो नियमित देखभाल से कुछ दिनों या हफ्तों में सुधार हो सकता है। लेकिन अगर दरारें गहरी हों, दर्द या खून आने लगे या संक्रमण हो जाए, तो सिर्फ घरेलू उपायों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। सवाल- डायबिटीज के मरीजों को क्या अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए? जवाब- डायबिटीज में पैरों तक रक्त प्रवाह और नसों की संवेदना प्रभावित हो सकती है। इसलिए छोटी-सी दरार भी गंभीर संक्रमण का रूप ले सकती है। ऐसे लोगों को चाहिए कि- रोज पैरों की जांच करें। नंगे पैर न चलें। मामूली घाव को भी नजरअंदाज न करें।

बहुत लोनली फील करती हूं, ये बात कोई समझ नहीं पाता,अब कोई रखने वाला भी नहीं रहा,क्या करूं?

नयी दिल्ली। विषय पर प्रकाश डालेंगे एक्सपर्ट एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी और समझेंगे सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मेरी उम्र 23 साल है। मैं रांची में रहती हूं और होटल मैनेजमेंट का कोर्स कर रही हूं। हमारी जॉइंट फैमिली है। कॉलेज में भी ढेर सारे दोस्त हैं। फिर भी मुझे हर वक्त एक अजीब सा अकेलापन महसूस होता है। हर वक्त मेरे चारों ओर लोग होते हैं और मैं उन सबसे भागकर अकेली होना चाहती हूं। मुझे लगता है कि कोई मेरा अपना नहीं है। चाहे दोस्त हों या फैमिली, कोई मुझे समझता नहीं है। मैं बाहर से खुश दिखती हूं, लेकिन अंदर-ही-अंदर दुखी रहती हूं। क्या सब लोग ऐसा ही फील करते हैं? क्या ये फीलिंग नॉर्मल है या मेरे अंदर ही कोई प्रॉब्लम है।जवाब-आज मेंटल हेल्थ डिसकशन का एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। पहली नजर में यह साधारण 'अकेलेपन' जैसा लगता है, लेकिन मनोविज्ञान इसे कहीं अधिक गहराई से समझता है। इमोशनल लोनलीनेस क्या है ? आधुनिक मनोविज्ञान में इस विषय पर रॉबर्ट वाइस का काम आधारभूत माना जाता है। उन्होंने 1973 में यह बताया कि लोनलीनेस कोई एक अनुभव नहीं है। इसके अलग-अलग प्रकार होते हैं।हरव्यक्ति के लिए यह अनुभव अलग हो सकता है।वाइस के अनुसार, अकेलेपन का एक रूप वह है, जब व्यक्ति के पास कोई ऐसा घनिष्ठ, भरोसेमंद और भावनात्मक रूप से सुरक्षित रिश्ता नहीं होता, जिसमें वह खुलकर अपनी बात कह सके। सामाजिक रूप से सक्रिय भी रहता है। उदाहरण के तौर पर, कोई व्यक्ति संयुक्त परिवार में रह सकता है, कॉलेज में उसके कई दोस्त हो सकते हैं और वह अक्सर लोगों से घिरा रह सकता है। इसके बावजूद यदि उसके भीतर लगातार खालीपन, दूरी या 'कोई मुझे समझता नहीं' जैसी भावना बनी रहती है, तो यह इमोशनल लोनलीनेस का संकेत है। सोशल लोनलीनेस में व्यक्ति की मुख्य शिकायत होती है-'मेरे पास लोग नहीं हैं।' इसके विपरीत, इमोशनल लोनलीनेस में व्यक्ति कहता है-'लोग तो हैं, लेकिन कोई सच में मेरा नहीं है।' यह अंतर बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे समस्या की जड़ साफ होती है। यहां चुनौती

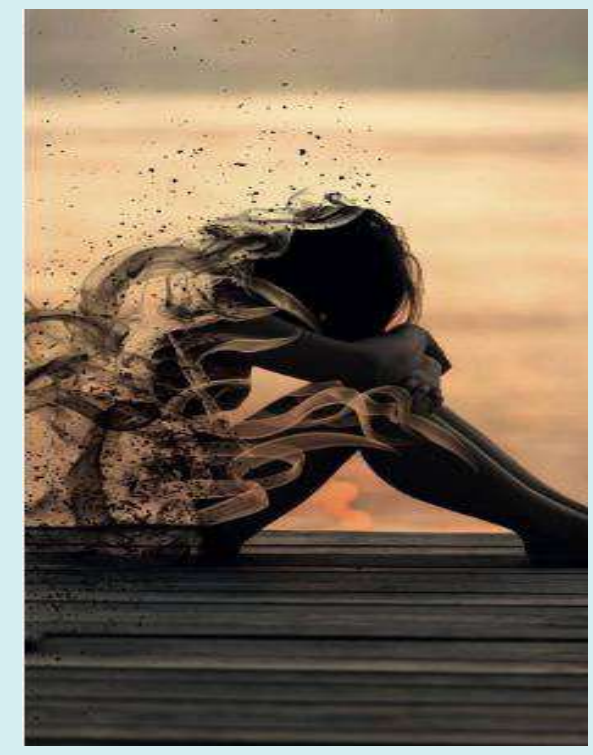

इसे ही इमोशनल लोनलीनेस कहते हैं। दूसरा रूप वह है, जब व्यक्ति के पास व्यापक सामाजिक दायरा, जैसे परिवार, दोस्त, परिचित या कम्युनिटी नहीं होती है। इसे सोशल लोनलीनेस कहते हैं। भीड़ में अकेलापन-आगे चलकर न्यूजीलैंड के दो प्रसिद्ध समाजशास्त्रियों जेनी डे योंग हीरफेल्ड और थियो वान टिलबुर्ख ने इस अंतर को और साफ किया और इसे मापने के लिए कई वैज्ञानिक उपकरण विकसित किए। आज इमोशनल लोनलीनेस सिर्फ 'अकेले रहना' नहीं है। इमोशनल लोनलीनेस का मतलब है, लोगों से घिरे होने और भीड़ में रहने के बावजूद यह महसूस करना कि-मुझे कोई समझता नहीं। मुझे कोई सुनता नहीं। मुझे कोई प्यार नहीं करता। इसी संदर्भ में इमोशनल लोनलीनेस और सोशल लोनलीनेस के बीच अंतर समझना जरूरी है। कई बार व्यक्ति के पास परिवार होता है, दोस्त होते हैं, और वह लोगों की संख्या नहीं, बल्कि रिश्तों की गुणवत्ता है। ऐसे मामलों में व्यक्ति अक्सर यह भी महसूस करता है कि सामाजिक संपर्क उसे सुकून देने की बजाय थका देता है। वह लोगों के बीच रहते हुए भी भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं पाता। 'कोई मुझे समझता नहीं,' जैसी सोच इस बात की ओर इशारा करती है कि उसके अनुभवों को समझा और स्वीकारा नहीं जा रहा, जिसे मनोविज्ञान में 'इमोशनल एट्यूनमेंट' की कमी कहते हैं। कोई ऐसा जो हमें सुने, समझे- इस प्रकार, इमोशनल लोनलीनेस हमें यह समझने में मदद करती है कि केवल लोगों से घिरे रहना काफी नहीं है। मानसिक संतुलन और संतुष्टि के लिए जरूरी है कि हमारे जीवन में ऐसे रिश्ते हों, जहां हम बिना झिझक अपने असली भाव व्यक्त कर सकें और खुद को सच में समझा हुआ महसूस करें। करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। आपको इन सवालों को ध्यान से पढ़ना है और 0 से 3 के स्केल पर इसे रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग हर दिन' है तो 3 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। अगर आपका टोटल स्कोर 0 से 7 के बीच है तो आप में बहुत मामूली पैटर्न है। ये नॉर्मल है लेकिन अगर आपका स्कोर 24 से 30 के बीच है तो यह बहुत स्ट्रॉन्ग इमोशनल लोनलीनेस का संकेत है। ऐसे में प्रोफेशनल हेल्प के बारे में सोचना चाहिए। कहीं ये लो मूड/डिप्रेशन तो नहीं- इस एसेसमेंट टेस्ट के अलावा यह देखना भी जरूरी है कि कहीं ये लो मूड/डिप्रेशन का केस तो नहीं है। इसलिए खुद से ये दो सवाल भी पूछें- क्या अकेलेपन की यह फीलिंग दो हफ्तों से भी ज्यादा समय से लगातार बनी हुई है? क्या इस फीलिंग के साथ ये चीजें भी प्रभावित हो रही हैं- नींद,भूख,पढ़ाई, एनर्जी लेवल,क्या इसके अलावा ये भी हो रहा है- बीच-बीच में खूब रोना आ रहा है। निराशा महसूस हो रही है। खुद को नुकसान पहुंचाने का ख्याल आ रहा है। यदि आपका उत्तर 'हां' है, तो यहां पर लो मूड/डिप्रेशन को भी एक बार प्रोफेशनल लेंस से जरूर देखना चाहिए। हेल्थ एंड सेफ्टी एक्जीक्यूटिव, यूके और नेशनल हेल्थ सर्विस, यूके, दोनों सलाह देते हैं कि अगर 2 हफ्ते से अधिक समय तक लगातार लो मूड रहे, कोप करने में कठिनाई हो, या सेल्फ हेल्प से कोई फायदा न हो तो प्रोफेशनल हेल्प लेनी चाहिए.4 सप्ताह का सीबीटी आधारित सेल्फ हेल्प प्लान- सप्ताह 1-पहचानना और समझाना, लक्ष्यः फीलिंग को नाम देना, दबाना नहीं, पहले हफ्ते में आपका लक्ष्य अपनी भावनाओं को दबाना नहीं, बल्कि उन्हें पहचानना और नाम देना है। दिन में कम-से-कम एक बार एक छोटा-सा मूड लॉग भरें, जिसमें चार चीजें लिखें-सिचुएशन (क्या हुआ) थॉट (दिमाग में क्या आया) फीलिंग (क्या महसूस हुआ) नीड (आपको अंदर से क्या चाहिए था) उदाहरणः-सिचुएशन- दोस्तों के साथ थी। थॉट- कोई मुझे नहीं समझता। फीलिंग- खालीपन लगना। नीड- एक सच्ची बातचीत। इसके अलावा, रोज 10 मिनट शांति से बैठकर खुद से पूछें-'मैं अभी क्या महसूस कर रही हूं?' बिना जज किए उस फीलिंग को नोट करें। सप्ताह 2-विचारों को टेस्ट करना, लक्ष्यः ऑटोमैटिक नेगेटिव थॉट को मानना नहीं, जांचना, इस हफ्ते आपका लक्ष्य है, अपने नेगेटिव विचारों (जो अपने आप आते हैं) को सीधे सच न मान लेना, बल्कि उन्हें चेक करना, उन्हें चुनौती देना। जैसे आपके मन में ये ऑटोमैटिक विचार आया-'कोई मेरा अपना नहीं है।' 'कोई मुझे समझता नहीं है।' जब भी ऐसा ख्याल आए तो एक सीबीटी वर्कशीट बनाएं और उसमें लिखें- पक्ष- इस विचार के सपोर्ट में क्या सबूत है? विपक्ष- इस विचार के खिलाफ क्या सबूत है? संतुलन- ज्यादा संतुलित और यथार्थ सोच क्या हो सकती है? उदाहरणः- विचारः 'कोई मुझे समझता नहीं।' पक्षः मैं अपनी बातें शेयर नहीं करती। विपक्षः एक दोस्त और पापा कई बार समझने की कोशिश करते हैं।संतुलनः 'शायद हर कोई नहीं समझता, लेकिन अगर मैं ओपन होऊं तो कुछ लोग समझ सकते हैं।' सप्ताह 3-व्यवहार परीक्षण और कनेक्शन बिल्डिंग, लक्ष्यः यकीन को असल जिंदगी में टेस्ट करना,इस हफ्ते आपका लक्ष्य है, अपने पुराने यकीन को रियल लाइफ में टेस्ट करना। जैसेकि आपका ये यकीन-'कोई मुझे समझेगा नहीं।' इसके लिए तीन छोटे-छोटे प्रयोग करें:-किसी एक दोस्त से 10 मिनट की ईमानदार बातचीत करें।परिवार के किसी भरोसेमंद व्यक्ति से एक लाइन शेयर करें-'मैं बाहर से ठीक लगती हूं, लेकिन अंदर लो फील करती हूं।' किसी ग्रुप में ज्यादा लोगों से बात करने की बजाय सिर्फ एक से मीनिंगफुल बातचीत पर ध्यान दें। हर एक्सपेरिमेंट के बाद तीन बातें लिखें:-मैंने पहले क्या सोचा था? असल में क्या हुआ? मेरी फीलिंग पहले और बाद में कैसी थी? सप्ताह 4- इमोशनल जरूरतें और रीलैप्स को रोकना,लक्ष्यः सिर्फ अकेलापन कम करना नहीं, सेफ रिश्ते बनाना, इस हफ्ते का लक्ष्य सिर्फ अकेलेपन को कम करना नहीं, बल्कि सच्चा और सुरक्षित भावनात्मक कनेक्शन बनाना है। सबसे पहले अपनी टॉप 3 इमोशनल जरूरतों को पहचानें और लिखें। जैसेकि- 'मुझे सुना जाए।' 'मुझे जज न किया जाए।' 'कंसिस्टेंसी या अपनापन मिले।' फिर एक छोटा-सा रिलेशनशिप मैप बनाएं, जिससे समझें कि आपके जीवन में कौन व्यक्ति किस रोल में है। कौन सिर्फ मौज के लिए है। कौन सेफ स्पेस है। कौन सलाह देता है। कौन भावनात्मक रूप से उपलब्ध है। इसके बाद एक आसान वीकली प्लान बनाएं:-2 लोगों से सामान्य संपर्क (कॉल/मैसेज) किसी एक व्यक्ति से मीनिंगफुल बातचीत- 3 खुशी देने, शांत करने वाली एक्टिविटीज (जैसे वॉक करना, डायरी लिखना, संगीत सुनना) 1 बाउंड्री बनाना (जो बात पसंद न आए, वहां तुरंत सीमा तय करना।) इन सबके अलावा खुद से ये वाक्य दोहराएं- 'मुझमें कोई कमी नहीं है। मेरी इमोशनल जरूरतें पूरी नहीं हुई हैं।' चार संकेतों में से कोई भी दो संकेत एक साथ दिखें तो प्रोफेशनल मदद जरूर लें। खासतौर पर खुद को किसी भी तरह से नुकसान पहुंचाने का ख्याल अलार्मिंग है।ऐसे में तुरंत साइकेट्रिस्ट से मिलें। अकेलापन जिंदगी में सिर्फ लोगों की कमी नहीं, बल्कि सच्चे, गहरे भावनात्मक जुड़ाव की कमी है। यह आपकी कमजोरी नहीं, बल्कि एक पूरी न हुई भावनात्मक जरूरत का संकेत है। खुलेपन के साथ सही समझ और छोटे-छोटे प्रयासों से आप धीरे-धीरे सुरक्षित, गहरे और संतुलित रिश्ते बना सकती हैं। खुद के साथ भी गहराई से जुड़ सकती हैं।

'भाई को बिकिनी में राखी क्यों बांधेंगी? 'कृति के रक्षाबंधन विज्ञापन में रिवीलिंग ड्रेस के बाद कंगना रनोट ने उठाए सवाल

मुंबई। कृति सेनन हाल ही में रक्षाबंधन के लिए बने एक ज्वेलरी ब्रांड के विज्ञापन में नजर आई थीं। विज्ञापन में उन्होंने इंडो-वेस्टर्न कपड़े पहने थे, जिसमें ब्रालेट जैसा ब्लाउज, केप और ड्रेप्ड स्कर्ट शामिल थी। इस लुक को लेकर सोशल मीडिया पर विवाद शुरू हो गया। कुछ यूजर्स ने कहा कि पारंपरिक त्योहार पर बने विज्ञापन में यह आउटफिट सही नहीं है। अब इस पर कंगना रनोट का भी रिएक्शन सामने आया है। हालांकि, उन्होंने कृति सेनन का नाम नहीं लिया।कंगना ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा- 'महिला होने के लिए यह शानदार समय है। हमारी अलमारियां कई तरह के कपड़ों से भरी हैं और आज की महिला ग्लोबल महिला है। कॉकटेल ड्रेस से लहंगा चोली, जींस से साड़ी और बिकिनी से सलवार-कमीज तक, आज हमारे पास कपड़ों के इतने विकल्प हैं। फिर आप अपने भाई को बिकिनी या अंडरगारमेंट्स में राखी क्यों बांधेंगी? आपके पास स्टाइलिंग के इतने विकल्प कहां गए? हा हा, यह विज्ञापन जानबूझकर अजीब बनाया गया लगता है।' कृति सेनन का विज्ञापन विवादों में घिरा-बता दें कि कृति सेनन अपने एक नए एडवर्टाइजमेंट को लेकर विवादों में घिर गई हैं। रक्षाबंधन की थीम पर बने इस एड में कृति अपने ऑन-स्क्रीन भाई को राखी बांधती नजर आ रही हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।